अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	संपादक की कलम से	13
2.	दो शब्द	16
3.	निराला की 'राम की शक्तिपूजा' कविता में शिल्पगत–वैशिष्ट्य	17
4.	हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श	23
5.	प्रदूषित होता पर्यावरण तथा पर्यावरण शिक्षा की प्रासांगिकता	25
6.	राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य उपासक	26
7.	बापू तुमको याद किया	29
8.	माँ की ममता	30
9.	भारत बने महान	31
10.	देश भक्ति मुक्तक	32
11.	जाग उठी तकदीर	33
12.	अमूल्य वचन	34
13.	गुरू	35
14.	क्षरित हो रहे मानवीय मूल्य	36
15.	वार्षिक आख्या 2013–14 (खेल–कूद)	39
16.	वार्षिक आख्या 2014–15 (खेल–कूद)	41
17.	स्वस्थ जीवन के तीन प्रहरी	42
18.	मेरे सपनों का भारत	45
19.	माँ–बाप	46
20.	किस्मत का खेल	47
21.	हास्य व्यंग	47
22.	जीवन में याद रखने योग्य बातें	48
23.	संघर्ष ही जीवन है	49
24.	काँटों की डगर	50
25.	पुष्प विवाद	50
26.	भारत माँ के वीर	51
27.	दिल से...	52
28.	बैसवारा हमारा	53
29.	व्यंग्य– गीत	53
30.	चिन्तन के सूत्र	54
31.	युद्धम् शरणं गच्छामि (हास्य व्यंग्य)	55
32.	हिन्दी को सक्षम बनाना होगा	56
33.	अंग्रेजी विश्व–भाषा नहीं	58

34. मानवाधिकार और वैश्वीकरण 60
35. खेलों में प्रदर्शन के गिरावट के कारण 61
36. हंसते हंसते जीना 63
37. अच्छी नींद के लिए 63
38. गौरवमयी राष्ट्रभाषा अपमानित क्यों ? 64
39. रोने से किसी को भुलाया नहीं जाता 65
40. कर्म 65
41. शहीद प्रार्थना 66
42. दिमाग अपना न था फिर भी काम 67
43. सच में सचिन 67
44. क्रिकेट वीर 68
45. 2012 से 2015 तक उत्तर प्रदेश सरकार की योजना 68
46. अर्थ 69
47. एक दिन 69
48. बस थोड़े और बहाने 70
49. जब चाँद गाता है 70
50. साबुत जिंदगी 71
51. मनहूस श्रोता 71
52. थोड़ी सी खुशियाँ बाँटे 72
53. सेवा 72
54. गुरू वन्दना 73
55. सरस्वती वन्दना 73
56. गीत–गजल 74
57. ये दर्द है धरती अम्बर का 75
58. श्रमिक जन विसर्जन, जन भाषाएँ और भाषा का विकास 76
59. राष्ट्रीय संगोष्ठी "Natural Resource Management-Policy and Planning" 78
60. डॉ० अम्बेडकर, बौद्ध मत तथा मार्क्स 80
61. शिक्षा का उद्देश्य 81
62. हर आदमी परेशान है 82
63. हिन्दी साहित्य दृष्टि में जीव, प्रकृति एवं पर्यावरण चिन्तन 83
64. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का राजनीतिक एवं सामाजिक योगदान 85
65. ऐसा क्यों ? 93
66. कौन क्या है 94
67. इण्टरव्यू 95
68. बेटी की चिट्ठी 96
69. चुटकले 97

70. मेरी नई पहचान 98
71. बेटियाँ 99
72. 2 अक्टूबर 99
73. तीन बातें 100
74. बुरे कर्म न करो 101
75. राष्ट्र–गीत 102
76. वन्दना 103
77. महत्वपूर्ण तथ्य 104
78. चुटकुले 105
79. प्रार्थना 106
80. स्वस्थ जीवनयापन में शारीरिक शिक्षा की भूमिका 107
81. बहाने *V/S* सफलता 110
82. जीवन – लक्ष्य 111
83. नश्वर जीवन अमर कहानी 112
84. आत्मविश्वास क्या है ? 114
85. बेटी की वेदना 114
86. सदोपदेश 115
87. उन्नति के चार चरण 116
88. लड़की का क्यों सम्मान नहीं 117
89. भारत माता 118
90. जो है माँ 118
91. शिक्षक 119
92. दस अनमोल बातें 119
93. बचपन 120
94. जिन्दगी 120
95. सर्द रात 121
96. यूँ न किसी की कोई बेटी जलाये 122
97. युग–धारा 123
98. मरने के बाद 124
99. पेट खाली नजर आये 125
100. फूलों की दुनियाँ 126
101. गीली मिट्टी से जन्मी 127
102. एक अधूरी ख्वाहिश 128
103. आखिर क्यों ? 129
104. नया कदम 'बफर सिस्टम' 130
105. देशभक्तों के अंतिम वचन 131

106. मनुष्य की नयी परिभाषा 131
107. माँ 132
108. माता पिता 133
109. मेरी चाह 133
110. कहानी दर्द की 134
111. मंजिल उन्हीं को मिलती है 135
112. हार नहीं होती 136
113. बेटी की पुकार 137
114. अब नहीं है टेंसन 138
115. राष्ट्र भाव 139
116. खट्टे–मीठे अनुभव 140
117. कलयुगी मानव 141
118. अनमोल वचन 141
119. नव प्रभात 142
120. Women's Right: issues and challenges 143
121. Contemporary Terrorism and Gandhin Views 145
122. Inner Conflict of Ideas 149
123. Iron Man : Sardar Patel 151
124. Women Empowerment in India-Myth and Reality 153
125. The Future of English in India 155
126. Human Development In Developing Nations 158
127. George Eliot and Her Critics 160
128. Matthew Arnold As A Critic 162
129. Amazing facts About Sound 165
130. Access to clean water improves 166
131. Two Things 167
132. Maa- Angle of God 167
133. Childhood 168

संपादक की कलम से

आज के इस कलयुगी कुचक्र, काल की स्वर्णिम बेला में, महाविद्यालय स्मारिका 'युगधारा' के इस विशेषांक को आपके कर कमलों में 'विविध विशिष्ट सामयिक चिंतन' के साथ.....

''देखना चाहते हैं आप तबाही का मंजर?

यदि नहीं,

तो अपनी सम्पूर्ण विश्व –बसुन्धरा को गर्म होने से,

वैश्विक जलवायु परिवर्तन, और पर्यावरण क्षरण से बचायें आदि–

विगत वर्षों की भाँति इस अंक के साथ भी अनेक दुःखद, सुखद एवं उत्साहवर्धक घटनायें जुड़ी हुई हैं। यह अपने नाम की सार्थकता को भी अपने आप में समेटे हुए है। यह च्यवन ऋषि की तपोस्थली के ग्रामीण अचंल के अति पिछड़े क्षेत्र राष्ट्रीय राजमार्ग एन.एच. 91 पर अवस्थित है। राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोगाँव, का जनपद मैनपुरी में उच्च शिक्षा के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में सम्मान जनक स्थान है। अनुशासन यहाँ के शिक्षार्थियों का आभूषण है। विद्याप्रदाता विद्वान प्राध्यापकों में दायित्व बोध एवं कर्तव्यनिष्ठा की अतिशयता है। नकल विहीन परीक्षा कराने में यह महाविद्यालय आगरा मण्डल में एक आदर्श महाविद्यालय है। परीक्षा प्रणाली एवं सामान्य प्रशासन के मूल्यों की रक्षा के लिए महाविद्यालय परिवार का प्रत्येक सदस्य सर्वथा सचेष्ट है। समस्त शिक्षक, शिक्षणेतर समुदाय एवं शिक्षार्थी कुल एक समरस और सामंजस्य पूर्ण वातावरण में महाविद्यालय की उन्नति के प्रति सचेष्ठ रहते हुए ज्ञानवर्धन का सामंजस्य पूर्ण वातावरण मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा का महत्व पूर्ण उद्देश्य, व्यक्ति में बीज रूप में निहित सम्भावनाओं का विकास करना है। शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक) करना ही शिक्षा का लक्ष्य है।

महाविद्यालय के वर्तमान प्राचार्य डॉ. अजब सिंह यादव जी शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य को प्रचारित–प्रसारित कर सामाजिक परिवेश में जो सुरभि विखेर रहे हैं, उससे जनमानस आल्हादित एवं आसक्त है। शैक्षिक चेतना, सामाजिक सेवा, सत्यनिष्ठा, परिश्रम, लगनशीलता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा समय की पावन्दी, आदि आपके व्यक्तित्व के गुण हैं। आपके शीतल शलिल स्वभाव से किसी की तृषा अतृप्त नहीं रहती, आज के इस कलयुग में समय के कुचक्र, पस्थिति परिवर्तन होने पर भी अपने गन्तव्य की ओर अवाध गति से अग्रसर होते हुए, आप महाविद्यालय की प्रगति को अहर्निष समर्पित हैं। आपके कुशल संरक्षण में महाविद्यालय निरंतर प्रगति कर रहा है। प्राचार्य जी की सुविचारित, स्वयं, शासन प्रशासन, राज्य सरकार, केन्द्र सरकार से सम्बन्धित कार्य योजनाओं को सफल बनाने में महाविद्यालय के प्रत्येक घटक का सहयोग हमारे महाविद्यालय के विकास का आधार है।

महाविद्यालय में वर्तमान ज्वलन्त समस्या ''प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन नीति एवं नियोजन'' जैसे गम्भीर विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संरक्षक प्राचार्य जी एवं डा. संदीप सिंह वर्मन तथा सभी शिक्षकगण

विद्यार्थी आदि सभी सहयोगियों की उपस्थिति में किया गया। जिससे नीति निर्धारण तथा सामाजिक लाभ हुआ। जो जन–जन की खुशहाली का आधार है।

प्राचार्य जी के कुशल संरक्षण में भवन निर्माण उद्घाटन के शुभ अवसर पर विभिन्न विद्वानों का आगमन रहा, विज्ञान संकाय भवन लोकार्पण के पुण्य क्षणों में मुख्य अतिथि सांसद माननीय तेज प्रताप सिंह यादव, मैनपुरी विशिष्ठ अतिथि प्रावधिक शिक्षा मंत्री श्री आलोक कुमार शाक्य, डॉ. ऐ.के. सिंह सदस्य उ.प्र. उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग इलाहाबाद जिलाध्यक्ष नगर पंचायत अध्यक्ष आदि ने महाविद्यालय के सभागार में अमृत बचनों द्वारा सभी को उपकृत किया। आपके अथक प्रयासों से आगामी वर्ष वाणिज्य संकाय बी.कॉम. की कक्षायें प्रारम्भ हो रही हैं, तथा विज्ञान संकाय में एम.एस.सी. की कक्षायें भी प्रारम्भ हो रही हैं। महाविद्यालय की उत्तरोत्तर, क्रीडा, साहित्य एवं संस्कृति आदि के क्षेत्र की दैनंदिनी उपलब्धियाँ, किसी एक व्यक्ति की देन नहीं हैं। वरन् एक कड़ी के रूप में समयानुसार प्राचार्यों, शिक्षकों, शिक्षणेतर कर्मचारियों, दानदाताओं, श्रमिकों, विविध सहयोगियों का विशेष योगदान रहा है।

युगधारा के इस अंक में महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव स्व. श्री सतीश चन्द्र सक्सैना (एडवोकेट) जी के निधन पर अत्यन्त दु:ख प्रकट करता हूँ उनके निधन से परिवार, विद्यालय परिवार एवं शिक्षा जगत को जो क्षति हुई है। उसकी पूर्ति हो पाना कथमपि सम्भव नहीं है। मैं उन्हें श्रद्धाँजलि अर्पित करते हुए इस चराचर विश्व के स्वामी से प्रार्थना करता हूँ कि इनकी आत्मा को शाँति प्रदान करें व उनके परिवार को उनकी क्षति ग्रहण करने की सामर्थय एवं साहस प्रदान करें।

अत्यन्तहर्ष का विषय है कि शिक्षार्थियों ने राष्ट्र निर्माण के विविध पक्षों से सम्बन्धित मौलिक रचनायें विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत की है। स्मारिका धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नारीशिक्षा, नारी की वर्तमान दशा, दहेज, मध्यपान, पर्यावरण, अमृत वचन, हास्य व्यंग, वर्तमान ज्वलन्त समस्याओं से सम्बन्धित, प्रेरणा दायक, ज्ञानवर्धक, साहित्य सामग्री आदि से यह अंक सुसज्जित है। इस स्मारिका में विद्वान प्राध्यापकों का सहयोग स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है।

राष्ट्रीय भावना एवं अनुशासन की चेतना के सम्यक् स्फुरण के लिए महाविद्यालय में राष्ट्रीय कैडिट कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना, रोवर्स – रेंजर्स आदि का लाभ जागरूक छात्रों को मिल रहा है। छात्रों के स्वास्थ्य को उत्कृष्ठ बनाने के लिए विविध प्रकार के खेल कूदों का आयोजन इस महाविद्यालय की विशेषता रही है। इस महाविद्यालय के छात्रों ने खेल कूद व राष्ट्रीय क्रेडिट कोर में विभिन्न प्रकार के पदक भी प्राप्त किय हैं। राष्ट्रीय कैडेट को उत्कृष्ट बनाने में मेजर डॉ. बी.के. सिंह जी का विशेष योगदान है प्रोफेसर डॉ. रनवीर सिंह अध्यक्ष शारीरिक विभाग एवं रोबर्स रैंजर्स, शारीरिक शिक्षा प्रगति एवं खूलकूद के उन्नयन के लिए निरन्तर तत्पर रहते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने के लिए प्रो. कृष्ण कुमार सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। तथा इनका प्रयास सराहनीय रहा है।

'युगधारा' स्मारिका विशेषांक के प्रकाशन में संरक्षक प्रचार्य डॉ. अजब सिंह यादव जी का योगदान सराहनीय है। अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी उन्होंने स्मारिका के लिए समय दिया। यह उनके स्नेह, सहयोग, प्रोत्साहन एवं मार्ग दर्शन का ही पुण्य परिणाम है कि आज यह स्मारिका आपके करकमलों में है। प्राचार्य जी के स्नेह एवं सुभाषीर्वाद के समक्ष मैं उन्हें किस प्रकार धन्यवाद ज्ञापित करूँ। इसके लिए मेरे पास शब्द अकथनीय हैं। उत्कृष्ट शिक्षा विदों, राजनीतिक, सामाजिक, विभूतियों के संदेश एवं उद्‌बोधन प्राप्त हुए हैं, मैं प्रोफेसर डॉ. मु. मुजंमिल, कुलपति डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, श्री राम शरण सक्सैना (संस्थापक प्राचार्य), डोंडा आदित्य कुमार मिश्रा (अध्यक्ष प्रबन्ध समिति), श्री नकुल सक्सैना (सचिव प्रबन्ध समिति), डॉ. स्वरूप किशोर जैन (संस्थापक सदस्य) तथा प्रबन्धकारिणी समिति के समस्त सदस्यों के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अपने शुभाशीर्वाद से हमारा पथ प्रदर्शित किया है। मैं महाविद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष श्री मिश्रीलाल दुबे, संस्थापक सचिव श्री छेदालाल सक्सैना (एडवोकेट), भूतपूर्व अध्यक्ष श्री विनायक दत्त दुबे, श्री सतीश चन्द्र सक्सैना (भूतपूर्व सचिव प्रबन्ध समिति) तथा अन्य सम्मानित सदस्यों प्राध्यापकों व कर्मचारियों के प्रति नतमस्तक होकर श्रद्धांजति अर्पित करता हूँ। जो आज इस लौकिक जगत में नहीं हैं।

मैं सम्पादक मण्डल के अपने सभी सहयोगी डॉ. सुनील कुमार निमेष, डॉ. कोशलेन्द्र दीक्षित, डॉ. अखिल कुमार सक्सैना, डॉ. राजेश सिंह चौहान, डॉ. वन्दना सक्सैना, डॉ. आनन्द मोहन यादव के साथ–साथ मैं उन सभी विद्वानों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। जिन्होंने मुझे सहयोग प्रदान किया है।

मैं संरक्षक माननीय प्राचार्य जी एवं संपादक मण्डल तथा विद्वान साथी सहयोगियों की ओर से सभी शिक्षार्थियों के दिग्भ्रमित काल में उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। स्वर्णिम भविष्य उनकी प्रतिज्ञा कर रहा है। सच्ची लगन, अति परिश्रम, चारित्रिक दृढता, ईमानदारी, दूरगामी सोच, दृढ़ इच्छा शक्ति, आदि के बल पर महत्वकांक्षाओं के नये क्षितिज को प्राप्त करते रहे हैं। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....

आपका अपना ही
प्रधान संपादक

(डॉ. फतेह सिंह)
विभागाध्यक्ष : हिन्दी – विभाग
मो. 9456481755

दो शब्द

शिक्षा मानव जीवन में चलने वाली एक अनवरत प्रक्रिया है। शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता। यदि प्रगति ही जीवन है तो शिक्षा इस प्रगति को उचित दिशा में नियन्त्रित एवं संचालित करती हैं यदि कर्मण्यता ही जीवन है तो शिक्षा मनुष्य को कर्मण्य बनाती है। यदि व्यक्ति तथा समाज की उन्नति में जीवन का दर्शन किया जा सकता है तो ऐसा शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। मेरा मानना है कि व्यक्ति के स्वयं के विकास के लिए तथा समाज की उन्नति के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता है। जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा का योगदान अद्वितीय है। अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार उसका विवेक एवं चिन्तन शक्ति है जो शिक्षा ही उसे प्रदान करती है। जीवन संघर्ष में शिक्षा जीवन को संघर्ष मुक्त करके सुखी बनाती है। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति उन्नति करना चाहता है। शिक्षा ही व्यक्ति को उन्नतिशील बनाने में सहायक होती है। शिक्षा ही मानव जीवन को समुन्नत सुसभ्य एवं सुसंस्कृत बनाती है।

वर्तमान शदी में हम कम्प्यूटर से लेकर इंटरनेट एवं वाई-फाई व्यवस्था से जुड़ चुके हैं। हमारा शीर्ष नेतृत्व डिजिटल इंडिया की बात कर रहा है। ऐसे में उच्च शिक्षा से जुड़े लोगों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। अपने युवाओं को गुणवत्तापरक शिक्षा देना हमारा नैतिक दायित्व बन जाता है। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में छात्र-छात्राओं को पाठ्यक्रम सम्बन्धी शिक्षा देने के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं यथा खेलकूद, एन.सी.सी. , एन.एस.एस., रोबर्स एवं रेंजर्स तथा सांस्कृतिक गतिविधियों आदि की तरफ भी प्रेरित किया जाता है। जिससे छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास सम्भव हो सके।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'युगधारा' के इस अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ कि इस महाविद्यालय ने 1961 से लेकर आजतक अनेकों प्रतिभाओं को अच्छी शिक्षा प्रदान कर समाज एवं देश सेवा के लिए समर्पित किया है। यह महाविद्यालय पठन-पाठन एवं सुचितापूर्ण परीक्षायें कराने में अपनी अलग ही पहचान बनाये हुए है। हमारा प्रयास है कि छात्र-छात्रायें शोध कार्यों से जुड़कर अपना अमूल्य योगदान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रदान करें। यहाँ साहित्य एवं मानविकी के कई विषयों में शोध कार्य कराये जा रहें है। वर्तमान सत्र में महाविद्यालय ने भूगोल विभाग में एक राष्ट्रीय संगाष्ठी का सफल आयोजन कर इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।

अन्त में मैं कॉलेज प्रबन्ध तन्त्र के सम्मानित अध्यक्ष, सचिव एवं सभी सदस्यों का हृदय की गहराईयों से आभार प्रकट करता हूँ, जिनके सहयोग से महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा हैं। मैं अपने शिक्षक साथियों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को बधाई देता हूँ, जो कॉलेज के कार्यों में पूर्ण निष्ठा एवं मेहनत के साथ पूर्ण सहयोग करते हुए शैक्षिक एवं अनुशासनात्मक परिवेश बनाये हुए है। पत्रिका का सम्पादक मण्डल बधाई का पात्र है जिसने अथक परिश्रम कर 'युगधारा' को समय रहते आपके हाथों में पहुँचा दिया। मैं श्री मुकेश कुलश्रेष्ठ (अंकित ऑफसैट प्रिंटर्स, शिकोहाबाद) को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होने इस पत्रिका को एक अच्छे स्वरूप में टंकित कर प्रस्तुत किया है। इन्हीं शब्दों के साथ.....

आपका

डॉ. अजब सिंह यादव
प्राचार्य

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' कविता में शिल्पगत-वैशिष्ट्य

डॉ0 फतेह सिंह
असिस्टैण्ट प्रोफेसर एवं
अध्यक्ष (हिन्दी विभाग)

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का पहला काव्य संग्रह सन् १९२३ में 'अनामिका' नाम से प्रकाशित हुआ। इसी नाम से चतुर्थ काव्य संग्रह सन् १९३८ में प्रकाशित हुआ। इस काव्य संग्रह की अधिकांश कविताऐं बहुत लम्बी हैं। इस संग्रह में संग्रहीत कविताओं द्वारा कवि ने नये प्रयोग किये। संग्रह की कविताओं में कवि का विद्रोह अत्यन्त सशक्त हो उठा है। वह स्वयं स्वभाव से विद्रोही हैं। निराला के प्रारम्भिक रूप को देखकर हिन्दी साहित्य जगत चोंक उठा, अनामिका जैसे संग्रह के उपरान्त उनके काव्य के इस नवीन रूप ने हिन्दी साहित्य जगत को झकझोर डाला। वैचारिक परिवर्तन, नवीनता और मौलिकता का परिणाम है। 'राम की शक्तिपूजा' कृति।

'राम की शक्तिपूजा' रचना के प्रेरक स्रोत:-

'राम की शक्तिपूजा' में महाशक्ति की मौलिक आराधना के कई प्रेरक स्रोत हैं। निराला ने विभिन्न स्रोतों से कथा का संचयन कर 'शक्ति' के एक मौलिक रूप की नवीन युग के अनुरूप नवीन कल्पना की है। उन्होंने 'देवी भागवत', 'शिव महिम्नस्त्रोत' आदि प्राचीन पौराणिक धामिक ग्रन्थों तथा बंगाल में प्रसिद्ध राम-रावण अद्भुत अज्ञात शक्ति से सम्पन्न शोर्य से आतंकित हो, उस पर विजय प्राप्त करने के लिए 'महाशक्ति' की पूजा करते हैं।

'राम की शक्तिपूजा' में कथानक विषयक विचार :

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' कविता लगभग ग्यारह पृष्ठ पौराणिकता की कथा को अपनी कविता का माध्यम बनाया है जिसके अनुसार राम ने रावण के अद्भुत इस प्रकार की यह लम्बी कविता लघु पौराणिक आख्यानक काव्य का स्वरूप धारण कर लेती है। छायावादी काव्य-शैली में लिखी गयी इस कविता में हमें कथा सूत्र अत्यन्त सूक्ष्म मिलता है। इसमें कथा सूत्र एवं नवीन मौलिक उद्भावनाऐं व्यक्त की गई हैं। इसमें व्यक्ति के मानसिक अन्तर्द्वन्द, सूक्ष्मता एवं सांकेतिकता के साथ भावनाओं के उत्थान-पतन के ऐसे सुन्दर, मनोवैज्ञानिक चित्र अंकित हुए हैं। जिन्होंने इसे हिन्दी कतिपय सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में उच्चकोटि का स्थान प्रदान किया है। इस कविता की पृष्ठभूमि कविताओं में अत्यन्त उच्चकोटि का स्थान प्रदान किया है। इस कविता की पृष्ठभूमि पौराणिक होते हुए भी, डॉ० रामविलाश के शब्दों में:- ''उसका सत्य कवि के इसी जीवन का है''

संक्षेप में कथानक परिचय:-

सीता का रावण के चुंगल से उद्धार करने के लिए राम ने सेना सहित लंका पर आक्रमण कर दिया है। कई दिनों तक भयंकर युद्ध होता है, दोनों पक्षों के अगणित योद्धा मारे जाते हैं। रावण का पक्ष निर्बल पड़ता जाता है। यह देख वह 'शक्ति' का आह्वान करता है और 'शक्ति' अदृश्य रूप से रावण पर भी विजय प्राप्त करने में असमर्थ रहती हैं और श्रीहत् होकर अपने शिविर में लौट आते हैं। प्रस्तुत कथा की पश्ष्ठभूमि यही है। यहीं से कथा आरम्भ होती है।

कवि राम-रावण युद्ध के उस चरण से कथा का प्रारम्भ करता है जब रवि अस्त हो चुका है और युद्ध में राम का तथा राम की सेना का रावण ने 'शक्ति' की अद्श्य सहायता से भयंकर दमन किया है। कवि कहता है।

रवि अस्त हो गया है। लेकिन ज्योति के पत्र पर राम-रावण के अपराजेय समर का इतिहास सदैव के लिये अंकित हो गया है। अर्थात् आज दोनों पक्षों में जैसा भयंकर युद्ध हुआ था। वह इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। कवि उस दिन के युद्ध का वर्णन करता हुआ कहता है कि वानर सेना राक्षसों पर आक्रमण करती है। तीक्ष्ण धार वाले वाण, सेल आदि बरस रहे हैं। परन्तु रावण उन सब को निष्फल करता चला जाता है। दोनों पक्ष प्रतिपल नए-नए व्यूहों की रचना कर युद्ध करते हैं और शत्रु-पक्ष के व्यूहों का भेदन करते चले जाते हैं। इस प्रकार दोपहर तक भयंकर युद्ध चलता रहता है। उद्धत बना रावण, अन्त में राम की सेना का मर्दन कर डालता है। सुग्रीव, अंगद, लक्ष्मण, जाम्बवान आदि योद्धा मूर्छित हो जाते हैं। केवल हनुमान निरन्तर युद्ध करते रहते हैं। अपनी सेना के इस विनाश को देख राम हतोत्साह हो उठते हैं।

युद्ध करते-करते संध्या घिर आती है और दोनों दल अपने-अपने शिवरों में लौट जाते हैं। लौटते समय विजयी राक्षसों के पैरों की नीचे पृथ्वी काँपने लगती है और आकाश उनके विजयोल्लास से भर-भर बार-बार गूंज उठता है। वानर-सेना अपनी पराजय से खिन्न-मन हो राम के पीछे-पीछे अपने शिविर की ओर लौटती है। राम के धनुष की प्रत्यंचा शिथिल हो गई है। चारों ओर निस्तब्धता छा रही है। सब पराजय की वेदना से नीचा मुख किये शिविर की ओर लौट रहे हैं। राम का जटा-मुकुट खुल गया है। उनकी जटायें उनकी बाहुओं और वक्ष पर इस प्रकार फैल रही हैं जैसे दुर्गम पर्वत पर रात्रि के अंधकार में उनके दोनों नेत्र दूर चमकती तारिकाओं के समान चमक रहे हैं।

वानर-सेना समुद्र तट पर स्थित पर्वत के चरण-तल पर एकत्र हो रही है। अमावस्या की रात में अन्धकार अत्यधिक सघन हो उठा है। समुद्र का निरन्तर गूंजते रहने वाला गर्जन उस स्तिब्धता को भंग कर रहा है। पवन स्तब्ध है। पर्वत ऐसे निश्चल है माने ध्यानमग्न हो। ऐसे समय राम के मन में विचार उठ रहा है कि उनकी विजय होगी या नहीं? वह रावण को जीत पाएगें या नहीं? राम का जो मन कभी विचलित नहीं हुआ था, वह आज असमर्थ होकर अपनी हार मान रहा है। ऐसी विषम स्थिति में अचानक राम के नेत्रों के सम्मुख जनकपुर की वाटिका में जानकी-मिलन का प्रथम दृश्य अंकित हो उठता है- ''जागी प्रथ्वी-तनया-कुमारिका छवि''। वाटिका का वह प्रथम मिलन, नयनों का नयनों से सम्भाषण, उन्माद आता है और सहसा उनके तन-मन में एक विचित्र सा परिवर्तन हो उठता है-

''सिहरा तन क्षण भर भूला मन, लहर समस्त, फड़का पर नभ को उड़े सकल ज्यों देवदूत।''

राम शक्ति एवं उत्साह से भर उठते हैं। उन्हें अपने दिव्य शर याद आते हैं जो देवदूतों के समान उड़ते हुए ताड़का, सुबाहु आदि राक्षसों का विनाश कर चुके थे। इसके उपरान्त राम को शक्ति की उस भीम-मूर्ति का ध्यान आता है जो आज युद्ध में समस्त आकाश पर छाई हुई थी। राम द्वारा छोड़े गये सारे दिव्य अस्त्र उसी के विशाल मुख में गायब हो जाते थे। उस मूर्ति को देखकर राम पुन: शंकाकुल हो उठते हैं कि उसी समय उनके नेत्रों में सीता का तिरस्कार सा करता हुआ रावण भयंकर अट्टहास कर उठता है। उसे सुन, रावण का आज का पराक्रम याद कर, राम के नेत्रों से, जीवन में पहली बार, दो आँसू झर पड़ते हैं।

राम के चरणों की सेवा करते हुए हनुमान उन अश्रु-बिन्दुओं को देखकर अस्थिर हो उठते हैं। वह समुद्र लाँघने की अपनी शक्ति का स्मरण कर ऊपर आकाश की ओर छलाँग लगाते हैं। समुद्र में पर्वताकार विशाल तरंगें उठने लगती हैं। वज्र-शरीर वाले हनुमान गर्जन करते हुए महाकाश में पहुँच जाते हैं। रावण का अहंकार अमावस्था के अंधकार के समान है और रामभक्ति के तेज के समान उस अंधकार को छिन्न-भिन्न करने लगते हैं। हनुमान के इष्टदेव शंकर के निवास स्थल महाकाश को समेट लेने के लिए वहाँ पहुँच जाते हैं। शिव आतंकित हैं कि यदि शक्ति और महावीर में युद्ध हुआ तो इस युद्ध में निश्चय रूप से शक्ति की पराजय होगी। अत: वह शक्ति को सावधान कर यह सलाह देते हैं कि इस बाल-ब्रह्मचारी को विद्या अर्थात् कौशल द्वारा ही प्रबोध देना चाहिए। क्योंकि यह हनुमान राम की मूर्तमान अर्चना के समान अक्षय शरीर वाला है। इसी समय सहसा आकाश में हनुमान-जननी अंजना का रूप उदय होता है। शक्ति अंजना का रूप धारण कर उदय होती है। वह हनुमान को मीठी फटकार लगाती हुई कहती है- यह महाकाश उन शिव का निवास स्थान है जिनकी राम भी वन्दना करते हैं और हनुमान से पूछती है कि क्या राम ने तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा दी है? ऐसा करके तुम अधर्म कर रहे हो। यह मीठी फटकार सुन हनुमान पुन: नम्र हो राम के चरणों में लौट जाते हैं।

इधर विभीषण राम को विषण्ण मुख बैठा देख उन्हें समझाते हैं और उन्हें उनके अमित सैन्य बल एवं दुर्द्धर्ष पौरुष की याद दिलाते हैं। परन्तु राम शान्त मन से उत्तर देते हैं-

''बोले रघुमणि-'मित्रबर, विजय होगी न समर, अन्याय जिधर है, उधर शक्ति।।''

यह कहकर राम के नेत्रों से पुन: अश्रु गिरने लगते हैं। यह देखकर इस बार लक्ष्मण क्रुद्ध हो उठते हैं, जाम्बवान स्थिर रहते हैं, सुग्रीव व्याकुल हो जाते हैं और विभीषण भावी कार्यक्रमों के सम्बन्ध में सोचने लगते हैं। वातावरण विषम हो जाता है। राम संयत होकर कहते हैं कि यह दैवी विधान समझ में नहीं आता कि अधर्मी रावण आज शक्ति का अपना बन गया है और मैं, धर्म मार्ग का अनुयायी, शक्ति क लिए पराया हो चुका है। मैं युद्ध में जब-जब शर संधान करता था, तब तब शक्ति मुझे घूर कर देखती थी। जिससे मेरे हाथ बंध जाते थे और मैं धनुष की प्रत्यंचा खींचने में असमर्थ हो तूस्त्र हो उठता था। महाशक्ति रावण को उसी प्रकार अपने अंक में धारण किये हुए थी जैसे चन्द्रमा कलंक को धारण करता है। यह कहकर राम मौन हो जाते हैं।

राम की बातें सुनकर जाम्बवान उन्हें मंत्रणा देते हैं- हे पुरुषसिंह, मैं। तुम्हारे विचिलित होने का कोई कारण नहीं देखता। तुम भी इस शक्ति को धारण कर रावण की शक्ति की आराधना का उत्तर अपनी दृढ़ आराधना द्वारा दो। शक्ति की मौलिक कल्पना करो, उसका मौलिक पूजन करो। तभी रावण का वध सम्भव हो सकेगा। इधर तुम शक्ति की आराधना करो और उधर लक्ष्मण के नेतृत्व तथा हनुमान, सुग्रीव, अंगदादि के संचालन में हमारी सेना रावण से युद्ध करेगी। जाम्बवान की इस मंत्रणा को स्वीकार कर राम कुछ समय के लिये युद्ध से विरत हो शक्ति की आराधना करने को उद्यत हो जाते हैं। राम ध्यान में लीन स्थिर बैठ जाते हैं और कुछ समय उपरान्त शक्ति की प्रार्थना करते हुए कहते हैं- हे माता! मैं तुम्हारा आश्रित हूँ। मैं उषा काल होते ही देवीदह से एक सौ आठ कमल तोड़कर लाने की आज्ञा देते हैं।

राम का शक्ति-पूजन प्रारम्भ हो जाता है। उधर सूर्योदय होते ही युद्ध का कोलाहल मचने लगता है। लेकिन राम अपने मन को एकाग्र किए शक्ति की पूजा में रत रहते हैं। दिन प्रतिदिन उनकी आराधना गहन से गहनतर होती चली जाती है। इस प्रकार पांच दिन बीत जाते हैं। राम का मन विभिन्न चक्रों को पार करता हुआ ऊपर चढ़ता चला जाता है। वह दुर्गा का नाम जपने के उपरान्त एक मूल-पुष्प उस पर चढ़ाते जाते हैं। छठवें दिन उनका मन 'आज्ञा-चक्र' पर पहुँच जाता है। इस प्रकार, इसके बाद, दो दिन राम एक ही आसन पर निस्पन्द बैठे रहते हैं। उनके जप के महाकर्षण से आकाश थर-थर कम्पित हो उठता है। इस प्रकार साधना का अंतिम दिवस-आठवाँ दिवस आ जाता है और राम के पास चढ़ाने के लिए एक ही कमल शेष रह जाता है। राम का मन सहस्त्रार चक्र को पार करने की प्रतीक्षा करने लगता है।

इधर राम पूर्णत: ध्यानमग्न हो, आँखे बन्द कर जाप में डूबे रहते हैं, उधर दो प्रहर बीतने पर साक्षात् दुर्गा आती है और चुपचाप उस अंतिम कमल को चुरा ले जाती हैं। राम दोनों नेत्र बंद किये अंतिम जाप करते हुए, अपने ध्यान से दुर्गा के दोनों चरणों में मन लगाए जब उस अंतिम पुष्प को चढ़ाने के लिए उसे उठाने को हाथ बढ़ाते हैं जो फूल उन्हें नहीं मिलता। यह देखकर उनका स्थिर मन सहसा चंचल हो उठता है और वह अपना ध्यान भंग कर नेत्र खोल देते हैं। जप के इस समापन के समय पर आसन छोड़कर उठने से असिद्धि होगी, यह सोचकर उनके दोनों नेत्र भर आते हैं और वह सोचने लगते हैं कि मेरे इस जीवन को धिक्कार है जो सदैव विरोध ही सहता आया है। हाय! अब जानकी का कैसे उद्धार होगा? परन्तु राम का एक और मन था जो कभी थका नहीं था, जिसने कभी दीनता और विनय नहीं सीखी थी। वह मन इस रहस्य को समझ जाता है। वह बुद्धि द्वारा राम की स्मृति को जागृत करता है और राम सोचने लगते हैं कि माता मुझे राजीवनय कहा करती थीं। इसलिए-

''दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण पूरा करता हूँ देकर मात: एक नयन।''

यह कहकर राम जैसे ही अपने हाथ में ब्रह्मस्त्र में उठाकर अपना दक्षिण नेत्र निकाले के लिए उसे ऊपर उठाते हैं, वैसे ही-

''साधु-साधु साधक धीर-धर्म धन्य राम कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।''

यह बाधा पाकर राम जब सिर ऊपर उठाकर देखते हैं तो सम्मुख साक्षात दुर्गा को खड़ा पाते हैं-

'देखा राम ने सामने थी दुर्गा, भास्कर दक्षिण गणेश, कार्तिक बाँए रण-रंग-राग।'

दुर्गा का यह रूप देख, राम श्रद्धा से भर उनके चरण-कमलों में वन्दना करते हुए झुक जाते हैं। राम को दुर्गा विजय का आशीष देती हैं-

'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!'

यह आशीष देकर वह महाशक्ति राम के मुख में लीन हो जाती है। यहीं कथा समाप्त हो जाती है। 'राम की शक्तिपूजा' का यही संक्षिप्त कथन है।

वातावरण चित्रण:-

'राम की शक्तिपूजा' की यह प्रमुख और महत्वपूर्ण विशेषता है कि वातावरण, का परिस्थितियों, घटनाओं एवं पात्रों की भावनाओं के अनुसार बदलता हुआ यथार्थ अनुरोध और मार्मिक चित्रण है। कभी समास-गुम्फित क्लिष्ट पदावली में विभिन्न प्रकार के घटनाओं, पात्रों की भावनाओं आदि का सजीव सचित्र अंकित कर देता है। निराला अत्यन्त संक्षेप में वातावरण को घटना एवं परिस्थितियों के अनुरूप एकदम बदल देते हैं। जिसमें कवि को पूर्ण सफलता मिली है। सम्पूर्ण कविता में सजीव वातावरण जीवन्त हो उठा है। निराला ने इस कविता में प्रमुख एवं विभिन्न पात्रों की मानसिक स्थितियों के अनुरूप विभिन्न प्रकार के वातावरण का एक ऐसा हृदयाग्राही चित्रण किया है जो कि कविता के प्रभाव को कई गुना बढ़ा देता है।

संक्षिप्त सांकेतिक चरित्र-चित्रण की प्रभावपूर्ण शैली:-

यह कविता एक पौणाणिक एवं मौलिक उद्भावनाओं का मणिकांचन संयोग है। इसलिये उसमें पात्र अपने चरित्रगत विशिष्ट विशेषताओं के साथ हमारे सामने आते हैं। निराला ने उन पात्रों का चरित्र चित्रण सांकेतिक-सूक्ष्म रेखाओं द्वारा किया है। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह पूर्णत: सशक्त कविता है। इस कविता की नाटकीयता उनके अन्य किसी भी दूसरी कविता में नहीं मिलते। इसमें उन्होंने नाटकीयता का संक्षिप्त सांकेतिक चरित्र चित्रण का समावेश कर अनेक सुन्दर प्रभावशाली एवं सशक्त चरित्र और उनके चित्र अंकित किये हैं। इस दृष्टि से यह सशक्त कविता बन पड़ी है।

रस-निरूपण:-

'राम की शक्तिपूजा' कविता का प्रधान रस ''वीर रस'' रस है। अपने संक्षिप्त कलेवर में महाकाव्य जैसा विस्तार और औचित्य भरे हुए यह कविता वीर के साथ श्रंगार के संयोगात्मक रूपों को लेकर चलती है। राम की सिद्धि प्राप्ति में शान्त रस की झलक मिल जाती है। प्रधान रस वीर है और श्रंगार रस गौड़ है। इस प्रकार निराला ने इस कविता में वीर रस का बड़ा ओजपूर्ण चित्रण किया है। कविता की तीसरी पंक्ति से ही युद्ध का भयानक, वीर रस का पूर्ण वातावरण प्रारम्भ हो जाता है।

'आज का; तीक्ष्ण-शर-विघृत-क्षिप्र-कर, वेग-प्रखर,

राक्षस-विरुद्ध-प्रत्यूह-क्रुद्ध-कपि-विषम हूह!- ''आदि

और युद्ध कला समाप्ति के उपरान्त भी अमा-निशा की भयंकर निस्तब्धता और राम का अन्तर्द्वन्द भयानक रस की योजना करता है। वीर और भयानक रसों के इस समन्वय ने वातावरण में अद्भुत प्रभाव उत्पन्न कर दिया है।

इसके उपरान्त ही श्रृंगार अपनी कोमलता-मधुरता लिए हमारे सम्मुख आता है और क्षणभर के लिए वातावरण की भयंकरता नष्ट हो जाती है और श्रृंगार का स्मृतिजन्य कोमल मधुर-मधुर प्रकाश विकीर्ण होने लगता है। यथा-

'ऐसे क्षण अंधकार धन में जैसे विद्युत जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि'

सीता के कुमारी रूप की इस छवि के साथ ही वातावरण की भयानकता नष्ट हो जाती है। हम सौंन्दर्य और श्रृंगार के मनोरम-मधुर वातावरण में पहुँच जाते हैं। निराला जनक के उपवन में मादक वातावरण में राम-सीता के प्रथम मिलन का भावपूर्ण चित्र अंकित करते हैं-

''देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन''।

इसके उपरान्त वियोग-श्रृंगार का लघु-चित्र सामने आता है, साधनारत राम के सामने से शक्तिपूजा का अंतिम इन्दीवर चुरा ले जाती हैं और राम व्याकुल हो उठते हैं। वह अपनी साधना को खण्डित-सा हुआ देख, हताशा से भर जाते हैं। उस समय भी उन्हें जानकी की चिन्ता रही है-यथा-

''अधिक जीवन जो पाता है विरोध जानकी! हाय उद्धार प्रिया का न हो सका।''

शान्त रस का चित्रण शक्ति-साधना में हुआ है। वह योग की जटिल परन्तु सूक्ष्म क्रियाओं से परिपूर्ण है। इस प्रकार राम की शक्तिपूजा में वीर-श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग एवं वियोग तथा शान्त रस आदि का चित्रण सफल तरीके से हुआ है।

<u>भाव और भाषा-शैली का अद्‌भुत सामंजस्य-निरूपण:-</u>

निराला भाषा के अद्‌भुत धनी थे। उनके काव्य में भाव और भाषा का अद्‌भुत संतुलित सामंजस्य मिलता है भाषा और शैली की दृष्टि से 'राम शक्तिपूजा' हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है, इसमें जैसे-जैसे वर्णित प्रसंगों में परिवर्तन होता चलता है। भाषा उन्हीं के अनुरूप अपना स्वरूप परिवर्तित करती चलती है। इस कविता में भाषा-शैली के विविध रूप मिलते हैं।

१. भाषा का ओजपूर्ण रूप और समास-गुम्फित-संस्कृत-गर्भित, क्लिष्ट, संक्षिप्त और अर्थ-गर्भित-भाषा-शैली, 'राम की शक्तिपूजा' की शैली का सबसे बड़ा गुण है इसका औदात्य। अतिरंग एवं बहिरंग दोनों ही दृष्टि से इसमें शैली का औदात्य सहज परलक्षित होता है। डॉ० रामविलास शर्मा ने कहा है कि निराला काव्य का प्रमुख स्वर है औदात्य और सहज गुण ओज

यह औदात्य तत्व विषय वस्तु, मूर्तविधान, शब्दों की ध्वनि और छन्द की लय में एक साथ व्याप्त रहता है। 'राम की शक्तिपूजा' की शैली में ओज गुण विद्धमान है यह भाव भाषा, विषय छन्द आदि में सर्वत्र दिखायी देता है। इसके साथ-साथ मिलने वाला अविरल प्रवाह भी इनकी शैली की अन्यतम विशेषता है।

'राम की शक्तिपूजा' कविता में हमें निराला की ओजपूर्ण, वीररस के सर्वथा उपयुक्त भाषा का रूप दिखायी पड़ता है। राम-रावण का भयंकर युद्ध हो रहा है। इसका चित्रण समास-गुम्फित-संस्कृत-गर्भित, क्लिष्ट संक्षिप्त और अर्थ-गर्भित भाषा शैली में किया है। यथा-

''आज का तीक्ष्ण, शर-विघृत-क्षिप्र कर, वेग प्रखर लगभग १६ पंक्ति। आदि

यहाँ निराला ने उस युद्ध की सम्पूर्ण विभीषिका, तुमल, नाद, अजस्र अस्त्र वर्षा तथा युद्ध के परिणाम का सवाक् सा चित्र प्रस्तुत कर दिया है।

निराला की इस कविता में भाषा के विविध रूप जैसे भाषा का उदास परन्तु उदात्त रूप, सजीव वातावरण निर्माण का रूप, श्रंगारिक रूप, भास्कर, मन्द स्मिति आदि रूप हमें देखने को मिलते हैं। सम्पूर्ण कविता में भाव एवं कथानक के अनुसार भाषा उक्त रूप ग्रहण करती आगे बढ़ती है। निराला की इस प्रकार की अद्‌भुत भाषा-शक्ति का चमत्कार हमें इस कविता में पग-पग पर दिखाई पड़ता है। भाव और भाषा, शब्द और अर्थ दोनों अंकुठित भाव के सहयोग से प्रगाढ़ आलिगंन में आबद्ध दिखाई देते है। उपयुक्त शब्द चयन, कोमल-क्लिष्ट-पदावली, संकेतिकता और नाटकीयता, नवीन छन्द विधान, सुचारू अलंकार योजना भाषा शैली को एक उदात्त और सशक्त रूप प्रदान कर रहे हैं। जो हिन्दी की चरम

अभिव्यंजना-शक्ति का प्रतीक बन गया है। इस कविता में उपयुक्त भाषा, शब्द, वैभव और अभिव्यंजना सामर्थ्य बेजोड़ है। भाषा शक्ति का जैसा रूप और चमत्कार इस कविता में मिलता है। वैसा अन्यत्र दुर्गम दिखाई देता है।

बिम्ब-निरूपण:-

निराला भाषा के धनी एवं सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी भाषा अपनी संक्षिप्ता में बड़े सशक्त, प्रभावशाली बिम्बों का निर्माण करती चलती है। इसका एक उदाहरण देखें- जब राम युद्ध क्षेत्र से क्लान्त और हताश लौटे हैं कवि ने उनकी इस दशा का वर्णन इस प्रकार किया है-

''श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण चमकती दूर ताराऐं ज्यों हो कहीं पार।''

इस चित्रण में निराला ने प्रकृति के उपकरणों के माध्यम से श्रान्त-क्लान्त राम का बड़ा भावपूर्ण बिम्ब प्रस्तुत कर दिया है। इसी प्रकार के बिम्ब इस कविता में अन्यन्त्र भी दृष्टिगोचर होंगे।

छन्द-निरूपण:-

निराला को मुक्त छन्द का जन्मदाता कहा गया है ऐसा छन्द वर्ण मात्रा के बन्धन को स्वीकार नहीं करता है, पर उसमें एक प्रवाह और लय होनी चाहिए। इसलिये मुक्त छन्द में संगीतात्मकता की रक्षा की जाती है। 'राम की शक्तिपूजा' कविता में निराला ने एक नवीन छन्द का निरूपण किया है। जो उनकी मौलिक देन है। इसमें २४ मात्राओं के तुकान्त छन्द की योजना की गयी है। इसमें अद्‌भुत गति, प्रवाह और संगीत है। इसमें प्रयुक्त नये छन्द को विद्वानों ने इस कविता के नाम के आधार पर ही, 'शक्ति-पूजा छन्द' घोषित किया है। डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल के शब्दों में-

''छान्दसिक नवीनता की दृष्टि से 'राम की शक्ति-पूजा' उनकी मौलिक शिल्प कला का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी इस रचना का आधार तीन अष्टकों का संयुक्तीकरण है जिनकी पुनरावृत्ति से रचना में ओज और भास्वरता आ गई है।''

अलंकार-निरूपण:-

निराला ने इस कविता में छायावाद काव्य में प्रयुक्त लगभग सभी प्रमुख अलंकारों का बड़ा कलापूर्ण ठंग से संयोजन किया है। इन अलंकारों की दो विशेषताऐं हैं। पहली यह है कि यह अलंकार प्रयत्न-साध्य न होकर पूर्णत: स्वाभाविक है। दूसरी यह कि ये सर्वत्र काव्य-सौन्दर्य को बढ़ाने में योग देते हैं, इस कृति में श्लेष, यमक, अनुप्रास और विरोधाभास, रूपक, व्यतिरेक, प्रत्यनीक, अतिशयोक्ति, विषम, उदास, स्वभावोक्ति, मानवीकरण, विभावना, स्मरण, दृष्टान्त, पर्यायोक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश, वीप्सा, संदेह उल्लेख, सांगरूपक, तुल्य-योगिता, अपन्हुति, विषम, व्याघत, वितर्क, सम, प्रतीप, प्रहर्षण, व्यतिरेक, मीलित, परिकरांकुर आदि अलंकारों का सम्पूर्ण कविता में यथास्थान सफलता पूर्वक प्रयोग किया गया है। जिससे कविता का सौंदर्य और द्विगुणित हो गया है।

निष्कर्ष:-

'राम की शक्तिपूजा' कविता सही अर्थों में दोहरे अर्थों को समेटे हुए है। इसमें यथार्थ समुचा एवं दुर्जेय व्यक्तित्व अपनी महिमा में उद्‌भाषित भी हो उठा है। एक ओर कथा का आधार पौराणिक है जो दूसरी ओर निराला के व्यक्तिगत जीवन की झलक भी जीवन्त रूप में दृष्टिगोचर होती है। क्योंकि उन्हें संघर्ष एवं विद्रोही कवि के रूप देखा जाता है। इसमें उनकी सांस्कृतिक दृष्टि का परि विस्तार देखने को मिलता है। निराला का आत्मसंघर्ष और उनकी अपराजेय जिजीविषा इसमें पूर्ण रूप से मुखरित हुई है। 'राम की शक्तिपूजा' निराला की काव्ययात्रा का मील का पत्थर कहा जा सकता है। यह एक ओर जो कवि के व्यक्तिगत जीवन के कथानक संघर्ष से सम्बद्ध हो जाती है। तो दूसरी ओर युगेन यथार्थ की विकरालता को व्यंजित करती है। अंत में 'राम की शक्ति' की मौलिक कल्पना करते हैं। अधर्म के विनाश के लिये सक्षम होते हैं। इस प्रकार इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि 'राम की शक्तिपूजा' शिल्पगत वैशिष्ट्य एवं हर दृष्टि से एक उत्कृष्ट रचना है। अपने लघु कलेवर में यह इतने गुणों से अधिकगुणों को संजोए हुए है। विद्वानों का एक वर्ग इसे लघु महाकाव्य की संज्ञा देता है। वस्तुत: हिन्दी साहित्य जगत 'राम की शक्तिपूजा' काव्य कृति का महत्व निर्विवाद रूप से उच्च कोटि की रचना के रूप में स्वीकार किया गया है। ●●

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श

कु. रजनीश भारती

प्रवक्ता–हिन्दी विभाग

हिन्दी कथाकारों ने अपनी रचनाओं में नारी मुक्ति की अवधारणा को ध्यान में रखकर जो विचार व्यक्त किये हैं वे 'स्त्री विमर्श' के अन्तर्गत आते हैं पुरूष प्रधान समाज में नारी की स्थिति को दर्शाने का प्रयास उपन्यासों एवं कहानियों में बराबर होते आये हैं किन्तु इधर कुछ वर्षों से इसकी चर्चा अधिक होने लगी है विशेष रूप से कुछ स्त्री लेखिकाओं ने इस दिशा में विशेष प्रयास किये हैं उस वर्ग से संम्बन्धित होने के कारण वे नारी मन को अधिक प्रमाणिक ढ़ंग से व्यक्त कर सकी है। आठवें दशक में महिला लेखिकाओं ने 'स्त्री विमर्श' को अपनी रचनाओं में अधिक उभारने का प्रयास किया है। उषा प्रिर्यवदा, मन्नू भण्डारी, मृदुलागर्ग, कृष्णा सोबती, नमिता सिंह, मैत्रीय पुष्पा एवं ममता कालियां जैसे अनेक नाम आठवें दशक में उभरे तथा उनकी रचनाओं ने पाठकों का ध्यान भी आकर्षित किया। रचनाकार वही लिखता है जो समय समाज व हालातों का सच होता है कोई भी साहित्यकार समय से न खुद को काट सकता है न ही अपने समय से विपरीत करके कुछ भी रचेगा, प्रासांगिक या प्रभावी होगा। हम ऐसा लिखें या वैसा लिखें ये गाइडलाइन्स कोई भी किसी को कभी नहीं दे सकता इतना अवश्य जानती, महसूस करती हूँ कि हम पर समाज या परिवार की पितृसत्रात्मक व्यवस्था द्वारा कई बार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर से दवाब, तकलीफें, अन्याय, अनाचार या मानसिक उत्पीड़न अवश्य होता है उसे हम पूरी ताकत से इसी समाज या परिवार के सामने प्रश्नांकित करते हैं।

पुरूष लेखकों ने भी नारी की दशा का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है सर्वप्रथम 'गोदान' में मुंशी प्रेमचन्द ने मेहता के माध्यम से नारी की दशा का निरूपण किया किन्तु प्रेमचन्द ने मेहता के माध्यम से नारी की दशा का निरूपण किया। किन्तु प्रेमचन्द ने नारी मुक्ति आन्दोलन का विरोध किया है समर्थन नहीं , वे नारी का स्थान पुरूष से श्रेष्ठ मानते हैं। मेहता वीमेंस लीग में भाषण देते हुये कहते हैं- ''यह पुरूषों का षड़यंत्र है देवियों को ऊँचे शिखर से खींचकर अपने बराबर बनाने के लिये उन पुरूषों का जो कायर हैं मुझे यह कहते हुये शर्म आती है कि इस त्याग और तपस्या की भूमि भारत में भी वही हवा चलने लगी है विशेषकर हमारी शिक्षित बहनों पर वह जादू बड़ी तेजी से चढ़ रहा है वह गृहिणी का आदर्श त्याग कर तितलियों का मार्ग पकड़ रही हैं।''

स्त्री विमर्श के प्रारम्भिक काल में पुरूष प्रधान समाज में नारी की दीन-हीन स्थिति का चित्रण करते हुये लेखिकाओं ने पुरूषों को दोषी ठहराया है, किन्तु बाद में इस प्रवृत्ति का विरोध भी किया है 'चित्रा मुदगल' ने अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में लिखा है- ''पुरूष विरोध करतेहुये पुरूष की तरह निरंकुश और स्वच्छंद हो जाना नारी मुक्ति नहीं है।''

स्त्री विमर्श की अभिव्यक्ति का मूल स्वर स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं नारी पुरूष की समानता के इर्द गिर्द घूमता रहा है आर्थिक स्वावलम्बन के अभाव में नारी अपने ही परिवार में शोषित होती रहती है क्योंकि विरोध करने का न उसमें साहस है और न सम्बल।

नारी को मात्र भोगविलास की वस्तु समझने वाली मानसिकता का विरोध भी मुखर रूप में किया गया, पुरूष भेड़िये की भाँति घात लगाये इस नरम चारे को उड़ानेके लिये उतावले रहते हैं ऐसी धारणा कथा लेखिका नमिता सिंह की है वे अपनी 'सलीबें' नामक कहानी में लिखतीं हैं- ''यह जिन्दगी तो जैसे अंधेरे घने जंगल से निकलने वाली पगडण्डी का नाम है कब किधर से कोई बाघ या भेड़िया हमला कर दे कुछ पता नहीं।''

समाज में जो बेटे-बेटी में फर्क किया जाता है वह भी स्त्री को कचोटता है रामदरश मिश्र की कहानी थकी हुयी सुबह की लक्ष्मी कहती है- ''क्या स्त्रियों को कोई दूसरा ईश्वर पैदा करता है या स्त्री पुरूष के लिये दो नियम हैं।'' आज की नारियों में आत्माभिमान है वे अपनी स्थिति सुधारने के लिये प्राणाप्रण से जुटी हैं वह जमाना चला गया जब स्त्रियों को गाय भैंस की तरह जिसे खूंटे से बाँध दो वह उफ तक न करती थी अब वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत है चित्रा मृदुगल के उपन्यास 'एक जमीन अपनी' की अंकिता सुधांशू से कहती है- ''औरत बोनसाई का पौधा नहीं है जब जी चाहे उसकी जड़े काटकर वापस गमलों में रोप लिया वह बौना बनाये रखने की इस साजिश को अस्वीकार भी कर सकती है।''

'कीर्तिकथा' नामक कहानी की नायिका कीर्ति नारी की वर्तमान सामाजिक स्थिति का चित्रण इन शब्दों में करती हैं- ''हर जगह औरत का बुरा हाल है समाज में कोई भी दूध का धुला नहीं है हर असहाय स्त्री चाहे वह उच्चवर्ण की हो या निम्नवर्ण की, आज भी शूद्र है, वस्तु है, साधन है, गुलाम हैं, इसीलिये नारी को स्वतंत्रता के अधिकारों की जरूरत को समझती है उसे नारी के लिये बेचारी सम्बोधन पर आपति है।''

सच तो यह है कि आज के समय में स्त्री को अपने योग्य अपने बराबर का पुरूष मिल ही नहीं रहा है, इसलिये वह अकेली रह जाती है। कहानियों में वही सब कुछ तो है, ध्रुवस्वामिनी के सामने रामगुप्त खड़ा है, पर ध्रुवस्वामिनी के लिये चन्द्रगुप्त होना चाहिये था, आज के दौर में ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त को चन्द्रगुप्त बनाने में लगी हुयी हैं। व्यक्ति की क्या औकात कि उसका विरोध किया जाय, उस सोच का विरोध है, जिसे पितृसत्ता कहते हैं।

'एक जमीन अपनी' की नीता, सुधीर जैसे कई पुरूषों द्वारा छली जाती हैं, यदि इसी को नारी चेतना या 'स्त्री विमर्श' की संज्ञा दी जाये तो यह प्रगतिगामी दृष्टि नहीं है। दूसरी ओर 'रंगी हुयी चिड़िया' धर्मेन्द्रगुप्त की शीला रामेकर है जिसकी एक आवाज पर हजारों मजदूर एकत्र हो जाते हैं उसे देखकर कोई नहीं कह सकता है कि नारी अबला है नारी के इस अबलापन से मुक्ति भी 'स्त्री विमर्श' का एक अंग है एक जमीन अपनी, की अंकित अपनी शर्तों पर संघर्ष करती है और कुत्सित समझौता नहीं करती, औरत जब अपने अन्दर संघर्ष का जज्बा उत्पन्न कर अत्याचार एवं अन्याय के आगे झुकने से मना कर देती है और ध्रुवस्वामिनी की नायिका की भाँति अपने कायर पति को चुनौती देती हुयी कहती है- ''यदि तुम मेरी, अपने कुल-मर्यादा की रक्षा नहीं कर सकते तो मुझे बेच भी नहीं सकते, मैं उपहार में दी जाने वाली शीतल मणि नहीं हूँ, मुझमें भी रक्त की तरल लालिया भी हैं।''

कितना विचित्र समय है। हिन्दी साहित्य की शेषनागी शय्या हिल रही है विष्णु डगमगा रहे हैं ब्रह्मा गड़बड़ा रहे हैं और शिव को तांड़व करने से रोकने के लिये धतूरा खिला दिया गया हो। (आस्थावादी इस उपमा के लिये क्षमा करें) दरअसल में आधुनिक नारी भले ही कोई युगान्तकारी परिवर्तन न करे किन्तु उसकी सोच तो बदली है अपनी 'सलीबें' में नमिता सिंह ने स्पष्ट कहा है कि प्रबुद्ध नारियों को जनजागरण कार्य अवश्य करना चाहिये, भले ही वे समुद्र पर सेतु न बाँधे, रावण मेघनाद को न मारें, किन्तु ऐसा करने की इच्छा जो व्यक्त करें यही उसकी मुक्ति है पन्त जी ने भी नारी स्वतंत्रता पर भी अपनी कविताओं में बल दिया है -

मुक्त करो नारी को मानव,
युग वन्दिनी नारी को।
युग-युग की निर्मम कारा से,
जननि सखी व्यारी को।

●●

''प्रदूषित होता पर्यावरण तथा पर्यावरण शिक्षा की प्रासांगिकता''

डॉ० अजब सिंह यादव
प्राचार्य

लुई थामस ने अपनी पुस्तक ''द लाइब्ज ऑफ ए सैल'' कोश का जीवन में पृथ्वी को एक जीवित कोश कहा है तथा उसके चारों ओर के वातावरण को उसका कवच बताया है। वातावरण पृथ्वी की सतह का वह कवच है जिसमें प्रकृति की अमूल्य भेंट प्रकाश, हवा, जल निहित है, जो पृथ्वी पर पाये जने वाले जीव-जन्तु, पादप एवं मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक व महत्पूर्ण है। प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर को शुद्ध बनाये रखने के लिए मानवीय सहयोग आवश्यक है। प्रकृति के स्वचालित नियम एवं कार्य व्यवस्था में यदि मानवीय हस्तक्षेप से कोई व्यवधान आता है तो न केवल एक संसाधन की क्षति होती है, वरन् समस्त वायुमण्डल, स्थल मण्डल, जल मण्डल एवं जैव मण्डल से अन्त सम्बन्धित क्रियायें प्रभावित होने लगती हैं। पर्यावरण से केवल मानव ही प्रभावित नहीं है बल्कि सभी प्राणियों की रचना में पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु तत्वों का योग भी है। ये पाँचों तत्व जीवन रक्षा के लिए आवश्यक हैं। यदि इन तत्वों में से एक भी तत्व क्षीण या दूषित होता है तो धीरे-धीरे सम्पूर्ण जीव जगत दुष्प्रभावित होता है। मानव की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कमी व चतुर्दिक विकास की लालसा के कारण पर्यावरण हास से विविध समस्यायें पैदा हुई हैं जो आने वाले समय में भयावह स्थिति का संकेत देती हैं। सम्पूर्ण विश्व की भाँति भारत की जनसंख्या में हो रही अतिशय वृद्धि तथा विज्ञान की निरन्तर उन्नति से कृषि उद्योग, विकसित तकनीक, इलैक्ट्रोनिक, आणविक शक्ति, परिवहन आदि क्षेत्रों में तेजी से विकास हुआ है। किन्तु इस तीव्र विकास एवं अदूरदर्षितापूर्ण कार्यों के परिणाम स्वरूप पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक वायु, जल तथा मिट्टी जहरीली बनती जा रही है। प्रदूषण ने प्राकृतिक परिवेश-सन्तुलन एवं भूमि संसाधनों को तहश- नहश कर दिया है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों द्वारा मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण तथ ध्वनि प्रदूषण निरन्तर बढ़ रहा है। अत्यधिक कीटनाशक दवाओं से मिट्टी के सहज जीवाणु नष्ट होते जा रहे हैं तथा विषाणु बढ़ते जा रहे हैं। विकास की इस अन्धी दौड़ में बढ़ रहे औद्योगीकरण एवं यातायात साधनों ने भी वायु एवं ध्वनि प्रदूषण में तीव्र वृद्धि की है। जल के अन्दर भी कारखानों के कचरे व अन्य प्रकार के मैला एवं कचरे ने जहर घोल दिया है। ठोस अपशिष्ट प्रदूषण भी वर्तमान में एक भयंकर समस्या बना हुआ है। इसके अन्तर्गत विभिन्न ठोस अपशिष्ट पदार्थों यथा समाचार पत्र, विभिन्न प्रकार के डिब्बे, कनस्तर बोतल, कॉच का सामान, प्लास्टिक के डिब्बे पालीथिन के थैले, राख आवासीय कचरा आदि जो उपयोग के बाद निरर्थक एवं बेकार हो जाता है, ने भी मानव के सामान्य जीवन को प्रभावित किया है।

मानव, पशु-पक्षी एवं जल जीवों के स्वास्थ्य पर प्रदूषण के विभिन्न तत्व जिस तरह के कुप्रभाव डाल रहे हैं, उससे निरन्तर जान लेवा बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं।

वायुमण्डल में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ने के परिणाम स्वरूप वायुमण्डल में विद्यमान गैसों का सन्तुलन बिगड़ रहा है जिससे मौसम में अनिश्चितता बढ़ी है, जो मानवीय खाद्य संसाधनों कृषि क्षेत्र को प्रभावित कर रही है।

पर्यावरण की इस भयावह समस्या से जहाँ एक ओर आज सारा विश्व पीड़ित है वहीं दूसरी ओर भारत भी इसका शिकार हो चुका है। इस समस्या के समाधान की दिशा में जिस स्तर पर प्रयास शुरू हो गये हैं। विगत में कई विश्व स्तर के स्म्मेलन आयोजित हो चुके हैं। भारत में भी इस ओर ध्यान दिया जा रहा है, किन्तु परिणाम आशा जनक नहीं आये हैं। प्रस्तुत लेखक में जहाँ एक ओर पर्यावरण प्रदूषण की इस विकराल समस्या को रेखांकित करने का प्रयास किया है, वहीं दूसरी और इस समस्या के समाधान एवं सुधार हेतु पर्यावरण शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिये जाने की आवश्यक पर जोर दिया है ताकि आशातीत परिणाम सम्भव हो सकें।

प्रस्तुत लेख में पर्यावरण शिक्षा की प्रासांगिकता, स्वरूप एवं उसके व्यवहारिक पक्ष के विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया है। जिसका उद्देश्य जन सामान्य को इस समस्या का सामना करने के लिए तैयार करना है। ताकि इस बिगड़ते हुए पर्यावरण को संरक्षित रखा जा सके। लेखक का मानना है कि बिगड़ते पर्यावरण की इस भीषण समस्या से निपटने में केवल सरकारी प्रयास ही प्रयाप्त नहीं हैं, वरन इसमें सरकारी, गैर सरकारी, समाजसेवी संगठन तथा आम जनता की भागीदारी आवश्यक है।

●●

राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य उपासक
'राष्ट्र कवि दिनकर'

डॉ. रामनरेश सिंह यादव
प्रवक्ता हिन्दी-विभाग

''महान नाटककार एवं कवि रोकापियर के शब्दों मे-साहित्यका एवं उसकी स्मृति सदा एक ही अवस्था जीवित रहती है।''

यह उक्ति प्रख्यात साहित्यकार एवं श्रेष्ठ कवि डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर के पौरूषेय व्यक्तित्व एवं कालजयी कर्तव्य के सम्बन्ध में चरितार्थ होती है। आज दिनकर जी हमारे बीच नहीं है। पर उनकी साहित्यक रचनाएं एवं उज्जवल सुकीर्ति सहस्रों वर्षो तक अक्षुण रहेगी। डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनके सम्बन्ध में लिखा है। ''दिनकर छायावादियों और प्रगतिवादियों के बीच की कड़ी है। कम छाया वादी, अधिक प्रगति वादी 'कुरूक्षेत्र में उनकी सामाजिक चेतना की बहुमुखी अभिव्यक्ति हुए हैं। दिनकर अपने ढ़ंग का अकेला हिन्दी कवि है। यौवन के मोहक संगीत उसे मुग्ध करते हैं'' कविवर दिनकर जी के मोहक एवं बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के सम्पर्क साहचर्य में जिसे एक बार भी आने का सुअवसर प्राप्त हुआ होगा वह सहज ही उनकी ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सका।

दिनकर जी सच्चे अर्थो में एक महान साहित्यक-साधक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन साधनामय था। कठिन संघर्षो के बीच जीवन व्यतीत करते हुए भी उनके जुझारू व्यक्तित्व ने कभी हार स्वीकार नहीं की। 'रेणुका', 'हुंकार' का कवि राष्ट्रीयता को अपने सबल कन्धों पर ढ़ोते हुए क्रमशः 'कुरूक्षेत्र' 'रश्मिरथी' से चलकर परशुराम की प्रतीज्ञा देखते हुए हारे को हरिनाम तक पहुँच गया। उन्होंने संघर्षो से कभी समझौता करना नहीं सीखा था। पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दों में ''दिनकर जी को जैसा संघर्षमय जीवन बिताना पड़ा वैसा हिन्दी-जगत में उनके जैसे प्रतिभा शाली किसी कवि या लेखक को शायद ही व्यतीत करना पड़ा हो'' दिनकर जी के व्यक्तित्व का यह तेवर उनकी तेजस्विता गूँज एवं ओजस्वी रचनाओं में मुखरित हुआ है। उनका जीवन और साहित्य एक रस था।

राष्ट्रीय जागरण के कवि दिनकर जी हिन्दी भाषा के अनन्य उपासक थे। राष्ट्र भाषा हिन्दी को यथाचित प्रतिष्ठा दिलाने एवं उसके उन्नयन के लिये वे आजीवन संघर्षरत रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद के अधिवेशन के महोत्सव पर, अपना वक्तव्य देते हुए उन्होंने हिन्दी के उत्थान के लिये कुछ बहुमूल्य सुझाव दिये थे। उन्होंने कहा था कि ''राष्ट्र पति से लेकर प्रधानमंत्री, मंत्री तथा सचिव आदि सभी को अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करना चाहिये। विश्वविद्यालय या महाविद्यालय स्तर की पुस्तकें अधिकतर हिन्दी विद्वानों द्वारा ही लिखायी जायें। उन्होंने स्पष्ट कहा कि सभी प्रान्तों (हिन्दी, अहिन्दी) के लोग एक स्थान पर बैठकर एक प्रस्ताव पास करें, जिससे हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया

जाय'' उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि जहाँ उलझन पड़े, वहाँ राजनीतिक ढंग से मामले को सुलझाया जाये हिन्दी के विगड़ते हुये स्वरूप के प्रति शोक व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा था।

''हिन्दी अप्राकृतिक होती जा रही है उसमें कृत्रिमता आती जा रही है। हिन्दी लिखी जाये जो बोधगम्य और सरल हो'' दिनकर जी ने दिल्ली-प्रवास के अपने खट्टे-मीठे अनुभवों के परिप्रेक्ष्य में कहा था ''हिन्दी को प्रथमिकता के आधार पर काम काज में प्रयुक्त किया जाये इस सम्बन्ध में लाजिक तो यह है पर साइकोलॉजी भिन्न-भिन्न है हिन्दी को महायनी की कुर्सी पर तो बिठाया गया है। पर उसे जंजीरों से जकड दिया गया हें काम सब सुखी (अंग्रेजी) कर रही है। इस लक्षण को शुभ नहीं कहा जा सकता है। हिन्दी भाषा के प्रति उनके हृदय में अमिर निष्ठा थी इसका अनुमान उनकी पंक्तियों में व्यक्त भावनाओं से लगाया जा सकता है। ''हिन्दी वाले हिन्दी की किताबें बहुत कम खरीदते हैं।''

हिन्दी के लिये पाँच खर्च करना लोगों को अखरता है। मगर मंच से वे यह कहने में बहुत लेखा समझते हैं कि अरे मैं हिन्दी के लिये रक्त ढूँगा। हिन्दी रक्त लेकर क्या करेगी, उसे तो पाठकों का पैसा और लेखकों का पसीना चाहिये।

भारतेन्दु-स्मृति में उन्होंने इस ओर संकेत करते हुए, कुछ मार्मिक पंक्तियाँ लिखी थीं।

''सींची हिन्दी-लता उन्होंने,
तुम बसन्त में फूल बनो,
कुछ पंखड़ी रंग कुछ उसका कुछ,
मधुरस, कुछ धूल बनो।''

भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर मानवीय जीवन मूल्यों के सम्पोषक डा. रामधारी सिंह दिनकर 'प्रतिमा' का यथोचित सम्मान न करने को मनुष्य का अहंकार मानते है। मैं उनकी ये दो पंक्तियाँ पढ़कर अभिमत हो जाता हूँ।

''पूजनीय को पूज्य मानने में जो वाधाक्रम है
वही मनुष्य का अहंकार है वही मनुज भ्रामक है।''

महाकवि कालिदास ने रघुवंश में एक स्थान पर लिखा है-

''प्रति वहनाति हि क्षेयः
पूज्य पूजा व्यक्तिक्रम''

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महोत्सव में कविवर दिनकर जी ने एक बड़ी मार्मिक बात कही थी। उन्होंने कहा, मित्रो, साहित्य और विज्ञान दोनों जवानी में खिलते हैं बुढ़ापे पर साहित्यकार और वैज्ञानिक उसी लिखे हुए फूल की सेवा करते हैं, युद्ध और शान्ति को परिभाषित करते हुए उन्होंने एक बार कहा था।

''राजनीति जब सफेद लिवास में होती है हम उसे शान्ति कहते हैं, जब उसके कपड़े लहू से लाल हो जाते हैं वह युद्ध कहलाती है'' जन कवि दिनकर जी हिन्दी के कवि एवं सिद्धहस्त लेखक थे उन्होंने

राष्ट्रीय जागरण शोषण के प्रति विद्रोह एवं मनोरम प्रकृति चित्रण से ओतप्रोत उच्चकोटि की रचनाएं लिखी हैं कुछ बड़ी वस्तुओं के विषय में उन्होंने चार पंक्तियों में तत्व की बात कही थी।

''बड़ी कविता कि जो उस भूमि को सुन्दर बनाती है।
बड़ा वह ज्ञान जिससे व्यर्थ की चिन्ता नहीं होती।
बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है।
बड़ी वह रूह जो रोये बिना तन से निकलती है।''

'संस्कृति के चार अध्याय' उनकी अभ्य कृति है। राष्ट्र और जनजीवन के उत्थान के प्रति समर्पित अपनी लम्बी साहित्य कला के हाथ देय में नई चेतना तक स्फूर्ति जगाने में अग्रण्य थे, दिनकर जी 'कलम आज उनकी जय बोल' उनकी कालजयी रचना है। उन्होंने उर कल्प पुस्तकें तरूण पुस्तकें गद्य की लिखकर हिन्दी साहित्य के सागर को भरा है। उनका साहित्यिक अवदान सदैव प्रासंगिक बना रहेगा, ऐसी मेरी अवधारणा है।

मौलिक राष्ट्र की परिकल्पना के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है ''यदि भारत को मौलिक राष्ट्र बनना है यदि उसे वह काम करना है जिसके लिए वह स्वाधीन हुआ है तो वह भारतीय भाषाओं से हो सकता है। अंग्रेजी से नहीं।''

उन्होंने बड़े विश्वास के साथ एक बार कहा था ''मुझे विश्वास है कि मैं दूसरा जन्म लूंगा और फिर कवि बनूंगा, और फिर कोशिश करूंगा कि मैं स्फटिक और गुलाब को एक कर सकूं, मैं ऐसा रसायन खोज सकूं।''

अन्त में मैं किसी कवि की इन पंक्तियों को उद्धृत करते हुए यही कहूंगा कि राष्ट्र कवि डॉ. रामधारी सिंह दिनकर का समग्र जीवन सार्थक रहा, क्योंकि वह अपनी एक पहचान बनाकर विदा हुए हैं।

''हँस के दुनिया से मरा कोई
कोई रोके मरा
जिन्दगी पायी मगर उसने
जो कुछ हो के मरा''

●●

बापू तुमको याद किया

सत्य अहिंसा पाठ पढ़ाकर, देश मेरा आजाद किया।
इसीलिए हम सबने फिर बापू तुमको याद किया।
कोड़े और जंजीरों में हम, सौ सालों से जकड़े थे।
एक अकेली ताकत के बल तुम गोरों से अकड़े थे।
आजादी के दीवानों ने, दो शस्त्र हाथ में पकड़े थे।
मुरझाये जो फूल चमन के, तुमने फिर आबाद किया,
इसीलिए.....

आन्दोलन की डोर लिए तुम सकल हिन्द में घूमें थे।
आजादी के हँस दीवाने, फाँसी के फन्दे चूमें थे।
पन्द्रह अगस्त सैतालीस को सब भारतवासी झूमें थे।
आओ देखों गाँधी बाबा, हमने फिर फरियाद किया,
इसीलिए.....

जिन कन्धों पर भार देश का, वह कन्धे कमजोर हुए।
भूले भाषा रहन-सहन सब, उन्मुख पश्चिम ओर हुए।
हिंसा की तलवार देखकर घर-घर मातम शोर हुए।
खिन्न हुई सोने की चिड़िया, ऐसा अवसाद किया,
इसीलिए.....

आजादी में आसमान पर चढ़ गया भ्रष्टाचार है।
भौतिकता की गली-गली में मानवता लाचार है।
छल प्रपंच अन्याय अनिष्ठा जीवन का आधार है।
स्वारथ के फन्दे में पड़कर देश मेरा वर्वाद किया,
इसीलिए.....

पुष्पेन्द्र सिंह
एम.ए. हिन्दी

माँ की ममता

दिव्या मिश्रा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

(1) हर पल में खुशी देती है माँ अपनी जिंदगी से जीवन देती माँ भगवान क्या हैं माँ की पूजा करो जनाब क्योंकि भगवान को भी जन्म देती है माँ।

(2) दिन भर के काम के बाद, बेटा पूछता है, 'क्या लाए ?' बीबी पूछती है, 'कितना बचाया ?' पापा पूछते हैं, 'कितना कमाया?' लेकिन माँ पूछेगी, 'बेटा कुछ खाया ?'

(3) धरती पे ईश्वर की तलाश है
मालिक तेरा बंदा कितना निराश है
क्यों खोजता है इंसान ईश्वर को
जबकि तेरे दूसरे रूप में
माँ उसके इतने पास है।

(4) पूछता है जब कोई दुनिया में
मोहब्बत है कहाँ
मुस्करा देती हूँ मैं
और याद आ जाती है माँ।

(5) इन ख्यालों से फुर्सत मिले, तो कुछ शब्द कहूँ
इन ख्यालों से फुर्सत मिले, तो कुछ लफ्ज गुनगुनाऊँ
तंग हूँ वक्त के इस पहरे से
बस मुठ्ठी भर खुशी मिले
जो अपनी माँ के नाम कर जाऊँ।

●●

भारत बने महान

नेहा वर्मा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

नारी का घर-घर में होगा, जिस दिन से सम्मान,
उसी दिन भारत बने महान, उसी दिन भारत बने महान।
अवनी से अम्बर तक जिस दिन गूँजेगा यशगान।
उसी दिन भारत बने महान, उसी दिन भारत बने महान॥

ममता का अनमोल खजाना,
हर प्राणी का जाना ना-माना,
आज ठोकरें दर-दर खाये,
पाएँ जिस दिन मान ॥
उसी दिन भारत बने महान, उसी दिन भारत बने महान ॥

दानवता की विषम हवायें।
बिना मौत बेटी मर जायें,
हत्यारों के हाथ काट जब,
बचेंगे इनके प्राण ॥
उसी दिन भारत बने महान, उसी दिन भारत बने महान॥

रिश्तों को सम्मान मिले जब,
कहीं न अनुचित काम चले जब,
भाई बहन के पावन रिश्ते,
तजे न अपनी आन॥
उसी दिन भारत बने महान, उसी दिन भारत बने महान॥

प्यार कहीं ना धोखा खाए।
आजीवन साथी बन जाये।
मान और मर्यादा का जब हो न कहीं अपमान् ॥
उसी दिन भारत बने महान, उसी दिन भारत बने महान॥

●●

देश भक्ति मुक्तक

पुष्पेन्द्र कुमार
एम.ए. हिन्दी

(1) इस जहाँ में भले ही कयामत रहे।
दिल की हसरत यही है अमानत रहे।
कह गयीं फाँसियों में फँसी गर्दनें,
मैं रहूँ न रहूँ माँ सलामत रहे।

(2) चाहती देशभक्ति स्वाधीनता।
कैद पंक्षी बताये पराधीनता।
सरहदों पर शहादत यहीं कह गयी,
इस गुलामी से अच्छी मेरी दीनता।

(3) नफरतें प्यार में सब दफन कीजिए।
साफ तन ही नहीं साफ मन कीजिए।
मजहबी जंग में मिट न जायें कहीं,
मिलकर मन्दिर मस्जिद को नमन कीजिए।

(4) वो जीवन नहीं उद्धार होता है।
जिसका खूँन नहीं खुद्दार होता है।
जो सिर्फ लडते हैं मजहब के लिए,
वह देशप्रेमी नहीं गद्दार होता है।

(5) लिखो तो कुछ ऐसा लिखो खूँन खुद्दार हो जायें।
दीन दुःखी अबलाओं का फिर उध्दार हो जाये।
गुलामी सहने से पहले इतना कर देना,
भौतिकता में मानवता पुनुध्दार हो जाये।

जाग उठी तकदीर

रीमा राठौर
बी.ए. तृतीय वर्ष

जब से मिले मेरे भगवान जी, जाग उठी तकदीर मेरी।
जाग उठी तकदीर मेरी, जाग उठी तकदीर मेरी।

दिल के अन्दर नाम तेरा, होठों पर पैगाम तेरा,
आँखों में तस्वीर तेरी, जाग उठी तकदीर मेरी।
जब से मिले मेरे भगवान जी, जाग उठी तकदीर मेरी।

तू सारे जग का पालक है, तू मेरे मन का मालिक है।
सच कहती ये जमींर मेरी, जाग उठी तकदीर मेरी।
जब से मिले मेरे भगवान जी, जाग उठी तकदीर मेरी।

अब दुनियाँ से मुख मोड़ लिया है, तेरे चरणों में चित्त, जोड़ लिया।
सब हो गये कष्ट दूर मेरे, जाग उठी तकदीर मेरी।
जब से मिले मेरे भगवान जी, जाग उठी तकदीर मेरी।

तू ही सुन्दर श्याम प्यारा हैं, भगवन ही जीवन का उजियारा हैं।
सब कर दी माफ तकसीर मेरी, जाग उठी तकदीर मेरी।
जब से मिले मेरे भगवान जी, जाग उठी तकदीर मेरी।

●●

अमूल्य वचन

ज्योती
बी.ए. तृतीय वर्ष

- ''लोग डूबते हैं जो समुद्र को दोष देते हैं।
  मंजिल ना मिले जो मुकद्दर को दोष देते हैं
  खुद तो सम्भलकर चलते नहीं और जब लगती है
  ठोकर तो पत्थर को दोष देते हैं''।
- क्रोध भाग्यवानों को अभागा बनाता है
  और जो उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहता है उसे गड्डे में ढकेल देता है।
- आलस्य से जीवन बिताना आत्यहत्या के समान है
- ''मन सफेद कपड़ा है जिसे जिस रंग में डुबोओगे वही रंग चढ़ जायेगा''
- ''मेहनत वह सुन्दर कुन्जी है जो स्वयं सफलता के फाटक खोल देती''
- अशिक्षित रहने से पैदा न होना ही अच्छा है
  क्योंकि अज्ञान विपत्तियों का मूल है।
- ''महामूर्ख वह है जो स्वयं कुछ जानता नहीं
  और जानने वाले की मानता नहीं॥''
- ''केवल कर्महीन व्यक्ति भाग्य को कोसते हैं''
- ज्ञान से एकता पैदा होती है
  अज्ञानता से फूट॥
- पाप से घृणा करो पापी से नहीं॥
- क्या करे प्यार वो ईमान से,
  क्या करेगा प्यार वो भगवान से,
  जन्म लेकर गोद में इंसान की,
  कर न पाया प्यार वो इन्सान से॥
- जिन्दगी वो नहीं जो हम जीते हैं
  जिन्दगी वो है जो हम जी सकते हैं
  खुशी वो नहीं जो हम महसूस करते हैं
  खुशी वो है जो हम किसी को दे सकते हैं।
  जिन्दगी में हम कितने खुश हैं
  जिंदगी में हमारी वजह से कितने लोग खुश हैं

●●

गुरू

श्वेता
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

शिक्षक दिवस में आओ सब,
करें गुरू का हम सम्मान।
गुरू से बढ़कर कोई नहीं है,
जो देता है हमको ज्ञान।
अन्धकार को चीरकर,
जीवन में प्रकाश फैलाता है।
अपनी त्याग तपस्या से,
राह नयी दिखलाता है।
शिक्षक तो वह दीपक है,
जो जलकर प्रकाशित करता है।
अज्ञानता को हरने की खातिर,
तिल-तिल कर वह मरता है।
गुरू और भगवान में,
गुरू ही बड़ा होता है।
जो गुरू का सम्मान न करे,
वह जीवन भर फिर रोता है।
आओ अब सब मिलकर हम,
गुरू को शीश नवाएं।
भूल-चूक सब क्षमा माँगकर,
जीवन सफल बनाएं।

●●

क्षरित हो रहे मानवीय मूल्य

डॉ. अखिल कुमार सक्सेना
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र-विभाग

जन्म के समय मनुष्य न तो प्राणी होता है, व न ही समाज विरोधी बल्कि एक जैविकी प्राणी मात्र होता है। जिसके अन्दर अराजकता व व्यक्तिवादिता के साथ-साथ वे सभी मूल प्रवृत्तियाँ जो पशुओं में पाई जाती हैं, विद्यमान होती हैं। अत: सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक समाज नियमों, प्रतिमानों या कुछ मानकों को बनायें, जिससे व्यक्ति के व्यवहारों पर नियंत्रण रखा जा सके और उन्हें अपने समाज के मानकों के आधार पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सके। समाज का निर्माण नहीं अपितु, इसका विकास 'सरल से जटिल' की ओर हुआ है। यह जटिलता भौतिक व अभौतिक दोनों पक्षों में होती है। मूल्यों का सम्बन्ध सामाजिक विकास के अभौतिक पक्ष से होता है। समाज द्वारा व्यक्ति से एक निश्चित व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। यह अपेक्षाएँ विभिन्न देश, काल, परिस्थिति, व संस्कृति के संदर्भ में भिन्न-भिन्न होती हैं, अर्थात् प्रत्येक समाज की कुछ सामाजिक प्राथमिकताएँ होती हैं कि हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। इन्हीं सामाजिक प्राथमिकताओं को 'मूल्य' कहा जा सकता है।

मूल्यों को सामाजिक विरासत के एक भाग के रूप में समझा जा सकता है। ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते हैं। इन्हीं के आधार पर संस्कृति का निर्धारण होता है। मूल्य एक सामाजिक तथ्य हैं जिसे समाज से अलग करके नहीं समझा जा सकता। यही कारण है कि प्रत्येक समाज में मूल्यों की प्रकृति समान नहीं होती। भारतीय समाज के आधार स्तम्भ पुरुषार्थ, पंच महायज्ञ, पंच महाऋण, अतिथि देवो भव, सर्वोदय, वसुधैव कुटुम्बकम् आदि पाश्चात्य समाजों में बिल्कुल अर्थहीन हो सकते हैं। हमारी संस्कृति, हमारा जीवन दर्शन व हमारी मानसिकता का निर्धारण करते हैं व मानसिक मूल्यों का।

मानव समाज की सबसे छोटी इकाई है, उसे समाज से अलग रखना असंभव है। व्यक्ति व समाज अन्योन्याश्रित हैं अत: 'सामाजिक मूल्य 'व ' मानवीय मूल्य' एक दूसरे के पूरक हैं। इनके मध्य कोई भी व्यवहार शून्य नहीं होता है, वह समाज से प्रेरित होता है। व्यक्ति से अलग समाज की कल्पना व समाज के बिना व्यक्ति की कल्पना करना व्यर्थ है अत: वे समस्त व्यवहार जो समाज के ढाँचे को व्यवस्थित रखने के लिए व्यक्ति से अपेक्षित हैं 'मानव की श्रेणी में आते हैं।'

मानव मूल्य:- सत्य, प्रेम, शान्ति, धर्म व अहिंसा पाँच हमारे प्रमुख व मूल मानवीय मूल्य माने गये हैं। नीतिश तक में लिखा है—

येषां न विद्या न तपो न दानम्,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म:।।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता:,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।
अयं निज: परोवेति गणना लघु चेतसाम्,
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

अर्थात् यह अपना है यह पराया है ऐसी गणना लघु चेष्टा वाले लोग करते हैं, उदार चरित्र वाले व्यक्ति के लिए तो सारी पृथ्वी ही उसका परिवार है अत: भारतीय संस्कृति में व्यक्तिवादिता का कोई स्थान नहीं है बल्कि सभी परिजन है या सर्वोदय के मूल्य को स्थान दिया गया है। इसी प्रकार सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:अर्थात् सभी सुखी हो, सभी निरोगी हों, ऐसे समाज की कल्पना की गई ।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चार पूरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को मानव मूल्यों में सम्मिलित किया जा सकता है। धर्म से तात्पर्य कर्त्तव्य पालन से है। न कि कर्मकाण्डों से। अर्थ को आवश्यक माना गया है, परन्तु धन कमाने का तरीका धर्म पर चल कर अर्थात् उचित साधनों के मार्ग से गुजरता है। 'काम' अर्थात् यौन संतुष्टि के लिए विवाह नामक संस्कार को सामाजिक मान्यता मिली तथा अन्त में जब उपरोक्त तीनों पुरुषार्थो का निर्वाह व्यक्ति जिम्मेदारी से करता है तो वह जीवन के अन्त में अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करता है।

इसी प्रकार पंच ऋण-देव व अतिथि ऋण से ऊऋण होने के लिए पंच महायज्ञ की व्यवस्था की गई तथा इन सबके प्रति कर्त्तव्यों के निर्वहन को मूल्यों में शामिल किया गया। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यतें रमन्ते तत्र देवता, ''जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। अत: स्त्रियों को भारतीय मूल्यों में देवी का स्थान दिया गया व प्रत्येक व्यक्ति से स्त्रियों की गरिमा को ध्यान में रखकर ही व्यवहार करने की अपेक्षा की गई।''

इस प्रकार चारों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास) से संबंधित अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुये व्यक्ति के सामाजिक व पुरुषार्थो के आधार पर व्यक्ति के मानवीय मूल्यों का निर्धारण किया गया।

मूल्य संकट:- आवश्यकताओं व परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ-साथ मूल्यों में भी परिर्वतन हो रहा है। वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे समाज में समय-समय पर मूल्यों में अनेक परिवर्तन हुए हैं। परिवर्तन समय की आवश्यकता है व परिवर्तन से समाज की प्रगति को गति मिलती है। आज हमारे मूल्यों में इतनी तेजी से परिवर्तन हो रहा है कि डर है कि हम अपनी पहचान अपने अस्तित्व को खो न दें।

''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप'' सत्य सबसे पहला व प्रमुख मानवीय मूल्य है। परन्तु पैसे की चाह में व अधिक बिक्री के लालच में प्रतिदिन झूठे दावे करने वाले विज्ञापन प्रसारित हो रहे हैं। विज्ञापन चाहे वे किसी भी उत्पाद के हों सत्यता के मूल्य पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। साथ ही हम अपने कर्त्तव्य निर्वाह से बचने के लिए अधिकारी के समक्ष, घर में, आयकर रिर्टन भरते समय और अनजाने में न जाने कितनी वार झूठ का सहारा लेते है। मोबाइल इस क्रिया में अपनी अहं भूमिका निभाता है।

प्रेम प्रमुख मानवीय मूल्य माना जाता है। प्रेम समाज के किसी भी रिश्ते की बुनियाद है। लेकिन आज संयुक्त परिवार तक की अवधारणा जिस गति से समाप्त हो रही है तो देश-प्रेम की कल्पना कैसे की जाय? बच्चे वृद्ध माता-पिता का सहारा बनने के बजाय उन्हें वृद्धाश्रम पर रहने के लिए मजबूर करते हैं। तो कहीं साफ्टवेयर इंजीनियर अपनी पत्नी के टुकड़े-टुकड़े करके फ्रीजर में रखता है। सम्पत्ति के लिए पत्नी पति की हत्या करती है। ऐसा ही आपत्तिजनक व्यवहार देश-प्रेम के साथ भी देखने को मिलता है। प्रेम का स्वरूप ही बदल गया है। जिस प्रेम को विवाह नामक संस्कार के द्वारा समाज में प्रतिष्ठित किया जाता था आज Live in relationship द्वारा उसका मजाक बनाया जा रहा है।

शान्ति ऊँ शान्ति, शान्ति, शान्ति इस मन्त्र का उच्चारण कर तीन बार शान्ति का तात्पर्य है दैहिक, दैविक व भौतिक तापों से शान्ति, परन्तु शान्ति बनाये रखने का कार्य आज पुलिस व प्रसाशन की जिम्मेदारी है, आम आदमी अपने इस मानवीय मूल्यों का निर्वाह नहीं कर रहा। धार्मिक स्थानों पर बाजारों में या भीड़ वाले स्थानों पर विस्फोट करना या अफवाह को फैलाकर शान्ति भंग करना ये उदाहरण समय-समय पर देखने को मिल जाते हैं।

धर्म का तात्पर्य अपने कर्तव्यों का भली-भाँति निर्वाह है। आप जीवन के जिस भी आश्रम में हैं उससे संबंधित समस्त दायित्वों का निर्वाह जिम्मेदारी से करें। परन्तु आज हम घर से लेकर दफ्तर तक, पड़ोस से लेकर सरहद तक, समुदाय से लेकर समाज तक अपने कर्तव्यों से पीछे भागते हैं व धर्म के नाम पर मन्दिर जाकर या पूजा पाठ करके ही अपनी जिम्मेदारी से इति श्री कर लेते हैं।

अहिंसा पाँचवाँ प्रमुख मानव-मूल्य है ''अहिंसा परमो धर्म:'' अहिंसा को परं धर्म माना गया है, पर आज जिस गति से विस्फोटों के द्वारा, माँसाहारी भोजन की आड़ में, ऑनर किलिंग के बहाने या अपने शौक के लिए शिकार आदि के द्वारा हिंसा हो रही है ऐसा लगता नहीं कि यह मानवीय मूल्य मानव के हृदय में स्थान बनाये रखने में सफल हुआ। आज रिश्तों से विश्वास, प्रेम गायव होता जा रहा है। ऐसा लगता है कि रिश्तों का खून होना भी हिंसा का पर्यावाची ही है।

आज ये सभी मानवीय मूल्य सिर्फ ग्रन्थों तक ही सीमित रह गये हैं। भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक पक्ष पर भौतिकता हावी होती दिखाई दे रही है। जब खाद्य पदार्थों में, दवाईयों में मिलावट करते समय लोगों के हाथ नहीं कांपते। उस समय हम अपने मूल्यों को भूल जाते हैं जहाँ सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों की कल्पना के साथ-साथ यहाँ ''जीवेम् शरद: शतम्'' अर्थात् सौ वर्ष तक जीने का आशीर्वाद दिया जाता है। जिसको व्यवहारिक रूप मिलना कैसे संभव है, जब दूध, सब्जी, फल, अनाज, दालें, घी, तेल, मसाले, दवाईयां, गुड़, चीनी सभी में घातक रासायनिक मिले हुये हैं जो हमारे शरीर के लिए अनुपयोगी व घातक हैं। उस समय व्यक्ति के ऊपर व्यक्तिवादिता इतनी हावी हो चुकी है कि वह अपने लाभ को देखता है स्वास्थ्य को नहीं।

भौतिक व प्रसिद्धि के लिए फिल्म व टेलीवीजन कलाकार तरह-तरह के हथकण्डे अपनाते है। तमाम रियलिटी शो जो टेलीविजन पर प्रसारित हो रहे हैं मनोरंजन के नाम पर संस्कृति की तौहीन करते हैं। जिसमें फुहड़ता, अश्लीलता, व्यक्तिवादिता को इस तरह प्रदर्शित किया जाता है कि मूल्यों को शर्मसार होना पड़े। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। आज टेलीविजन साहित्य से ज्यादा सुलभ हो गया है अत: टेलीविजन को समाज का दर्पण एवं उसमें दिखाये जाने वाले पात्रों को समाज का प्रतिनिधि कहना अतिशयोक्ति न होगी। जब सैलेब्रिटीज उस भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसे वीप के द्वारा ढकने का प्रयत्न किया जाता है व मनोरंजन के इस कार्यक्रमों को हम परिवार सहित देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, तो ऐसा लगता है कि मानवीय मूल्यों को बहुत पीछे छोड़ दिया है भौतिक मूल्यों ने। यदि हम नौकरशाही की बात करें तो अधिकारी से लेकर नीचे तक सब अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह तभी करते हैं, जब उन्हें सुविधा शुल्क उपलब्ध कराया जाता है। केवल आर्थिक भ्रष्टाचार ही नहीं बल्कि हमारी मानसिकता भी मूल्यों को दर्शाती है। दफ्तर समय पर न जाना, जाकर काम न करना, अपनी जिम्मेदारी से अनभिज्ञ सिर्फ तनख्वाह की ओर देखने वाले नौकरशाही के इस तंत्र में सबके अन्दर कौन से मूल्य बसे हुए हैं? यह समय-समय पर पता चलते रहते है। चिकित्सालय भगवान का रूप होते हैं, पर कभी सुनने में आता है कि पर्याप्त धन न होने के कारण मरीज को अस्पताल के बाहर निकाल दिया जाता है। गरीब महिला का प्रसव सड़क पर या अस्पताल के गेट पर होता है। मरीज बाहर तड़प रहा है व डॉक्टर उसे भर्ती नहीं कर पा रहा तो ऐसा लगता है कहाँ है मानवता? जिस नारी को हमारे यहाँ देवी की उपमा से विभूषित किया गया वह जब धनोपार्जन के लिए बार डांसर या वेश्ययावृत्ति जैसे पेशे को अपनाती है तो मानवीय मूल्य स्वयं शर्मसार हो जाते हैं।

संक्षेप में यहाँ इतना ही कहना है कि मानवीय मूल्य जिस द्रुत गति से अपना अस्तित्व खो रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय संस्कृति की पहचान पर गंभीर संकट है। परिवर्तन जब सकारात्मक होता है तो हम उसे प्रगति कहते हैं जब क्राँति के रूप में आता है तो समाज का हुलिया ही बदल जाता है हमें यदि अपनी पहचान व अस्तित्व को बचाना है तो हमें मानवीय मूल्यों पर आये संकट पर गंभीरता से विचार करना होगा अन्यथा हमारी पहचान डायनासोर की तरह लुप्त हो जायेगी व अपने मूल्यों को देखने के लिए हमें पुस्तकालय रूपी म्यूजियम में जाना पड़ेगा।

●●

वार्षिक आख्या 2013-14 (खेल-कूद)

प्रो0 रनवीर सिंह
विभागअध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा

महाविद्यालय के सत्र 2013-14 में शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग द्वारा यहाँ अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के चहुँमुखी विकास हेतु समय-समय पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभाग के क्रीड़ा सचिव प्रो0 रनवीर सिंह, महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 अजब सिंह यादव जी तथा क्रीड़ा समिति के सम्माननीय सदस्यों के प्रयासों से महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने न केवल महाविद्यालय बल्कि विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस क्रम में प्रमुख रूप से बेडमिन्टन, कुश्ती, बालीबॉल तथा एथलेटिक्स प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं की प्रतिभागिता सराहनीय रही।

दिनांक 27 दिसम्बर 2013 को फुटबॉल (छात्र) टीम अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगिता में प्रतिभाग हेतु श्री चित्रगुप्त पी0जी0 कॉलेज, मैनपुरी गयी। छात्र राहुल कुमार बी0ए0 प्रथम वर्ष का चयन उत्तर क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

दिनांक 14 अक्टूबर 2013 को एस0बी0जे0 महाविद्यालय बिसावर, हाथरस में आयोजित फ्रान्स कन्ट्री प्रतियोगिता में प्रतिभाग हेतु महाविद्यालय की छात्र एवं छात्राऐं गये। महाविद्यालय की छात्रा हिमनी बी0एड0 प्रथम वर्ष तथा छात्र का चयन अखिल भारतीय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

दिनांक 17,18 अक्टूबर 2013 को महाविद्यालय में अन्तर महाविद्यालय वालीबॉल (पुरूष) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की टीम उपविजेता रहीं छात्र शीलेन्द्र (एम0ए0पूर्वार्द्ध भूगोल), अरविन्द (एम0ए0पूर्वार्द्ध समाजशास्त्र) तथा शैलेन्द्र (एम0ए0पूर्वार्द्ध राजनीतिशास्त्र) का चयन उत्तर क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

दिनांक 22-23 अक्टूबर 2013 को ए.के. कॉलेज, शिकोहाबाद में आयोजित कबड्डी (पुरूष) प्रतियोगिता/चयन में महाविद्यालय के छात्र अनिल कुमार बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष का चयन उत्तर क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय की टीम में हुआ।

दिनांक 25 अक्टूबर 2013 को बी0बी0आर0आई0 बिचपुरी, आगरा में आयोजित हैंडबॉल (पुरूष) प्रतियोगिता/चयन में महाविद्यालय के छात्रों ने प्रतिभाग किया जिसमें छात्र राहुल कुमार (बी0ए0स0सी0 प्रथम वर्ष) का चयन उत्तर क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

दिनांक 11 नवम्बर 2013 को महाविद्यालय के छात्र ऋषि कुमार (बी0ए0स0सी0 प्रथम वर्ष) को पी0सी0 बागला कॉलेज, हाथरस में आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता में प्रतिभाग हेतु भेजा गया।

दिनांक 18,19 नवम्बर 2013 को ए0आर0 कॉलेज जसराना में आयोजित खो-खो प्रतियोगिता में प्रतिभाग हेतु महाविद्यालय के छात्र गए जिसमें शिवओम (बी0ए0 तृतीय वर्ष) का चयन उत्तर क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

दिनांक 29-30 नवम्बर 2013 को महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राऐं एथलेटिक्स प्रतियोगिता/चयन में प्रतिभाग हेतु बी0बी0आर0आई0, बिचपुरी गए। महाविद्यालय की छात्रा कुमारी बसन्ती ने हेमर थ्रो में प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया और उसका चयन अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

दिनांक 17 जनवरी 2014 को के0आर0टी0वी0 कॉलेज, मथुरा में आयोजित योग प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र आशीष एवं दीपक (बी0ए0 द्वितीय वर्ष) का चयन अखिल भारतीय अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ। छात्र-छात्राओं ने महाविद्यालय परिवार को गौरवांवित किया।

अन्त में दिनांक 21-22 फरवरी 2014 को 53 वें वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रा कु0 हिमानी यादव (बी0ए0 प्रथम वर्ष) तथा छात्र रतनेश कुमार (बी0ए0 द्वितीय वर्ष) को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया एवं सभी विजयी खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया।

वार्षिक आख्या 2014-15 (खेल-कूद)

प्रो. रनवीर सिंह
विभाग अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा

महाविद्यालय सत्र 2014-15 में शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग द्वारा यहाँ अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के चहुँमुखी व्यक्तित्व विकास हेतु समय-समय पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभाग के क्रीड़ा सचिव प्रो0 रनवीर सिंह, महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 अजब सिंह यादव जी तथा क्रीड़ा समिति के सम्माननीय सदस्यों के प्रयासों से महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने न केवल महाविद्यालय बल्कि विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस क्रम में प्रमुख रूप से बेडमिन्टन, बालीबॉल, खो-खो, कुश्ती एथलेटिक्स तथा योगा प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों की प्रतिभागिता सराहनीय रही।

दिनांक 10 अक्टूबर 2014 को महाविद्यालय ने मैनपुरी के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में अन्तर महाविद्यालय बेडमिन्टन प्रतियोगिता का आयोजन कराया, जिसमें महाविद्यालय की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 13-14 अक्टूबर 2014 को अन्तर महाविद्यालय बालीबॉल (पुरूष) प्रतियोगिता का आयोजन महाविद्यालय प्रांगण में कराया जिसमें महाविद्यालय की टीम विजेता रही।

छात्र शैलेन्द्र कुमार (एम0ए0 उत्तरार्द्ध भूगोल) तथा अर्पित पाण्डे (बी0एस0सी0 तृतीय वर्ष) का चयन उत्तर क्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

एथलेटिक्स प्रतियोगिता/चयन हेतु दिनांक 07-08 नवम्बर 2014 को पी0सी0 बागला कॉलेज, हाथरस महाविद्यालय की टीम ने प्रतिभाग किया जिसमें छात्रा कु0 सुमलेष नन्दिनी (बी0ए0 प्रथम वर्ष) का चयन अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय की टीम में हुआ।

कुश्ती प्रतियोगिता हेतु दिनांक 18-19 नवम्बर 2014 को पी0सी0 बागला कॉलेज, हाथरस में महाविद्यालय के छात्रों ने प्रतिभाग किया इनका प्रदर्शन सराहनीय रहा।

खो-खो (पुरूष) प्रतियोगिता/चयन हेतु दिनांक 02-03 दिसम्बर 2014 को एल0आर0 कॉलेज, जसराना में महाविद्यालय के छात्र अरविन्द कुमार (एम0ए0 उत्तरार्द्ध समाजशास्त्र) का चयन उत्तरक्षेत्रीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

योगा प्रतियोगिता/चयन हेतु दिनांक 12-13 दिसम्बर 2014 को के0आर0टी0टी0 कॉलेज, मथुरा महाविद्यालय की टीम ने प्रतिभाग किया जिसमें छात्र रतनेश कुमार (बी0ए0 तृतीय वर्ष) का चयन अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

छात्र-छात्राओं ने महाविद्यालय परिवार को गौरवांवित किया, इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में क्रिकेट, कबड्डी, कैरम, शतरंज, टेबल टैनिस, फुटबॉल आदि गतिविधियों में भी छात्र/छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा सभी खेलों से सम्बन्धित सैद्धान्तिक जानकारियाँ भी विभाग अध्यक्ष प्रो0 रनवीर सिंह से प्राप्त की, अन्त दिनांक 27-28 फरवरी 2015 को 54 वें वार्षिक खेलकूद समारोह का आयोजन किया गया जिसमें छात्र वर्ग में पुनीत कुमार (बी0ए0 द्वितीय वर्ष) और छात्रा वर्ग में कु0 किरन (बी0ए0 तृतीय वर्ष) को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

●●

स्वस्थ जीवन के तीन प्रहरी

डा० राजेश कुमार सक्सैना
भूगोल विभाग

प्रत्येक व्यक्ति की यह मनोकामना रहती है कि वह स्वस्थ जीवन बिताये। लेकिन अपनी कामना के अनुरूप वह एक छोटा सा प्रयास भी नहीं करना चाहता। यहीं पर वह गलती करता है। जिसके परिणाम वह बहुत बड़े रूप में भुगतता है। आरोग्य मनुष्य की साधारण समस्या है। थोड़े से नियमों का पालन, साधारण सी देख-रेख से वह पूरा हो जाता है। किन्तु मनुष्य आलस्य के कारण तथा भार समझ कर उतने से कार्य को नहीं करता जिसका प्रतिफल वह बड़ी-बड़ी बीमारी के रूप में भुगतता है। अच्छे स्वास्थ्य के केवल तीन नियम हैं जिनका पालन करके वह स्वस्थ जीवन तथा लम्बी आयु प्राप्त कर सकता है। ये नियम निम्नलिखित हैं-

(1) प्रातः जागरण

(2) उषा पान

(3) स्वच्छ वायु हेतु टहलना

उपर्युक्त तीनों ही नियम रूचिकर एवं सर्वसुलभ हैं। इनको करने के लिए किसी विशेष साधन को जुटाने की आवश्यकता नहीं है।

प्रातः जागरण- संसार के सभी लोगों ने प्रातः जागरण को हितकर माना है।

अंग्रेजी की एक कहावत है- Early to bed and early to rise, makes a man helthy, welthy and wise. अर्थात जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान बनाता है। शास्त्रों का कथन है-

''प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में जागने से तंदुरूस्ती और उम्र बढ़ती है। किसी विचारक ने अच्छे स्वास्थ्य के सम्बन्ध में लिखा है-

प्रातः उठ शौचादि जा, तत्पश्चात नहाय।
ता पाछे कुछ श्रम करे, रोग न तांहि सताय।।

प्रातः कालीन प्राण वायु सूर्योदय से पूर्व तक निर्दोष एवं स्वच्छ रहती है। इसलिए प्रातः काल जल्दी उठना चाहिये इससे स्वास्थ्य और आरोग्य उत्तम रहता है तथा धन की प्राप्ति होती है।

(i) सन्त विनोवा ने कहा है- ''रात में नींद लेने के बाद शरीर की वृद्धि होती है। उसे कायम रखने के लिए सुबह जल्दी उठ जाना चाहिए। उस समय दिमाग ताजा रहता है, कोई आवाज नहीं होती। सृष्टि की अनुकूलता होती है। इसलिए उस वक्त बुद्धिमान ग्रहण करने के लिए जाग्रत रहती है।''

(ii) स्वामी विवेकानन्द ने कहा है- ''सूर्योदय से पूर्व उठने से शरीर स्वस्थ रहता है तथा बुद्धि का विकास होता है।''

(iii) सिक्खों के धर्म ग्रन्थों में लिखा है- ''यदि आप चाहते हैं कि आपकी आयु अधिक हो, बुढ़ापा आपसे दूर रहे, आपका शरीर पूर्ण स्वस्थ बना रहे तो आप प्रातः काल जल्दी उठा कीजिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वास्थ्य रक्षा के नियमों में सम्पूर्ण विश्व एकमत हैं दिनभर के कार्यो दौड़ धूप आदि से जो धरती में हलचल होती है, उससे प्राकृतिक वातावरण अशांत हो जाता है। धूल के कण कार्बन के तत्व तथा अण्य विषैले पदार्थ वायु के साथ आकाश में भर जाते हैं, इनका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार की वायु में प्राणवायु बहुत कम मात्रा में प्राप्त होती है जबकि रोगाणु विषाणु अधिक होते हैं, अतः मनुष्य प्राणवान न होकर शक्ति हीन होने लगता है। दिन भर का कोलाहल रात्रि में शान्त होने लगता है धीरे-धीरे तीसरे पहर तक सारा गर्द गुवार जमीन पर आ जाता हे जिससे प्राण वायु निर्दोष हो जाती है। स्वच्छ वातावरण में सांस लेने पर प्राण वायु की इतनी मात्रा शरीर में एकत्रित हो जाती है कि सारे दिन मन प्रसन्न रहता है और शरीर में स्फूर्ति और ताजगी बनी रहती है। इससे प्राणवायु संचित हो जाता है और स्वास्थ्य स्थिर रहता है। इस प्राण वायु में इतनी जीवन शक्ति होती है कि सारे दिन विषैले तत्वों से लड़कर शरीर को दूषित आघात से बचाये रखता है। इसलिये प्राणविद्युत से संचय के लिए प्रातः काल जल्दी उठना सबविधि मंगलकारी होता है।''

इन लाभों को जानते हुए भी लोगों की शिकायत रहती है कि प्रातः काल उनकी नींद नहीं खुलती। इसका मुख्य कारण देर से सोना है। यदि थोड़ा सा प्रयत्न करके शाम को आवश्यक कार्यो से निपटकर सो जाये जो निश्चित रूप से प्रातः काल जल्दी उठ सकेगा।

उषापान- प्रातः सूर्योदय से पूर्व शैया त्यागकर बिना शौंच आदि गये शाम रखे हुए जल को पीना ही उषा पान कहलाता है। जल की मात्रा एक गिलास लेकर 3-4 गिलास तक हो सकती है। जिस बर्तन में जल रखा हो वह यदि ताँबे का हो तो और भी उपयोगी है। किन्तु यदि ऐसा नहीं हो पाता है तो भी किसी स्वच्छ बर्तन में ढककर रखा जा सकता है।

वैद्य ग्रन्थों में उषापान को अमृत पान कहा गया है। स्वास्थ्य के लिये उषापान की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है। और बताया गया है कि प्रातः काल जल पीने से बवासीर, ज्वर, पेट के रोग, संग्रहणी, मूत्ररोग, गुर्दा रोग, कोष्ठवद्धता, रक्तपित्त विकार, नाक से रक्त साव, कान तथा सिर और कमर के दर्द, नेत्रों की जलन आदि व्याधियाँ दूर होकर शरीर सशक्त हो जाता हैं वैद्य ग्रन्थों में उषापान की उपयोगिता

बताते हुए यहां तक कहा है कि सूर्योदय से पूर्व आठ अंजलि जल पीने से मनुष्य कभी बीमार नहीं पड़ता, बुढ़ापा नहीं आता और सौ वर्ष से पूर्व मृत्यु नहीं होती है।

प्रातः जल पीने से आँतों मे लगा हुआ मल साफ हो जाता है और उनमें पुष्टता आती है। गुर्दे शक्तिशाली बन जाते हैं। आँख की ज्योति बढ़ती है बाल असमय नहीं पकते हैं, बुद्धि तथा शरीर निर्मल रहता है जिससे वह सभी रोगों से बचा रहता है। अतः प्रातः जलपीना स्वास्थ्य रक्षा की दूसरी महत्वपूर्ण कुंजी है।

स्वच्छ वायु हेतु नियमित टहलना- प्रातः उठने के बाद यदि स्वच्छ वायु का सेवन नहीं किया तो प्रातः उठने का लाभ अधूरा रह जाता है। अतः वायु सेवन हेतु प्रातः काल शौचादि से निवृत होकर लगभग एक या दो किलोमीटर प्राकृतिक वातावरण में घूमने जाना चाहिए। इस से निश्चय ही आयु लम्बी होती है। जिस स्थान पर मनुष्य या अन्य प्राणी बहुतायत में निवास करते हैं वहाँ उनके द्वारा छोड़ी गई स्वांस से वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ जाती है अतः वातावरण विषैला एवं अशुद्ध हो जाता है। वायु दोष आ जाने से वह निश्चित रूप से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। किन्तु आबादी के बाहर वृक्षों द्वारा वातावरण निरन्तर शुद्ध होता रहता है। इसलिए गांव या शहर के बाहर खुले वातावरण में कुछ देर घूमने से शान्ति प्राप्त होती है तथा स्वास्थ्य सम्वर्धन का अवसर प्राप्त हो जाता है। भ्रमण से न केवल वायु शुद्ध होती है बल्कि व्यायाम की आवश्यकता भी पूर्ण हो जाती है। भ्रमण बाग बगीचे की ओर किया जाये तो और भी अच्छा है। भ्रमण का तात्पर्य धीरे-धीरे चलने से पूरा नहीं होता इसके लिये यथा सम्भव तेज चाल से चलना चाहिये ताकि शरीर में गर्मी आ जाए या पसीना भी छलकने लगे तो फिर व्यायाम का कार्य भी पूर्ण हो जाता है। खुले आसमान की ओस भरी दूब घास में नंगे पाँव घूमने से शरीर को अपार शक्ति प्राप्त होती है।

स्वास्थ्य व आरोग्य रक्षा के लिये उपर्युक्त तीन नियम आपूक हैं। इनको अपनाने में न तो धन की आवश्यकता है और न मंहगी दवाईयों की बल्कि थोड़े से समय पूर्व जागना, जल पीना एवं टहलना भर है। इतने मात्र से ही हम अपने शरीर का सौष्ठव बनाये रखने में सफल हो जाते हैं। स्वास्थ्य जैसी समस्या के लिए किसी बड़े अनुष्ठान या उपवास या व्रत की आवश्यकता नहीं है। कोई भी व्यक्ति इन नियमों का पालन करते हुए आरोग्य लाभ प्राप्त कर सकता है। शरीर के उपर्युक्त तीन चौकीदार ऐसे हैं जो सब ओर से हमारे स्वास्थ्य की रक्षा और शरीर को पोषण प्रदान करते हैं। इन्हें सजग रखें तो शरीर में कोई रोग अपना प्रभाव नहीं डाल सकेगा, हम बिना किसी कष्ट के सौ वर्ष तक जीवित रह कर जीवन का आनन्द ले सकते हैं। शास्त्र में लिखा है- यावत् जीवेय सुखं जीवेम।

सुखपूर्वक जीने के लिए प्रातः जागरण, उषा पान, तथा स्वच्छ वायु सेवन सर्वोत्तम है।

●●

मेरे सपनों का भारत

पल्लवी भदौरिया
एम.एस.(पू.) समाजशास्त्र

मेरे सपनों के भारत में,
मैं बिना डरे घर से निकलूँगी।
हर सन्नाटे, हर अँधियारे, हर गली, सड़क और चौराहे पर,
न होगा कोई घात लगाये, न नजरें मुझको चीरेंगी।
मैं अपनी आजादी के रंगों से, अपनी दुनियाँ को रंग लूँगी।
न मेरी माँ की कोख में मुझे मारा जायेगा,
न लालच की आग में हर बार जलाया जायेगा
मैं खिलूँगी, बढ़ूँगी, दौड़ूंगी
मेरी भी अपनी मंजिल होगी, जिस पर मेरा परचम लहरायेगा।
मेरे सपनों के भारत में, मेरे भी कुछ सपने होगें,
जो टूटेंगे नहीं, सच होगें।
मेरे सपनों के भारत में, मेरी भी दावेदारी होगी।
सपनों के भारत का सपना
देखा है जागती आँखों से जब ये सच होगा
हमारी सच्ची आजादी पर हमें भी गर्व होगा।।
''भारत की बेटियाँ''

●●

माँ-बाप

कु0 काजोल
बी.एस.सी. II

मैं एक ऐसी लड़की हूँ जिसकी माँ उसे बचपन में ही छोड़ के चली गयी। मैं जब 3 साल की थी। तभी मेरी माँ की मृत्यु हो गयी थी। मुझे ये भी नहीं पता कि माँ का प्यार क्या होता है। पर और लोगों की माँ को देखती हूँ और उनके प्यार को देखती हूँ तो मुझे अपनी माँ की याद आती। काश आज मेरी भी माँ होती। पर मेरे पापा ने मुझे कभी भी माँ की कमी महसूस नहीं होने दी। सुना है माँ-बाप भगवान का दूसरा रूप होते हैं जिनकी माँ होती है वो बहुत खुशकिस्मत होते हैं। माँ-बाप अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए कुछ भी कर सकते और कोई भी दर्द वर्दाश्त कर सकते है और कई ऐसे बच्चे होते हैं जो अपने माँ-बाप को ठुकरा देते हैं लेकिन उन बच्चों को ये नहीं पता कि वो कितने नसीब वाले होते हैं जो उन्हें इतने अच्छे प्यार करने वाले माँ-बाप मिले। पर जिनके माँ-बाप होते हैं वो उनकी कदर नहीं करते हैं। माँ-बाप की सेवा करते हैं और लोग भगवान को मानते हैं मन्दिर जाते दान करते दिन-रात पूजा पाठ करते हैं ऐसी पूजा-पाठ करने का क्या फायदा जो अपने माँ-बाप का पेट नहीं भर सकते हैं। बच्चे अपने माँ-बाप को ठुकरा देते पर माँ-बाप फिर भी उन्हें उतना ही प्यार स्नेह देते हैं, पर उन बच्चों को ये नहीं पता एक दिन वो भी बूढ़े होंगे तब उन्हें अपने माँ-बाप के दर्द का अहसास होगा। जब उनके बच्चे उनके साथ वो सब करेंगें जो उन्होंने अपने माँ-बाप के साथ किया है। जो बच्चे अपने माँ-बाप की सेवा नहीं करते उनके जीवन में कभी-भी कल्याण नहीं हो सकता है।

●●

किस्मत का खेल

गुलप्सा सिद्दीकी
बी.एस-सी. जीव विज्ञान

एक लड़की रोज गली से गुजरा करती थी
अपने चेहरे को नकाब से ढ़ककर रखती थी
शामद वो उससे दिल से प्यार करता था
वो खुदा से कहता था या खुदा हवा कर दे, जो इसे (वे नकाब) कर दे कहता था। वो रोज यही।
एक दिन उस लड़की ने उस लड़के के पड़ोसी से पूछा
कहाँ गया वो आशिक ? तो उसने कहा
आपको आने में देर हो गयी उस दीवाने की कल रात मौत हो गयी, पड़ोसी ने अपना फर्ज निभाया, लड़की को कब्र तक ले आया लड़की कब्र पर रोने लगी अपने आंसू से कब्र को धोने लगी। कब्र से आवाज आयी ऐ खुदा ये कैसा इन्तकाब आया है? आज मैं पर्दे में हूँ और मेरा महबूब वे नकाब आया है।

हास्य व्यंग

डॉक्टर- मरीज से- दवा खाली थी
मरीज- डॉक्टर से- दवा खाली नहीं भरी थी
डॉक्टर- मरीज से- मेरा मतलब दवा पीली थी
मरीज- डॉक्टर से- दवा तो लाल थी
डॉक्टर- मरीज से- मेरा मतलब दवा को पीलिया था
मरीज- डॉक्टर से- अरे नहीं, दवा को नहीं पीलिया था,
पीलिया तो मुझे था जिसकी आप मुझे दवा देने आये थे।

●●

जीवन में याद रखने योग्य बातें

ऊषा बैस
बी.ए. द्वितीय वर्ष

(1) तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं
माँ, बाप, जवानी

(2) तीन चीजें कभी छोटी न समझें
शत्रु, कर्ज, बीमारी

(3) तीन चीजें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं
समय, मौत, भाव

(4) तीन चीजें भाई को दुश्मन बना देती हैं
जर, जोरू, जमीन

(5) तीन चीजें हर एक की अलग होती है।
स्वभाव, भाग्य, कर्म

(6) तीन चीजें याद रखनी जरूरी हैं
सच्चाई, कर्तव्य, धर्म

(7) तीन चीजें इंसान को जलील कर देती हैं
चोरी, चुगली, झूठ

(8) तीन चीजें सबको प्यारी लगती हैं
औरत, दौलत, औलाद

(9) तीन चीजों से अवश्य बचना चाहिए
पर स्त्री, कुसंगति, निन्दा

(10) तीन पर दया करो
बालक, भूखे, पागल

(11) तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है
ईश्वर, मेहनत, सेवा

(12) तीन चीजों का सम्मान करो
माता, पिता, गुरू

●●

संघर्ष ही जीवन है

खुशबू यादव
बी.ए. तृतीय वर्ष

जिन्दगी का कोई मोल नहीं बिना संघर्षों के
हर सुबह जिन्दगी में नया ऋण ले।
अकस्मात कई विषमताएँ आयेंगी
समय की सुई फिर भी चलती जायेगी।
एक दिन हँसना एक दिन रोना,
बिना संघर्षो के क्या पाना क्या खोना।
पतझड आता है सावन आता है,
समय कभी आशा तो कभी निराशा साथ लाता है।
तपकर ही सोना कुंदन बनता है,
ऊँचे पहाड़ों पर चढ़कर शिखर मिलता है।
संघर्ष जीवन का हिस्सा है आते और जाते,
इसलिए संघर्षो से नहीं घबराते।
गिरना जरूरी नहीं गिरकर उठना जरूरी है,
इसलिए संघर्षो के बिना जिन्दगी अधूरी है।
मेरी ये कविता अभी अधूरी है,
आप इस पर अमल करें तो ये पूरी है।

●●

काँटों की डगर

जहाँ नहीं जहाँ की हँसी, खुश नुमा,
हर कोई माँग ले,
मुझे जो तुम जहाँ के गम सारे दे दो।
चल रहा हूँ तम मग पर न पता,
पहुँचूं एक किरन तक,
ए अखिल बस अपनी आँखों के इशारे दे दो।
धूल समझो या फिर फूल निशा में,
चमन होंगे तो कैसे,
चाँद न सही तो दो चार मुझे तारे दे दो।
ऊवता हूँ तो लगता है सपने सारे जले बुझे से हैं,
जल जाए कोई ख्वाव नया,
कोई ऐसी करवला वहारें दे दो।
जहाँ नहीं जहाँ की हँसी, खुश नुमा,
हर कोई माँग ले,
मुझे जो तुम जहाँ के गम सारे दे दो।

पुष्प विवाद

मैं बस खिल उठा,
पत्तियों का एतवार किए।
ऐ पथिक तुम निकल जाते,
देखकर ही मुझे फिर क्यों तोड़ा गया,
मैंने लाख इन्कार किए।
मैं बस खिल उठा,
पत्तियों का एतवार किए।
उधड़ गया हूँ जिसने तोड़ा उसे क्या फिकर मेरी,
जा फैंकेगा कहीं फुकरे गलियों में,
बेरहमी से मेरे सपनों के टुकडे हजार किए।
मैं बस खिल उठा,
पत्तियों का एतवार किए।
वन हवाओं में बहूँगा एक मीठी तन्मय
ऐ हरजाई मुझे जी लेने दो
मैंने कई गुहार किए।

चन्द्र शेखर
एम.ए. (उ.) समाजशास्त्र

भारत माँ के वीर

कु0 निशा शाक्या
एम.ए. (उ.) समाजशास्त्र

कमल कीचड़ में ही खिलता है, वृक्ष जमीन से ही निकलता है,
न इतराओ कश्मीर के मिटाने वालों से कश्मीर को बचाने वाले,
हर वीर बालक इन्हीं में से निकलता है।।

भारत माँ के वीर जवानो, एक बार बस सीना तानो।।
वीर शिवाजी के वंशज,
भारत माँ की औलाद हो तो तुम,
मातृभूमि पर मरने वाले, चन्द्रशेखर आजाद हो तुम।।
सीना है फौलादी तेरा,
शंकर का कैलाश हो तुम,
इतिहास बचाना बन्द करो, भूगोल बदल देना होगा।।
सत्य अहिंसा परम धर्म का,
बोल बदल देना होगा,
अब घर में मत बैठो, घर से बाहर आना होगा।,
यह भ्रष्टाचार की राजनीति जो फैली है,
इसको यहीं मिटाना होगा।

इस एन.डी.सी. में मिलने वाली, शिक्षा तुम गृहण करके जाओ,
देश-विदेश में जाकर इस शिक्षा की ज्योति तुम फैलाओ।
ताकि खत्म हो अज्ञानता रूपी दानव, भारत माँ के वीर जवानों।
एक बार बस सीना तानो।

●●

दिल से...

फूलों से खुशबू चुरा सकती हूँ मैं
यूं ही कुछ लिखते लिखते
इतिहास भी रच सकती हूँ मैं।
चाह लूंतो उस आसमाँ को भी
छू सकती हूँ मैं।
देख लेना कभी आसमाँ पर
बिना पंखों के बादलों के संग भी
उड़ सकती हूँ मैं।
दोस्त बन जाऊँ जा किसी की
उसे हर मुश्किल से
जीतना सिखा सकती हूँ मैं।
हम सफर बन जाऊँ जो किसी की
उसकी हर मंजिल आसान बना सकती हूँ मैं।
नजर भर कर देख लूँ जिसको
उसे अपना बना सकती हूँ मैं।
जज्बा तो वो रखती हूँ
कि पार पर्वत भी कर सकती हूँ मैं।
कभी देखना सागर की गहराईयों में
लहरों के साथ गहराईयों को भी
छू सकती हूँ मैं।
मेरे प्यार मेरे समर्पण को
मेरी कमजोरी न समझना
मिट सकती हूँ किसी पर
तो मिटा भी सकती हूँ मैं।
खुद पर आ जाऊँ जो
इस दिल को पत्थर भी बना सकती हूँ मैं।
जीत सको जो प्यार में जीत लेना मुझे
प्यार में सब कुद हार सकती हूँ मैं।
कमजोर नहीं हूँ मजबूर भी नहीं हूँ
जिद पर आ जाऊँ जो
दुनियाँ भी बदल सकती हूँ मैं।
यूं ही कुछ लिखते लिखते
इतिहास भी बन सकती हूँ मैं।
मिटते-मिटते यूं ही कुछ लिखते-लिखते।

कु0 रजनीश भारती (हिन्दी विभाग)

बैसवारा हमारा

हुई धन्य है दौलतपुर की धरा, जिसने महावीर से रत्न संवारा।
मढ़ाकोला ने पुत्र निराला दिया, जनमानस ने जिसपै मन धारा।
कवियों की है खान यही धरती, बहती जँह निर्झर काव्य की धारा
रामविलास समान समीक्षक, पा के निहाल हुआ बैसवारा
ऋषियों की प्रसिद्ध तपस्थली है, बहती जहां गंगा की पावन धारा
लोन नदी अरू सई नदी ने, बनाया प्रदेश को है अति न्यारा
श्री संकठा अम्बिका चन्द्रिका की, सिद्ध पीठें सदा हरती दु:ख सारा।
सजाया विधाता ने इसको, प्यारा यही बैसवारा हमारा ॥

व्यंग्य- गीत

आजादी है, आ रे आ।
मैं भी खाऊँ, तू भी खा
खाने का ऐसा किस्सा, मुझको दे मेरा हिस्सा।
जनता करती है गुस्सा, आ! जनता को दे घिस्सा ॥
खाने का है अलग मजा, मैं भी खाऊं तू भी खा।
मिट्टी, गिट्टी चारा खा! अंश नहीं, तू सारा खा ॥
खट्टा, मीठा, खारा खा! सूरज चाँद, सितारा खा।
ये रिश्वत है ओ भैया, मैं भी खाऊँ तू भी खा।
सड़कें मेरी, तू पुल खा! युनिवर्सिटी- गुरुकुल खा।
कुछ जल्दी कुछ ढुलमुल खा, बंद नहीं रे, खुल-खुल खा ॥
आजादी है मत घबरा, मैं भी खाऊँ तू भी खा।
तेरी है आदत जैसी ! मेरी भी है फितरत वैसी।
खाने में लज्जा कैसी? सबकी कर ऐसी तैसी।
बैठा बैठा बीन बजा, मैं भी खाऊँ तू भी खा।
खाने में क्या घबराता? जो पकड़े वो भी खाता।
घूस- कमीशन का भ्राता! चोली-दामन का नाता।
इस नाते को कर ताजा, मैं भी खाऊँ तू भी खा।
निविदा की रेटिंग में खा! प्रिंटिग की सेटिंग में खा।
आरक्षण- वेटिंग में खा! फिक्सिंग कर वैटिंग में खा।
आजादी का मतलब क्या, मैं भी खाऊँ तू भी खा।

आजीदी है आ रे आ।
मैं भी खाऊँ तू भी खा।
और अन्त में।
धरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे।
बागों के माली, चमन बेच देंगे।
वतन के अजीजों, सोये रहे अगर तुम।
तो वतन के मसीहा, वतन बेच देंगे।

कु0 रजनीश भारती
(हिन्दी विभाग)

चिन्तन के सूत्र

रावण को तपस्या का अहंकार था।
आज हमारा अहंकार ही तपस्या है।।

शबरी के जठन में ही प्रेम था।
आज हमारे प्रेम में ही जूठन है।।

जटायु की लड़ाई में धर्म था।
आज हमारे धर्म में ही लड़ाई है।।

उर्मिला के मौन में कर्तव्य था।
आज हम कर्तव्य के प्रति मौन हैं।।

शब्द अंगार होता है।
शब्द श्रृंगार होता है।।

शब्द पुरस्कार होता है।
शब्द तिरस्कार होता है।।

शब्द की साधना में
ईश्वर से साक्षात्कार होता है।।

कु0 रजनीश भारती
(हिन्दी विभाग)

●●

युद्धम् शरणं गच्छामि (हास्य व्यंग्य)

कु0 रजनीश भारती

(हिन्दी विभाग)

बात बहुत छोटी थी श्रीमान्
विज्ञापन था
पहलवान छाप बीड़ी
और हमारे मुँह से निकल गया
बीड़ी छाप पहलवान!
बस
हमारे पहलवान पड़ोसी
ताव खा गये
ताल ठोंककर मैदान में आ गये
एक झापड़
हमारे गाल पर लगाया
हमें गुस्से के बजाए
महात्मा गाँधी का ख्याल आया
हमने दूसरा गाल
पहलवान के सामने पेश
कर दिया
मगर वो शायद
नाथूराम गोड़से का भक्त था
उसने दूसरे गाल पर भी
धर दिया
फिर मुस्करा कर बोला
एकाध और खाओगे?
लेकिन ये तो बताओ बेटा
तीसरा गाल कहाँ से लाओगे
हमने कहा-
पहलवान जी
आपकी इस अपृत्याशित कार्यवाही ने
हमें बड़े संकट में डाल दिया है
गाँधी जी ने
ये तो कहा था
कि कोई एक गाल पर मारे
तो दूसरा लेकर आगे बढ़ना
परन्तु जल्दबाजी में
वे ये बताना भूल गये
कि तुम जैसा कोई पहलवान पल्ले
पड़ जाये
जो फिर क्या करना।
इसलिये हे पहलवान जी
आप जरा पांच मिनट
यहीं ठहरना
मैं अभी उनकी
आत्मकथा पूरी पढ़कर आता हूँ
शायद उसमें आगे कुछ लिखा हो,
कह कर हम
पी.टी. उषा की गति से
घर में घुसे
पहलवान के साथ-साथ
सारे मुहल्लेवाले
हमारी दुर्दशा पर हँसे
लेकिन ठीक पन्द्रह मिनट बाद
जब हम
अपनेघर के बार निकले
तो हमारे बाँए हाथ में बन्दूक
और दाँये हाथ में
रिवाल्वर था
रिवाल्वार का निशाना
पहलवान की छाती पर था
रिवाल्वर देखते ही
पहलवान हकलाने लगे
बोल.....
ये...ये...क्या
त...त...तुम..तो
म..म...महात्मा गाँधी के
भ..भ...भक्त हो
हमने कहा...
हूँ नहीं था।
लेकिन अभी-अभी
पन्द्रह मिनट पहले
मैंने उनकी पार्टी से
इस्तीफा देकर
चन्द्रशेखर आजाद की पार्टी
ज्वाइन कर ली है।
पूरी रिवाल्वर
गोलियों से भर ली है
अब बोलो बेटा पहलवान
पहलवान छाप बीड़ी
या बीड़ी छाप पहलवान?
पहलवान बोल-
हे..हे..हैं....
जैसा आप ठीक समझें
श्रीमान्
श्रीमान् के बच्चे
साले, गुण्डे, लफंगे, लुच्चे,
अहिंसा वादियों को डराता है
महात्मा गाँधी के भक्तों
का मजाक उड़ाता है
खबरदार!
आगे से पहलवानी दिखाई
तो हाथ पैर तोड़कर अखाड़े में डाल
दूँगा
इसी रिवाल्वर से खोपड़ी फोड़ दूँगा
मुहल्ले वालो!
आगे से कसम खा लो
आज से कोई इस पिद्दी
पहलवान की
दादागीरी नहीं सहेगा
इस देश में
अगर अहिंसा वादी नहीं रह पाया
तो कोई आतंक वादी भी नहीं
रहेगा।

●●

हिन्दी को सक्षम बनाना होगा

हमारा काम क्या ?
हवा के खेत में शब्दों के बीज बो जाना।
हमारा प्राप्त क्या ?
उन बीजों से हजारों फूलों का खिल जाना ॥

हिन्दी के साथ आज अस्तित्व का कोई संकट नहीं है, क्योंकि भारत में वह करोड़ों की मातृभाषा तथा विश्व में करोड़ों की अनुराग भाषा है। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी का प्रचलन है तथा वहाँ के प्रवासी भारतीय उसकी सुरक्षा तथा प्रतिष्ठा के लिए सजग व सचेष्ट हैं।

विश्व की भाषाओं के सर्वेक्षण यह बताते हैं कि प्रधान यूरोपीय भाषाओं अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, पुर्तगाली तथा स्पेनिश में अंग्रेजी जर्मन तथा फ्रांसीसी भाषाओं के बोलने वालो के प्रतिशत में पिछले तीन दशकों में निरन्तर गिरावट आई है जबकि पुर्तगाली तथा स्पेनिश बोलने वालों के प्रतिशत में वृद्धि हुयी है। इसी प्रकार विश्व की प्रधान भाषाओं में अंग्रेजी, मेंडरिन तथा रूसी भाषा के बोलने वालो के प्रतिशत में गिरावट आई, जबकि अरबी तथा हिन्दी बोलने वालों का प्रतिशत बढ़ा है। यद्यपि ये आंकड़े इन अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं के महत्व को कम नहीं करते, पर स्पेनिश, पुर्तगाली, अरबी तथा हिन्दी के बढ़ते हुये अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के साक्ष्य अवश्य हैं। अरबी तथा हिन्दी भाषा की व्यावसायिक तथा व्यावहारिक उपयोगिता है। भारत में हर प्रान्त की अपनी-अपनी भाषा है किन्तु पूरे राष्ट्र की संवाद भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी न केवल संख्याबल वरन् भू-विस्तार की दृष्टि से भी विश्व की प्रधान भाषाओं में से एक है तथा इसके बोलने वालों की संख्या विश्व में 100 करोड़ बताई गई है तथा इसके बोलने वाले भारत के बाहर नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, बर्मा, फीजी, मौरिशस, सूरीनाम तथा दक्षिण अफ्रीका में ऐसे लाखों प्रवासी भारतीय हैं जो इन देशों के स्थाई नागरिक हैं और मातृभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं।

''जहाँ भी सुनो वही आवाज है
भारतवासी में आज भी मातृभाषा का स्वराज है।''

हिन्दी विश्व भाषा बन सके, यह व्यापार तथा अर्थ जगत की भाषा बन सके, सूचना क्रान्ति में वह अन्य महत्वपूर्ण विश्व भाषाओं के समकक्ष खड़ी हो सके, इसके लिये हिन्दी को अधिक सक्षम बनाना होगा, विश्वव्यापीकरण के इस युग में जब देशों की भौगोलिक दूरियाँ सिमटती जा रही हैं। समय और गति का महत्व बढ़ता जा रहा है, बाजार भाषा मूल्य तय करने का मापक बन

गया है हिन्दी के सामने कई चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिये आवश्यक है कि हम वास्तविक स्थिति और अपनी कमियाँ समझें, हमें लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान हो, लक्ष्य प्राप्ति की योजनायें बनें, ईमानदारी तथा दृढ़ता से योजनाओं को क्रियान्वित किया जाये तथा समय-समय पर हमारी प्रगति का मूल्यांकन हो।

वीरता जहाँ पर नहीं, पुण्य का क्षय है
वीरता जहाँ पर नहीं, स्वार्थ की जय है
हो जहाँ कहीं भी अन्याय, उसे रोको रे
जो करे पाप शशि सूर्य उन्हें रोको रे।।

प्रशिक्षण हिन्दी माध्यम से होना चाहिये

भारत सरकार के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के सभी प्रकार के प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सभी प्रशिक्षण हिन्दी माध्यम से होने चाहिए। हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण लेने के बाद उनके लिये मूल रूप से हिन्दी में ही काम करना सुविधाजनक हो। यह व्यवस्था तुरन्त लागू की जानी चाहिये, यदि इन प्रशिक्षण संस्थानों में आने वाले कुछ कर्मचारियों को हिन्दी का आपेक्षित स्तर का ज्ञान न हो तो उन्हें हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भेजा जाये। राष्ट्रपति द्वारा यह सिफारिश सिद्धान्त रूप से मान ली गई और राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किये जाने वाले हिन्दी प्रणाली प्रयोग सम्बन्धी वार्षिक कार्यक्रम ये भी निर्देश दिये गये हैं। अधिकारियों को शुरू से ही हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण उनके सेवाकाल में हिन्दी में कार्य करने के लिये निःसन्देह उपयोगी होगा और जिसे कठिनाई में वे अधिकारी और कर्मचारी अनुभव करते हैं। जिनकी भर्ती परीक्षाओं और तत्पश्चात् प्रशिक्षण का माध्यम अंग्रेजी रहा है उससे भावी पीढ़ी मुक्त होगी।

कु0 रजनीश भारती
(हिन्दी विभाग)

●●

अंग्रेजी विश्व-भाषा नहीं

कु0 इन्द्रेश भारती

अंग्रेजी प्रेमी कहते हैं कि यदि हिन्दुस्तान से अंग्रेजी चली गई तो सारी दुनिया से भारत का सम्पर्क टूट जायेगा। अंग्रेजी ऐसी खिड़की है जिससे झाँककर भारत दुनियाँ की तरफ देखता है। अंग्रेजी विश्व-भाषा है। अंग्रेजी को हटाने वाले लोग भारत को एक संकुचित देश बना देंगे।

इस प्रकार तर्क वही लोग देते हैं, जिन्होंने इंग्लैण्ड और अमेरिका के अलावा कोई दूसरा देश देखा तक नहीं है या अपने जीवन में अंग्रेजी के अलावा कोई भी अन्य विदेशी भाषा पढ़ी तक नहीं है। बेचारे कुएं के मेंढक की दुनियां आखिर कितनी बड़ी होगी? कुएं से बाहर निकले तो दुनिया का कुछ पता भी चले। हिन्दुस्तान का एक औसत पढ़ा-लिखा आदमी अंग्रेजी तालीम की देन है। पिछले दो सौ साल से वह अंग्रेजी के कुएं से टर्रा रहा है। उसे पता नहीं कि इस कुएं के बाहर फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, चीनी, जापानी और फारसी आदि भाषाओं की एक समृद्ध और रंग-बिरंगी दुनिया भी बसी हुयी है।

अंग्रेजी के प्रति एकांगी का परिणाम यह हुआ कि भारत अपने पुराने मालिक इंग्लैण्ड से और उसके नये उत्तराधिकारी अमेरिका से 1 एक पिछलग्गू की हैसियत में काफी अच्छी तरह से जुड़ गया लेकिन बाकी दुनिया से उसके सीधे रिश्ते कायम नहीं हो पाये। अंग्रेजी के कुछ पुराने गुलाम देशों जैसे पाकिस्तान, बर्मा, लंका, घाना आदि जैसे अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि को छोड़कर दुनिया के किसी भी देश में अंग्रेजी का इस्तेमाल नहीं होता और पुराने गुलाम देशों में भी अंग्रेजी का इस्तेमाल सिर्फ नौकरशाह और अंग्रेजी तालीम याफ्ता लेकर करते हैं उनकी संख्या प्रायः 2 प्रतिशत से भी कम होती है। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी को विश्व-भाषा कहना तथ्यों को झुठलाना है।

''हम सपने अपनी मातृभाषा में
देखते हैं उन सपनों के माध्यम
से ही हमारी कल्पना शक्ति
विकसित होती है''

- दिनकर

अंग्रेजी को विश्व-भाषा मान लेने का दुष्परिणाम यह हुआ कि दुनियाँ के हर देश के साथ हम अंग्रेजी में व्यवहार करते हैं, चाहे उसकी भाषा जर्मन हो, रूसी हो, चीनी हो या फारसी। हर रोग का हमारे पास एक ही इलाज है, जमाल-गोटा। इसी का नतीजा है कि श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित जब राजदूत का पद ग्रहण करने रूस गई जो उनके

अंग्रेजी में लिखे परिचय पत्र को स्तालिन ने उठाकर फेंक दिया और पूछा कि क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है?

इसी का परिणाम है कि जिन देशों में हमारे राजदूतों को नियुक्त किया जाता है, वे उन देशों की भाषा नहीं सीखते और अंग्रेजी में काम चलाने की असफल कोशिश करते रहते हैं उस देश के राजनीतिज्ञ क्या सोचते हैं उस देश की जनता का विचार प्रवाह किधर जा रहा है, उस देश के अखबार क्या लिख रहे हैं, यह हमारे राजदूतों को तभी पता चल सकता है जब वे स्थानीय भाषाऐं जानते हों

''जहाँ भाषायी साम्राज्यवाद अपना
वर्चस्व बढ़ाने हेतु भाषाओं को
मारने का षड़यंत्र करता है, वहीं
स्वयं अपनी भाषा-भाषियों की
उपेक्षा भी एक जीवित भाषा को
मरने को मजबूर कर देती है''

- दिनकर

प्रायः होता यह है या तो वे दुभाषिये के जरिये सूचनाऐं और गुप्त जानकारी एकत्र करते हैं या तब तक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं जब तक कि लन्दन और न्यूयार्क के अंग्रेजी अखबार उन्हें पढ़ने को न मिलें। घटना हंगेरी और चेकोस्लावाकिया में घटे, उनकी आँख के सामने घटें औ बुदापेस्त और प्राहा में बैठे हमारे राजदूत उन घटनाओं पर तब तक अपनी रपट नई दिल्ली नहीं भेजते जब तक कि उन्हें लन्दनियाँ विवरण प्राप्त नहीं होता इससे बढ़कर विडम्बना और क्या होगी।

ऐसा इसलिये होता है कि वे भाषायी तौर पर अपाहिज हैं। वे अंग्रजी की बैशाखी के सहारे चलते हैं। नकली बैशाखी असली पैरों से भी अधिक प्यारी हो गई है। जो कौम बैशाखियों पर चलती है, हजार साल की यात्रा क बाद भी स्वयं को उसी स्थान पर खड़ा हुआ पाती है, जहाँ से उसने पहला कदम उठाया था।

अंग्रेजी को विश्व-भाषा मानने के भ्रम में होने के कारण हमारे देश के बौद्धिकों को दुनियां में क्या चल रहा है, इसका पता बहुत देर से लगता है। और कभी-कभी गलत ढंग से पता चलता है। उसका कारण हमारा अंग्रेजी पर निर्भर रहना है। अमरीका में यदि कोई क्रांति होती है तो उसे हम लीबिया या क्यूबा से निकलने वाले हिस्पानी अखबारों के द्वारा नहीं जानते बल्कि अंग्रेजी भाषा के पत्रों और पत्रिकाओं द्वारा जानते हैं। जब तक अंग्रेजी अखबार उन घटनाओं की रपट नहीं छापे, हम अज्ञान रहने के लिये विवश हैं। क्योंकि अंग्रेजी के चक्कर में हिन्दुस्तान का आदमी हिस्पानी या चीनी भाषा तो सीखता नहीं है। इसके अलावा जब लातीनी अमरीका या किसी अन्य देश की खबर छापता है तो उसे अपने हित के मुताबिक उसे तोड़ता मरोड़ता है।

चीन के बारे में हमारे देश में बहुत-सी गलतफहमियाँ क्यों फैली? इसी कारण कि हम चीनी अखबार और पत्रिकाऐं जो पड़ते नहीं, हाँ चीन के बारे में लन्दन और न्यूयार्क के अखबार जो कुछ छापते हैं, उसे हम ज्यों का तयों निगल जाते हैं। अंग्रेजी के एकाधिकार के कारण सारी दुनियां को हमें अमरीकी या ब्रिटिश चश्मा चढ़ाकर देखना पड़ता है। हमारी अपनी स्वतन्त्र और निष्पक्ष राय किसी भी मामले पर बन नहीं पाती। जब दुनियां के देशों के बारे में मिलने वाली हमारी मूलभूत सूचनाऐं ही रंगी-पुती होती हैं तो हम एक साफ-सुथरी विदेशी नीति कैसे बना सकते हैं?

अंग्रेजी को विश्व- भाषा मानने का एक नतीजा यह भी होता है कि हम यह समझ लेते हैं कि दुनियाँ का सारा ज्ञान अंग्रेजी में है जबकि कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें दुनियाँ की अन्य भाषाओं में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य हुये हैं, अनुसंधान हुये हैं हम उन सबसे या तो वंचित रह जाते हैं या उन्हें अंग्रेजी अनुवाद के जरिये ही पढ़ते हैं। आज विज्ञान की जितनी पुस्तकें ९०सी भाषा में हैं, दुनियाँ की किसी भाषा में नहीं है। जर्मन भाषा में जितने ऊँचे स्तर के दार्शनिक हुए हैं- कान्ट, हीगल, मार्क्स जैसे- अंग्रेजी भाषा में हुये।

दुनियाँ के बड़े-बड़े अखबार जापानी और ९०सी भाषा में निकलते हैं- असाई शिम्बन और प्रावदा, न कि अंग्रेजी में कला, संगीत, चित्रकारी, पुरातत्व आदि विषयों पर आज भी फ्रान्सीसी भाषा में जितना गहन और प्रचुर साहित्य है उसकी तुलना में अंग्रेजी साहित्य के पासंग के बराबर भी नहीं है।

दुनियाँ का सारा ज्ञान, साहस, शौर्य प्रतिभा सब कुछ अंग्रेजी में है, ऐसा सोचने वाला दिमाग है। वह विश्व-स्तर पर सोचने वाला दिमाग बन ही नहीं सकता।

●●

मानवाधिकार और वैश्वीकरण

डा. आदित्य कुमार गुप्ता
असि. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

आज सम्पूर्ण मानवता संकट के दौर से गुजर रही है और ऐसा लगने लगा है कि अब उसका अस्तित्व ही समाप्त होने वाला है। इस पतनशील मानवता को बचाने के लिये मानवों में नयी चेतना का विकास करना आवश्यक है। श्रेष्ठता और हीनता की भावना मानव समाज के नस-नस में व्याप्त है। मानव समाज को यह समझाना आवश्यक हो गया है कि प्रकृति दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं- प्रकृति ने मानव के विकास के लिये समान अवसर प्रदान किये हैं, उनका सदुपयोग तभी संभव है, जब प्रत्येक मनुष्य अपने विकास के साथ-साथ दूसरों के विकास में भी भागीदार बने, न कि दूसरों के विकस में बाधक।

मानवाधिकार की अर्थव्याप्ति को लेकर कई तरह के विवाद हैं, फिर भी सामान्यतः हम कह सकते हैं कि मानवाधिकारों का अभिप्राय उन नैतिक अधिकारों से है, जिनके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं रह जाता और जिनसे युक्त हो कर ही वह अन्य प्राणियों से भिन्न होता है।

वर्तमान विश्व में प्रत्येक मनुष्य को जीवन के विकास से संबंधित महत्वपूर्ण मौलिक अधिकारों को दिये जाने की बात की जाती रही है। इस दिशा में कदम उठाते हुए लगभग सभी प्रमुख लोकतांत्रिक देशों ने अपने लिखित अथवा अलिखित संविधान के माध्यम से अपने नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किये।

विश्व स्तर पर मानवाधिकारों के तहत जिन अधिकारों पर आम सहमति बनी है, उन्हें इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है-जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, विश्वास और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, संघ अथवा समूह के निर्माण का अधिकार, संपत्ति का अधिकार और सामाजिक एवं आर्थिक अधिकार।

आधुनिक काल में मानवाधिकार की बात सर्वप्रथम ठोस रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में उसकी स्थापना के तीन वर्ष बाद रखी गयी। 10 दिसम्बर 1948 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सार्वभौमिक मानवाधिकारों की घोषणा के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान कर दी। संयुक्त राष्ट्र संघ के इस कदम से मानवाधिकारों को बल मिला और 1950 में महासभा ने यह निर्णय लिया कि अब से 10 दिसम्बर को प्रतिवर्ष ''मानवाधिकार दिवस'' के रूप में मनाया जायेगा।

मानवाधिकारों का सुनिश्चयन तब तक संभव नहीं, जब तक कि पूरा विश्व इसके महत्व से परिचित हो कर इस दिशा में प्रयत्नशील न हो। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार के मुद्दे को मानवीय अधिक एवं राजनीतिक कम बनाने का प्रयत्न करना चाहिये, साथ ही मानवाधिकार के शाश्वत महत्व को समझते हुए उस दिशा में प्रयत्नशील अवश्य रहना चाहिये।

●●

खेलों में प्रदर्शन के गिरावट के कारण

प्रो. रनवीर सिंह
विभागाध्यक्ष
शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद

स्कूल से लेकर कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर खेल को किस तरह से बच्चों से जोड़ा जाय, इसके प्रति कोई खास दिलचस्पी दिखाई नहीं देती। एक बच्चे में खेल के प्रति रुझाना पैदा करने वाली परिस्थिति तो पैदा करने की दूर की बात है, जो बच्चे खेल को अपनी पहली पसन्द बनाना चाहते हैं उन्हें भी पहली लड़ाई घर से ही लड़नी पड़ती है। परीक्षा से ठीक पहले यदि किसी चीज पर पाबंदी लगती है तो वह खेल ही है। बच्चों को खेल से महरूम करने का तात्पर्य-स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क के बारे में मान्यता को नकारना है। प्रयोगों एवं अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि खेलने से न केवल बच्चों का शारीरिक मानसिक एवं संवेदात्मक विकास होता है बल्कि खेल के जरिये बच्चे समूह में काम करने की कला भी सीखते हैं। बच्चों में आपसी निर्णय लेने से लेकर समूह में काम करने की समझ भी विकसित होती है। लेकिन दुर्भाग्य से आज बच्चों के खेल, खेल का समय, तकनीकि आधारित खेलों तक सिमट कर रह गयेहै। बच्चों को खेल से दूर करने की पहल घर से ही होती है। जो आगे चल कर समाज में दिखाई देती है। इस पूरी प्रक्रिया में अन्ततः बच्चों को हारकर खेल की इच्छा का न केवल गला घोटना पड़ता है बल्कि घर पर वीडियो गेम खेलने का सुख उठाना पड़ता है।

आज हमारे देश में एक अरब से ज्यादा लोग रहने के वाबजूद भी भारत का अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में सबसे नीचे रेंक होता है। सन् 2012 में लन्दन ओलम्पिक में मात्र छः पदक से ही संतोष करना पड़ा। जबकि छोटे-छोटे गरीब देश जैसे-कीनिया, इथोपिया, सोमालिया आदि के प्रदर्शन के मुकाबले में हमारे देश का प्रदर्शन शर्मनाक है। हमारे देश के गिरते हुए खेल प्रदर्शन के कारण निम्नलिखित हैं—

1. जिला स्तरीय खेलकूद का प्रबन्धन प्रधानाचार्य, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिलाधिकारी या वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक करता है। प्रदेश स्तरीय खेलकूद का आयोजन राज नेताओं द्वारा संचालित होता है। यहाँ तक राष्ट्रीय स्तर पर भी फेडरेशन के मुखिया ब्यूरोक्रेट्स या बिजनिसमैन होता है। जो इन ब्यौरों से साफ हो जाता है—

भारतीय खेल संघ	राजनीतिज्ञ/ब्यूरोक्रेट्स/बिजनिसमैन
1. हॉकी	आर. के. सेठी
2. फुटबॉल	प्रफुल्ल पटेल
3. एथलेटिक्स	आदिल जे. सुमरीबाल
4. जूडो	मुकेश कुमार
5. कुबड्डी	मृदुल भदौरिया
6. कुश्ती	ब्रज भूषण शरण सिंह
7. निशानेबाजी	रवीन्द्र सिंह
8. क्रिकेट	एन. श्रीनिवासन

ये नॉन स्पोर्ट्स मैन, नॉन प्रोफेशनल तथा स्वयं खेलों से दूर रहने वाले लोग हैं। इन लोगों में कोई खेल प्रतिभा नहीं है।

2. राष्ट्रीय स्पोर्ट्स संघ प्रभावी लोगों के नियंत्रण में नहीं है। उपरोक्त लोगों की न खेल पृष्ठ भूमि है और न खेल प्रबन्धन में कोई प्रोफेशनल डिग्री उनके पास है। वे नहीं चाहते कि खेलों को बढ़ावा मिले, परन्तु विदेश यात्रा, सुन्दर स्थान देखना तथा सरकारी खर्च पर खरीद्दारी आदि ही उनका मुख्य उद्देश्य है। इस सरकारी खेल फण्ड का दुरुपयोग या बर्बादी पर अफसोस होता है।

3. सरकार को गलत सूचना देकर झूठे दावों वाली बहुत सी टीमें एवं व्यक्ति क्लियर करवा दिये जाते हैं। टीमों का खराब प्रदर्शन होता है, क्वालीफाइड मानक तक भी खिलाड़ी प्रदर्शन नहीं कर पाता है। चयन ट्रायल में निम्न प्रदर्शन वाले खिलाड़ियों का चयन केवल क्षेत्रवाद या जातिवाद के आधार पर कर लिया जाता है। जिसके चलते अच्छे खिलाड़ियों का टीम में चयन नहीं हो पाता है।

4. शारीरिक शिक्षा में खेलों को शैक्षणिक संस्थानों में सही स्थान नहीं दिया जाता है। कॉलेजों में अच्छे छात्र एवं छात्राओं को खेल के मैदान में अपना हुनर साबित करने का मौका नहीं दिया जाता है। उनकी प्रतिभा बर्बाद चली जाती है। यदि बच्चों को अपनी मन पसंद खेल में हिस्सा लेने का मौका दिया जाय तो गेम्स एण्ड स्पोर्टस में आने वाला प्रत्येक बच्चा तो चैम्पियन नहीं बनेगा किन्तु वह बेहतर नागरिक जरूर बनेगा।

5. शारीरिक शिक्षा के अध्यापकों का योगदान बहुत कम है। खुद अध्यापक कॉलेज में शारीरिक शिक्षा अनिवार्य विषय होने पर भी बच्चों को अन्य विषयों का ज्ञान देते हैं। खेल प्रतियोगिताओं में खेल का मैदान छोटा करके, खेल के समय को कम करके या नियम के विरुद्ध खेल को खिलाते हैं।

6. शारीरिक शिक्षा संस्थान जो सी.पी.एड., डी.पी. एड., बी.पी.एड., बी.पी.ई. तथा एम.पी.एड. स्तर के प्रोफेशनल कोर्स कराने वाले पैसा कमाने की दुकानें बनकर रह गई हैं। जो छात्र अच्छी रकम देता है प्रवेश पा लेता है तथा अच्छे अंक लेकर शारीरिक शिक्षा की डिग्री हासिल कर लेता है। ये अधिकतर सस्ते संस्थानों से फर्जी प्रतिशत वाले शारीरिक शिक्षक प्रोफेशनल शारीरिक शिक्षकों को बदनाम करते हैं।

7. आम आदमी तथा माता-पिता/अभिभावक एवं अन्य शिक्षक खेलों के मूल्य से परिचित नहीं हैं। वे यह समझते हैं कि खेल खेलना, समय, ऊर्जा और पैसे की बर्बादी है। बहुत पुराना नारा है—

''पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे खराब।''

लोगों के सोचने का ढ़ंग आज भी ऐसा ही है। मात-पिता बच्चों को खेल कूद के लिए प्रोत्साहित नहीं करते। उनका उद्देश्य स्कूल की पढ़ाई या ट्यूशन में बच्चों को लगाये रखना है। इससे युवकों के साथ धोखा हो रहा है। अच्छे सेहत एवं शारीरिक मुद्रा की कीमत बच्चों की बहुत पढ़ाई से देश अनफिट और बीमार हो जाता है।

8. जबसे खेलों में व्यवसायीकरण, सट्टेबाजी, मैच फिक्सिंग होने लगा है, तब से स्पोर्टस मैन की खेल की ऊँची भावना नष्ट होती जा रही है क्योंकि स्कूल, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में भी जीत की भावना प्रबल होती जा रही है। गलत खेल, फर्जी खिलाड़ी, जानबूझकर मैचों में हारना, आयोग्य खिलाड़ियों को फील्ड में भेजना, रेफरी/एम्पायरों को रिश्वत देना, डोपिंग का प्रयोग तथा ऐसे गलत साधनों से जीतने की कोशिश रहती है। जिससे खिलाड़ियों का प्रदर्शन दिन पर दिन गिरता जा रहा है।

9. खेलों के प्रचार-प्रसार में मीडिया का भेदभाव पूर्ण रवैया है। अफसोस यह है कि हमारा मीडिया क्रिकेट्स एव कुछ विशिष्ठ खेलों पर सारा फोकस रखते हैं। अन्य खेलों को वे नजर अंदाज करते हैं। जिसमें राष्ट्रीय खेल हॉकी भी शामिल है। क्रिकेट खेल को ज्यादा लोकप्रिय बनाकर प्रेस ने इतना मशहूर बना दिया है कि सुदूर गाँवों की गलियों में बच्चे दिनभर क्रिकेट खेलते मिल जायेंगे। मीडिया ऐसे खेलों को नजर अंदाज कर रही है, जो जनप्रिय हैं। जैसे:- फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, खो-खो, कुश्ती, एथलेटिक्स।

परन्तु मुख्य बात यह है कि मीडिया में हरेक खेल को बराबर प्रचार मिलना चाहिए। भारतीय हॉकी जो राष्टीय खेल हैं। क्रिकेट खेल से कहीं अच्छे है। भारत हॉकी में आठ बार ओलम्पिक चैम्पियन रह चुका है। परन्तु हमारी क्रिकेट टीम ने सिर्फ सन् 1983 एवं 2011 में दो बार विश्वकप तथा सन् 2007 में पहली ट्वन्टी-ट्वन्टी विश्वकप जीता है। क्रिकेट मात्र 14 देशों में खेला जाता है और हमारी गिनती सबसे बढ़िया में नहीं होती जबकि हॉकी साठ देशों में खेली जाती है। और हमारा रैंक सबसे बढ़िया आठ देशों में होती है। सरकार तथा मीडिया को प्रत्येक खेल के प्रति बराबर ध्यान देना चाहिए। ताकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी खेल चमक सकें। सन् 2007 में ट्वन्टी-ट्वन्टी विश्व कप भारत ने जीता तो कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी को झारखण्ड सरकार 5 लाख रुपये नकद, एक पैट्रोल पम्प तथा एक फ्लैट राँची में बना हुआ, और प्रत्येक खिालड़ी को भारत सरकार द्वारा बहुत सारे रुपये दिये गये। उनके देश वापसी पर हवाई अड्डा पर जोरदार स्वागत किया गया। लाखों की भीड़ थी। वहीं दो दिन बाद विश्व शतरंज चैम्पियन 2007 जीतकर आये। शतरंज के शरताज विश्वनाथन आनन्द को देश वापसी पर केवल उनकी पत्नी हवाई-अड्डे पर उनके स्वागत के लिए अकेले खड़ी थीं।

खेल प्रदर्शन की गिरावट के और भी अन्य कारण हैं जैसे:- खिलाड़ियों के पास पैसे की कभी, सांतुलित भोजन अधिक मात्रा में नहीं मिलना, खेल के क्षेत्र में सही दिशा निर्देशन का अभाव, महिला खिलाड़ियों को घर से छूट नहीं मिलना तथा महिला खिलाड़ियों को कम उम्र में शादी करने के लिए अभिभावकों का दबाव बनाना हैं। कोच तथा प्रशिक्षक का महिला खिलाड़ियों के साथ अभद्र व्यवहार अपनाना आदि। शैक्षणिक संस्थाओं का महत्व अहंकार एवं घमंड के लिए दूसरे क्षेत्रों के खिलाड़ियों को पैसे से खरीद कर अपने विद्यालय से खेलाना। जो खिलाड़ी पढ़ाई छोड़ देते हैं या पास होने के बाद कुंठित हो जाते हैं तथा उन सभी खिलाड़ियों को सही दिशा निर्देशन देने वाला नहीं मिलता है। खिलाड़ियों में नशा, शराब लेने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। ये सभी भारतीय खेल के प्रदर्शन को गिराने में सहायक हैं।

●●

हँसते हँसते जीना

एक अमेरिकन ने एक भारतीय बच्चे से पूछा 'तुम्हारी उम्र क्या है'
बच्चे ने जवाब दिया, 'घर में 13 साल'
स्कूल में 12 साल, बस में 9 साल,
ट्रेन में 7 साल और फेसबुक पर 18 साल।

चाँदेश्वर प्रसाद
एम.ए. प्रथम वर्ष अर्थशास्त्र

अच्छी नींद के लिए

(१) रात में हल्का भोजन करें। गर्म दूध का सेवन अच्छा रहता है टीवी व कम्प्यूटर से खुद को दूर रखें।
(२) रात में नींद पूरी न होने पर दोपहर में कुछ समय की झपकी लेना तनाव के दूर करता है व प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनता है।
(३) रात के समय चाय, कॉफी, चॉकलेट निकोटिन उत्प्रेरक तत्वों का सेवन करने से बचें।

गौरवमयी राष्ट्रभाषा अपमानित क्यों?

डॉ. शुभा दीक्षित
समाजशास्त्र

प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा होती है। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा है तथा वह स्वतन्त्र होने का दावा नहीं कर सकता। राष्ट्रभाषा ही राष्ट्र की आत्मा को शक्तिशाली बनाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया क्योंकि हिन्दी एक भारतीय भाषा है, अन्य प्रान्तीय भाषाओं की तुलना में सरल है, उसे समझने व बोलने वालों की संख्या देश में सर्वाधिक है। हिन्दी में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक सभी प्रकार के कार्य–व्यवहार की क्षमता है। हिन्दी राष्ट्रीयता के उत्थान की एकमात्र भाषा है।

संविधानुसार सभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहते हैं, किन्तु संविधान में लिखने मात्र से ही कोई भाषा राष्ट्र की भाषा कदापि नहीं बन सकती, जब तक कि उसे जन जन के कार्य व व्यवहार की भाषा न बनाया जाय। हिन्दी सैद्धान्तिक रूप से तो हमारी राष्ट्रभाषा है किन्तु उसे व्यवहारिक रूप में प्रयोग में लाने से हम भारतवासी हीन भावना के शिकार क्यूं हो जाते हैं? आखिर हम लोग कब अपने ही देश में अपनी ही भाषा को स्वीकार करने में हीनता का अनुभव करते रहेंगे।

आज हिन्दी सर्वत्र अपमानित होती हुई दीखती है। हिन्दी भाषा को नीची नजरों से देखा जाता है। आज हिन्दी की स्थिति एक दयनीय स्त्री की भाँति है। हिन्दी और अंग्रेजी आपस में सौतन है, जिसका पति हमारा राष्ट्र भारत है। भारत की पहली पत्नी हिन्दी व दूसरी पत्नी अंग्रेजी है और हम भारतवासी हिन्दी के पुत्र है, अर्थात् हिन्दी हमारी माँ है किंतु कितने दु:ख की बात है कि उसके अपने पुत्र अपनी सगी माँ के होते हुए सौतेली माँ को महत्व देते हैं। आज सर्वत्र अंग्रेजी की महत्ता को देखकर हिन्दी भाषियों का सिर शर्म से झुक जाता है। अभी हक हमारे देश की सरकार भी इस सन्दर्भ में दिशाहीन ही साबित हुई है। हमारी सरकार के मंत्री व राजनेता विदेशों में जाकर तो वे निश्चित रूप से अंग्रेजी बोलते है, किन्तु जब विदेशी मेहमान भारत में आते हैं तो वे उस समय भी अंग्रेजी बोलकर गर्व का अनुभव करते हैं। क्या हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी इतनी गिरी हुई है कि उसे अपने ही राष्ट्र में अनावृत किया जा रहा है। यह हमारी राष्ट्रभाषा का खुला मजाक व अपमान है जबकि दूसरी ओर विदेशी मेहमान भारत में आने पर भी अपनी ही राष्ट्रभाषा में बात करते हैं। शासन प्रशासन तथा आम जन की इस नीति ने राष्ट्रीय भावात्मक एकता को तोड़ दिया है, क्योंकि राष्ट्रीय भावात्मक एकता का आधार हिन्दी ही है। विदेशी वातावरण में पलित एवं विकसित अंग्रेजी नहीं। अंग्रेजी का यह पौधा हमारी संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक नहीं है। अत: अपने देश की चहुँमुखी उन्नति करने के लिए हमें हिन्दी को अपनाना ही होगा। अपनी राष्ट्रभाषा में ही हम उन्नत हो सकते हैं। जितने भी राष्ट्र हैं वे सभी चाहे कभी भी अविकसित व पिछड़े रहे हों. किन्तु उन्होंने अपनी ही भाषा में देश का विकास करना उचित समझा। जैसा कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने भी कहा है–

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।''

हिन्दी को अंग्रेजी से ऊँचा दर्जा दिलाने के लिए सबसे पहले हमें चाहिए कि हम अपने को कमजोर समझना छोड़ दें। हमारे बीच बहुत से लोग ऐसे है, जो कि हिन्दी प्रेमी हैं, किन्तु अपने को कमजोर समझकर समाज से अपनी आवाज नहीं उठा पातें और चुपचाप हीन भावना से ग्रसित होकर अंग्रेजी भाषियों की हित साधना में लगे रहते हैं। पं. जवाहर लाल नेहरु जी ने कहा था– '' हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के बारे में मतभेद होता तो एक बार समझ में आ सकता है, परन्तु किसी भी भारतवासी के लिए विदेशी दासता व मनोवृत्ति की प्रतीक अंग्रेजी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थन की

बात मेरी समझ में नहीं आती। क्या उनके स्वाभिमान व राष्ट्र गौरव की भावना इतनी मर चुकी है कि वे अपने दायित्त्वों को समझने में असमर्थ है?''।

सच में यह हमारे लिए अत्यन्त ही शर्मनाक बात है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित करने के बजाय उसे अपमान का प्रतीक समझते हैं। अंग्रेजी के इस पौधे को समूल नष्ट करने के लिए हम भारतवासियों का विशेषकर हिन्दी प्रेमियों का यह कर्त्तव्य है कि हम सभी उसका सम्मान करें। यदि हम सभी मिल कर हिन्दी को मन, वचन व कर्म से अपनायें तो वह दिन दूर नही जब हिन्दी भाषी सिर उठा के अंग्रेजी भाषियों के सामने गर्व से यह कह सकेंगे कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है वह हमारी माँ है अत: नमस्तस्यै। यद्यपि इस दिशा में वर्तमान भारत सरकार काफी प्रयास कर रही है किन्तु मात्र सरकार के प्रयास से ही हिन्दी को समादृत स्थान नहीं दिलाया जा सकता, बल्कि आज आवश्यकत इस बात की है कि इसमें जन भागीदारी हो, जन चेतना का संचार हो। अन्त में कवि दुष्यन्त की इन्हीं पंक्तियों को मैं उद्धृत करना चाहता हूँ–

हो चुकी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए ।।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना नहीं मकसद मेरा।
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिए।।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए.....

●●

रोने से किसी को भुलाया नहीं जाता

राकेश कुमार यादव
लैव असिस्टेंट

रोने से किसी को भुलाया नहीं जाता
खोने से किसी को भुलाया नहीं जाता,
वक्त सबको मिलता है
जिंदगी बदलने के लिये
पर जिंदगी नहीं मिलती
वक्त बदलने के लिए।

कर्म

जीवन एक दर्पण है, जो आपके कर्मों को दिखाता है जैसा आप बोते हैं, वैसा ही पाते हैं। यदि आप दूसरों को खुशियां देते हैं तो वे भी आपके चेहरे पर मुस्कान लाते हैं।

शहीद प्रार्थना

पुष्पेन्द्र सिहं
एम.ए हिन्दी

नित यादें ताजा रहती हैं, भारत के वीर जवानों की
भारत के अमर ससरतों, आजादी के दीवानों की
तुम सब तन-मन लड़े रहे,
सिर बाँध कफन तुम अड़े रहे।
करि मोह भंग सुधि बुधि भूली,
अपने-अपने खान्दानों की।
नित यादें ताजा.....
भारत के अमर.....
हिम्मत भर दी थी कण-कण में,
बिजली बन चमकी छड़-छड़ में।
पिस्तौल वमों की धमक-धमक,
जो छनक-छनक उन म्यानों की।
नित यादें ताजा.....
भारत के अमर.....
कोहराम मचा था नगर-नगर,
जनपद ग्रामों की डगर-डगर।
तभी अंग्रेजों की रूह हिली,
ललकारों से परवानों की।
नित यादें ताजा.....
भारत के अमर.....
तुम शहीद हो सब अमर भये,
इतिहास बनाकर कहाँ गये।
यह अनुपम कविता है उनसे,
इतिहासी तीर कमानों की।
नित यादें ताजा.....
भारत के अमर.....
मेरा दिल रोता भड़क-भड़क,
मैं ढूँढ रहा हूँ सड़क-सड़क।
कहने को अब लब्ज नहीं,
क्या बखान करूँ एहसानों की।
नित यादें ताजा.....
भारत के अमर.....

●●

दिमाग अपना न था फिर भी काम

दिमाग अपना था फिर भी काम करता था
जिनके कब्जे में था बस उनका काम करता था
मैं समझता था कि मैं सोच रहा हूं फिर भी
सोचता वह था फकत जिसका काम करता था
चंद टुकड़ेमिल, ओहदा मिला, पर हुक्म के साथ
हुक्म के दायरे में खुल कर काम करता था
जिस्म अपना था इल्म भी अपना था मगर
फैसला किस्मत, और किस्त का वही करता था

●●

सच में सचिन

चाँदेश्वर प्रसाद
एम०ए० प्रथम वर्ष (अर्थशास्त्र)

सच में सचिन तुम चीन की दीवार,
हिमालय की ऊँचाई मन की आंकाक्षाओं
और अपने कद से बड़े हो,
जितने तुम धरा पर हो,
उतने ही हर दिल की भावनाओं में,
बीज से अंकुरित होठों की मुस्कान हो,
अस्त्र-शस्त्र और सारी कूटनीति तब चुकी है
तलवार रूपी बल्ले के तले,
माना कि भारत रत्न देश के गौरव
का प्रतीक है,
किन्तु तुम तो माणिक रत्न मोती और पुखराज से भी परे हो,
क्योंकि भारत रत्न एक नहीं
अनेक व्यक्तियों को मिला है,
किंतु सचिन-सा रत्न तो
पूरे विश्व को एक ही मिला है।
शतायु हो सचिन,
मन-भर अभिनन्दन।।

●●

क्रिकेट वीर

चाँदेश्वर प्रसाद
एम.ए. प्रथम वर्ष अर्थशास्त्र

गम्भीर को घुमा दिया
सहवाग को सुला दिया
दीवार को दरका दिया
मास्टर मुरझा दिया
लक्ष्मण रेखा को लांघ दिया
धोनी को धो दिया
कोहली कुद दिया
अश्विन को अलसा दिया
जहीर समान दिया
इशांत का शांत किया
उमेश को मिला दिया

●●

2012 से 2015 तक उत्तर प्रदेश सरकार की योजना

(1) किसानों हेतु मुफ्त सिंचाई योजना-
किसानों ने नहरों तथा राजकीय नलकूपों से किसानों के लिए मिलने वाले पानी को आबपाशी शुल्क से मुफ्त कर दिया है।
(2) किसानों को उचित मूल्य- सरकार का हर सम्भव प्रयास है कि किसानों को उनकी उपज की उचित मूल्य प्राप्त हो।
(3) किसानों का ऋण माफी योजना।
(4) कामधेनु तथा मिनी कामधेनु योजना।
(5) कृषक दुर्घटना बीमा योजना।
(6) लोहिया ग्रामीण आवास योजना।
(7) डा0 राम मनोहर लोहिया समग्र विकास योजना।
(8) समाजवादी एम्बुलेन्स सेवा।
(9) सौर ऊर्जा।
(10) समाजवादी पेंशन योजना।
(11) निःशुल्क लैपटाप वितरण योजना।
(12) निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्धा।
(13) चिकित्सा शिक्षा।
(14) राजनैतिक पेंशन।
(15) युवाओं को विभिन्न व्यवसायों में रोजगार परक प्रशिक्षण निःशुल्क। ●●

अर्थ

सुमिलेश नन्दिनी
बी0 एड प्रथम

इच्छाशक्ति, संकल्प, इरादे, हौंसले
जैसे शब्दों के
अर्थ
नहीं मिलेंगे तुम्हें
भूले से भी
शब्दकोश में

अगर जानने हैं सचमुच तुम्हें
इन शब्दों के अर्थ
तो पढ़ना
आसमान के माथे पर
परकटों की उडानों की
लिखी सच्ची तहरीरें
'ऐ मेरे दोस्त'।

●●

एक दिन

अधेंरो से लड़ते लड़ते,
एक दिन बन जाऊँगा सूरज।
खोदते खोदते जमीन,
एक दिन बन जाऊँगा नदी।
फैलते फैलते एक दिन,
बन जाऊँगा आकाश।
और सोचते-सोचते एक दिन,
बन जाऊँगा आदमी।

●●

बस थोड़े और बहाने

खोल दे खिड़की ताजा हवा का झोंका अन्दर आने दे,
जाने कब से गुमसुम है घर अब इसको मुस्काने दे।
दोस्त मेरे ऐ फूल! तू तितली से जाकर ऐसा बोल,
आने दे गालों पे लाली थोड़ा सा शरमाने दे।
सौ-सौ तरकीबें उनसे मिलने को लड़ानी पड़ती हैं,
मेरे मौला मुझको तो बस थोड़े और बहाने दे।
घर-गृहस्थी में छोटी-मोटी बातें चलती रहतीं हैं,
रात गई सो बात गई अब तो गुस्से को जाने दे।
यायावर होना ही अगर मेरी किस्मत में लिक्खा है,
राह में रुकने भर को रब्बा मुझको नेक ठिकाने दे।

●●

जब चाँद गाता है

किशन कुमार सागर
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

खुशी के साथ थोड़ा सा उसे डर भी सताता है,
किसी दिन फूल तितली को डिनर पे जो बुलाता है।
शिकायत आसमा को है समंदर से फकत इतनी,
बिना टावल लपेटे क्यों वो बारिश में नहाता है।
कभी ऐसा भी होता है गजल आकाश लिखता है,
सितारे झूम उठते है उसे जब चाँद गाता है।
उदासी बेसबब कोई मुझे जब घेर लेती है,
मेरे होंठों पे बरबस ही तुम्हारा नाम आता है।
अगर दिन है यहाँ अब तो कहीं पर रात भी होगी,
नहीं सच सिर्फ उतना ही जो हमको नजर आता है।

●●

साबुत जिंदगी

साबुत जिंदगी चाही थी,
चंद कतरने हांथ आई है।
जब चाहा उन्हैं जोड़ना,

पैबंद लगी मिली जिंदगी।

हमने फिर भी सब्र कर,
जीनी चाही कतरा-कतरा जिंदगी।
पर जब एक झरोखा बंद किया,

तब दूसरे से घूरती दुनियां मिली।

लगता था कतरनों को समेटते,
झराखों को बंद करते।
पैबंदों को खिलते,

बीत गई जिंदगी।

पर अब बुरा नहीं लगता,
क्योंकि उन्हीं कतरनों को समेटते।
एक कतरन में तुम मिल थे,
और उसी एक कतरन में।

मैंने साबुत पा ली थी जिंदगी,

उसी कतरन को ओढ़।
मैंने सारे झरोखें बंद कर लिये,
अब नहीं घूरती दुनियाँ मुझे;
तुमने जो पूरी कर दी मेरी अधूरी जिंदगी।

●●

मनहूस श्रोता

हास्य रस सुनके भी टस से मस न हुआ,
सरस न लगी हो तुझको तो व्यंग भी तू कस दे।
धन नहीं माँगता सुमन नहीं माँगता मैं,
नहीं चाहता हूँ मुझे यश का कलश दे।
गा गा के मैंने सुनाई कविता तुझे भाई,
भूल हुई अब न सुनाऊँगा बकस दे।
घूस सा मुँह लिये हुये फूस सा पड़ा हुआ,
अरे मनहूस एक बार तो तू हंस दे।

किशन कुमार सागर
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

थोड़ी सी खुशियाँ बाँटे

बन्धन आज हटाके देखे, सब गाँठें खुल जाने दें।
जो भी मन के भीतर से आता है उसको आने दें।
चाँद अकेला गुमसुम बैठा जाने क्या सोचे है,
क्यों न इसको धरती पर कुछ देर टहल कर आने दें।
चिड़िया पिंजरे में कब से इक आस लगाये बैठी हैं,
आ उसके पिंजरे को खोलें और उसे उड़ जाने दें।
बिन मांगें ही सूरज हमको रोज नया कर जाता है,
हम भी थोड़ी खुशियाँ बाँटे जीवन को हँसाने दें।
कितना ज्यादा काम अकल से उनको लेना पड़ता है,
क्यों न बच्चो को पेपर में थोड़ी नकल लगाने दें।
सारे घर का चूल्हा-चौका रोज वही तो करती हैं,
छुट्टी के दिन व्रत या होटल उसको मौज मनाने दें।

सेवा

कविताऐं सुनाने के बाद
कवि ने कहा
मैं कविता के जरिये
साहित्य और समाज की
सेवा करना चाहता हूँ
बताइये मैं क्या करूँ ?
उत्तर मिला
आप ऐसी कविताऐं मत लिखिऐ
यह साहित्य सेवा है
और लिखी कविताऐं
किसी को न सुनाइऐ
यह समाज सेवा है।

किशन कुमार सागर
बी.एस-सी., प्रथम वष

गुरू वन्दना

आज नभ से हवनित होकर,
गूंजता स्वर क्यों नहीं माँ।
गूर्रू विष्णु, गुरू देवा,
गुर्रू साक्षात् परम ब्रह्मा।
अष्टावक्राचार्य ने ही मान गुरूओं का बचाया,
मात्र पल में मंत्र देकर गुरू महत्ता को बढ़ाया;
बस वही श्रंगारता, निज शिष्य की हर मग्न प्रतिमा।
सन्दीपन, द्रोण जैसे गुरू यहाँ होते रहे हैं,
कृष्ण, अर्जुन जैसे शिष्यों की फसल बोते रहे हैं,
आज गुरू और शिष्य की है, नहीं दिखती कहीं गरिमा,
एक ही कौटिलय ने था, उटज रह शासन चलाया।
आदि शंकराचार्य ने ही धर्म वैदिक था बचाया,
आज क्यों उसकी उपेक्षित हो रही है श्रेष्ठ महिमा।
कह गया कबिरा यही गोविन्द से समता न कोई,
और है इतिहास साक्षी नहीं गुरू से बड़ा कोई।
है वही कल्याण कर्ता और वह है विश्वकर्मा,
जड़ हुई है आस्था कुण्ठित हुई है चेतना।
कह रही पीड़ित सभी को दिक्-भ्रमित ये वेदना,
ज्ञान का दिनमान आलोकित करो हे! सरस्वती माँ।

सरस्वती वन्दना

रवीन्द्र नाथ सागर
एम0ए0 (हिन्दी)

शब्दों के माध्यम से हे! माँ
अभिनव क्रान्ति करूँ।
जन जीवन जो व्यस्त हो रहा,
उसको शान्त करूं।।

दिशा भ्रमित जो यह समाज है,
भौतिक वादी आतंकों से।
उनसे मैं माला गुँथवाऊँ,
प्रेम के सुन्दर स्वप्नों से।
बैठे जो दुखियारे थक कर,
उनकी क्रान्ति हरूँ।।

घृणा, ईर्ष्या, द्वेष समाज के,
हैं, विनाश का मूल रहे।
भारत की संस्कृति आस्था के
जीवन के प्रतिकूल रहे।
अपने करूणामय गीतों से
उनका अन्त करूं।।

●●

गीत-गजल

प्रियंका शर्मा
एम0 ए0

खुदा ने दिल बनाकर क्याअनोखी शह बनाई है,
जरा सा दिल है मगर इसमें सारी खुदाई है।

ये दिल अल्लाह का घर है
ये दिल भगवान का घर है।
बदी दिल में समा जाये तो ,
ये शैतान का घर है।

खुदा ने दिल।

ये दिल फूल है चट्टान है ,
मौजे समन्दर है।
ये दिल नर्म पानी है ,
ये दिल सख्त पत्थर है।
छुपा है दर्द इस दिल में,
बेदर्दी भी इसमें समाई है।

खुदा ने दिल।

जो चाहो देख लो इसमें,
ये आइने से भी सच्चा है।
समझदारी में बूढ़ा है ,
भोलेपन ये बच्चा है।
खिलौना भी ये बन जाता ,
आदत ऐसी पाई है।

खुदा ने दिल।

बड़ी मुश्किल है इसका साथ भी छोड़ा नहीं जाये,
अगर ये इकवार टूटे तो जोड़ा भी नहीं जाये,
गुलों की याद में शीशे की फितरत जो पाई है।

खुदा ने दिल।

जरा सा दिल

●●

ये दर्द है धरती अम्बर का

प्रियंका शर्मा
एम.ए.

ना धर्म ये रामचन्द्र का है
ना मजहब है पैगम्बर का
सर कटे सियासत के हाथों
ये दर्द है धरती अम्बर का।

मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे तो
बेजान है बात नहीं कहते
कुर्सी के तलब गारों के लिये
दिखते हैं बहुत सहमे-सहमे
रामायण की चौपाई हो
बाईबिल का सरमन हो कोई
गुरूवाणी का हो सबद कोई
आयत कुरान की हो कोई
दिखलादो ऐसा धर्म-ग्रन्थ
जहाँ नाम न हो विश्वभर का।

निर्मित हमने कानून किये बाँटा खुद को कुछ हिस्सो में
माटी औ लहू जो एक ही है क्या रखा झूठे किस्सों में
फिरकों में जब इन्सान बँटा-बँट गया तभी धरती का तन
ये अलग-अलग पूजा नमाल कर लिया कहीं सजदा वन्दन
वह एक है सिर्फ एनेक नहीं भ्रम तोड़ो इस आडम्बर का

अपना ही वंश मिटाने को गद्दार भिभीषण कहलाया
उत्तर से लेकर दक्षिण तक धरती को लहू से नहलाया
सम्पूर्ण विश्व है एक नीड भारत का ये सन्देश अमर
ये महामंत्र ऐसा मेरा जीते है हमने महासागर
धृतराष्ट्र का खेल न खेला तुम कुर्सी के साथ
स्वयंवर का

●●

श्रमिक जन विसर्जन, जन भाषाएँ और भाषा का विकास

डॉ0 फतेह सिंह
असिस्टैण्ट प्रोफेसर एवं
अध्यक्ष हिन्दी विभाग

सैर कर दुनियाँ की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ,
जिंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ।

संसार विभिन्न भाषाओं से भरा पड़ा है। आदिकाल से आधुनिक काल तक न जाने कितनी संस्कृति सभ्यताओं का मेल रहा और न जाने कितनी बार विखराव रहा। इस बिखराव व मेल के बीच उनकी भाषाओं का समिश्रण हुआ। राहुल सांकृत्यायन कहते हैं कि जिस जाति ने घुमकड़ी की उस जाति का परिस्कार हुआ। उसकी सभ्यता संस्कृति ने नये आयाम प्राप्त किये, जो एक स्थान पर निवास करके रह गयी उसका विकास थम गया।

भाषा मनुष्य के लिये अनोखा वरदान है। भाषा एवं बोली दोनों ही भाव अथवा विचारों की संवाहिका है। बोली भाषा की पूर्वावस्था है। जब वही समाज में व्याप्त होती है तो भाषा का रूप धारण कर लेती है वास्तव में कोई भी भाषा सामाजिक विचारों, प्रसंगों एवं परिवर्तनों को आत्मसात करके जीवन को जीवन्तता प्रदान करती है। लोक में प्रचलित शब्द का प्रयोग हमारे कवियों एवं लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त किये हैं। वे शब्द जो समाज के भीतर प्रचलित हैं धीरे-धीरे विस्तार पाते हैं और साहित्य का अंग बन जाते हैं। फिर वे चाहें गीत काव्य हों, कहानियाँ हो या मुहावरे का रूप हों। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते गये। भाषा कठिनता से सरलता तथा सूक्ष्म से स्थूल की ओर बढ़ती है। भाषा का अपना एक इतिहास रहा है उसने नित नये आयाम गढ़े हैं।

आज भाषा के नये मानक बन रहे हैं। उसकी संरचना में बदलाव हो रहे हैं कोई भी भाषा सुविधा अनुसार परिवर्तित होती है। उसमें वह लोकप्रियता बोधगम्यता, कोमलता, सरलता तो होती है पर जब तक आम लोगों तक नहीं पहुँचती प्रखरता को प्राप्त नहीं करती।

आज यदि दृष्टि डालें तो जहाँ हम प्रेमचन्द के उपन्यासों व कहानियों के प्रति आज भी उतनी ही आम जनता के बीच प्रसिद्धि पाते हैं क्योंकि उनके गढ़े हुये शब्द सीधे-सीधे ग्रामीण को साक्षात लेकर सहजता के साथ अभिव्यक्त होते हैं और हृदय को वे शब्द छू जाते हैं। एक संवेदना प्रकट करते हैं।

आज हिन्दी विश्व में व्याप्त है। भारत की कुछ भाषाओं को छोड़ दें तो विश्व की समस्त भाषाओं का उद्भव संस्कृत भाषा से हुआ है। ऋग्वेद से ही भाषा के स्वरूप का पता चलता है। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, पश्चिमी भाषा, हिन्दी भाषा- भाषा के अर्थ में हिंदुई, हिन्दुस्तानी, रेख्ता, उर्दू (खड़ बोली), फारसी, पश्चिमी हिन्दी की उपबोली, ब्रज भाषा, बांगरू, बुन्देली इत्यादि को समाहित करते हुए आज हिन्दी अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची है।

हिन्दी के पुनर्वालोकन की आवश्यकता को महसूस करते हुए विचार करते हैं कि आम जनता से ग्रहण किये गये शब्द हिन्दी भाषा में अपना आधिपत्य जमाते गये।

भाषा का शब्द भण्डार व ध्वनि की दृष्टि से हिन्दी के विभिन्न कालों में हिन्दी भाषा पर प्रभाव पड़ा।' वीरगाथा काल में परिवर्तीय अपभ्रंश या अवहट्ट या देशीय भाषा का चलन था। मध्यकाल में सधुक्कड़ी भाषा को

कबीर आदि संतों ने आम जन के शब्दों को ही ग्रहण किया तो प्रेममार्गी कवियों ने अवधि भाषा को परिमार्जित किया। रीतिकाल में ब्रजभाषा चरम विकास पर रही। भार्षिक प्रवृत्ति के कारण संस्कृत में तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ गया। देशज तद्भव शब्दों का प्रयोग कम हो गया। फारसी, अरबी, तुर्की आदि के शब्द निरंतर हिन्दी ग्रहण करती रही। विदेशी भाषाओं के आने के कारण हिन्दी में अल दर, बे, बा आदि उपसर्गों का प्रचलन हो गया। अरबी, फारसी ध्वनियों को हिन्दी में आत्मसात् कर लिया जिसके कारण हिन्दी की पद रचना, क्रिया रचना, वाक्य संरचना प्रभावित हुई।

आधुनिक काल में अंग्रेजों के शासन के साथ-साथ भाषा में अंग्रेजी के पाश्चात्य विज्ञान तथा पुर्तगाली डच, फ्रान्सीसी के नये नाम आते गये। शब्दों के अलावा अंग्रेजी के अनेक प्रत्यय एवं उपसर्ग भी हिन्दी में आये जैसे इज्म (शैविज्म,हिन्दुज्म) इस्ट (कम्युनिस्ट) डमस्क (गुरूडम) आदि। उपसर्ग में - सब, वाइस, हैड, हाफ, आदि। परिनिष्ठत हिन्दी में अंग्रेजी की एक नयी ध्वनि ''औ'' का आगमन हुआ। जैसे-कॉलोनी, कॉलिज, ऑफिस आदि। मुसलमानी विदेशी भाषाओं की भांति अंग्रेजी ने हिन्दी पद्य रचना, वाक्य रचना, क्रिया रचना व अव्य शब्दों को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

आधुनिक काल में हिन्दी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है व्याकरण का विकास, जो हिन्दी भाषा के लिये शुद्ध बन गई। इसके पश्चात पाँच प्रमुख बोलियाँ आती हैं। जिनका अपना व्याकरण रहा। ब्रजभाषा से लेकर हिन्दी अब तक के समय में एक नया स्वरूप आया। जिसका अपना अन्य व्याकरण बनता चला गया। हिन्दी को निरन्तर अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये संघर्ष करने पड़े। आज हिन्दी के स्तर को कई श्रेणियों में बांट सकते हैं।

1. राजकीय भाषा।
2. शैक्षिक वर्ग की भाषा।
3. आम जनता की भाषा।

हिन्दी भाषी प्रदेशों में 18 जनपदीय बोलियाँ तथा 34 उपभाषाऐं हैं। हिन्दी आज विश्वव्यापी हो गयी है। पिछले 50-60 वर्षो में हिन्दी की शब्द सम्पदा में जितना विस्तार हुआ है उतना अन्य किस भाषा में नहीं हुआ। आज शब्द संख्या की दृष्टि से हिन्दी संसार की समृद्ध भाषाओं में से एक मानी जाती है। अंग्रेजी जिसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा माना गया है। उसके मूल शब्द 10 हजार हैं। जबकि हिन्दी के 2 लाख 50 हजार से भी अधिक शब्द हैं। इस तरह संसार में लगभग 2 हजार 746 भाषायें बोली जाती हैं। विश्व की संख्या की दृष्टि से हिन्दी भाषा-भाषियों का स्थान तीसरा मान जाता है तथा हिन्दी भाषा-भाषियों की संख्या 17 करोड़ बतायी जाती है। आज हिन्दी फिजी, मौरीशश, गियाना, सुरीना, चीन इत्यादि देशों में बड़े व्यापक तौर से विकसित हो रही है। हिन्दी की अपनी एक दुनियाँ बन रही है उसमें आर्य, द्रविड़ आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, चीनी, जापानी, आदि विभिन्न तथा संसार की भाषाओं के शब्द मिलते हैं जो उसके अन्तर्राष्ट्रीय स्वभाव के परिचायक हैं।

हिन्दी एक सरल तथा सहज भाषा है इसे आसानी से सीखा जा सकता है। हिन्दी भाषी लोग आज भी बहुत बड़ी संख्या में हैं। व्यवसाईयों, व्यापारियों, सेवा के द्वारा प्रचलित हो रही है। धर्म संस्थाओं व संस्कृति के द्वारा प्रचार प्रसार हो रहा है। चलचित्रों के माध्यम से हिन्दी फल फूल रही है। उसके फिल्मी संगीत भी हिन्दी में लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। इस प्रकार विदेशों में हिन्दी की गहरी छाप पड़ रही है।

●●

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"Natural Resource Management-Policy and Planning"

संयोजक
डॉ० संदीप सिंह वर्मन
असि. प्रोफेसर (भूगोल)

चेयरमैन
डॉ० अजब सिंह यादव
प्राचार्य

मन में एक प्रतीक्षित अभिलाषा थी कि हमारे भूगोल विभाग द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हो। यह अभिलाषा साकार होती हुई प्रतीत हुई जब यह जानकारी हुई कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने हमारे आवेदन पत्र पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर आर्थिक सहायता की स्वीकृति प्रदान कर दी है। स्वीकृति के पश्चात् "Natural Resource Management-Policy and Planning" जैसे ज्वलन्त एवं समसामयिक विषय पर दिनांक 23 व 24 दिसम्बर 2014 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी गरिमामय शैक्षिक वातावरण में सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त तीन चरणों में बाँटा गया। पहला सत्र् जिसमें स्मारिका विमोचन कुलपति प्रोफेसर मो० मुजम्मिल, डॉ० वी०आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा द्वारा किया गया एवं अतिथि व्याख्यान, प्रो० जाविर हसन खान, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा प्रस्तुत गया एवं कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष एवं सचिव द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किये और संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डॉ० अजव सिंह यादव, प्राचार्य ने संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार एवं अनुभव से अवगत कराया। इसके उपरान्त संयोजक द्वारा दो दिवसीय संगोष्ठी की जाने वाली रूपरेखा प्रस्तुत की गयी। इसके उपरान्त तकनीकि सत्र में अतिथि व्याख्यान एवं शोधार्थियों द्वारा शोध-पत्र पढ़े गये। दूसरे दिन 10 बजे प्रातः से दोपहर 03 बजे तक दो तकनीकि सत्र एवं एक विशेष तकनीकि सत्र सम्पन्न हुआ और तकनीकि सत्र में अतिथि व्याख्यान एवं शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये। तीसरा विशेष तकनीकि सत्र जिसमें चुने गये शोध पत्रों को प्रस्तुत कर उनमें से संगोष्ठी में संसाधन प्रबन्धन, नीति एवं नियोजन के पहलुओं पर शोधार्थियों एवं विद्वान वक्ताओं द्वारा विस्तार से विचार किया गया एवं सर्वश्रेष्ठ शोध-पत्र को प्रोफेशर जाविर हसन खान एवं प्रो० एस०डी० सिंह द्वारा सम्मानित किया गया। विशेष कर डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्व विद्यालय, आगरा के कुलपति जी संसाधन प्रबन्धन के विषय में विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि इस तकनीकि युग में संसधनों की जानकारी और उपयोग में हम सभी सहयोग कर सकते हैं। अन्य विद्वानों ने संसाधनों के प्रबन्धन को समझाते हुए नीति प्रस्तुत की और नियोजन के नये आयाम पर विस्तार से चर्चा की। कुछ निष्कर्ष भी सामने आये, जिसको संगोष्ठी स्मारिका में सम्बद्ध कर उल्लेखित किया है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन और इस ग्रन्थ प्रकाशन में जिन महानुभावों एवं विद्वतजनों का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति आभार ज्ञापित करना मेरा पुनीत कर्तव्य है। अत: सर्वप्रथम मैं यू०जी०सी० के निदेशक एवं अधिकारियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने वित्तीय सहायता स्वीकृत कर राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन का अवसर सुलभ कराया।

इसके उपरान्त मैं डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्व विद्यालय आगरा के कुलापति प्रोफेसर मोहम्मद मुजम्मिल जी का आभार प्रकट करता हूँ कि कुलपति जी ने संगोष्ठी में सभी बिन्दुओं पर परामर्श कर सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री आदित्य कुमार मिश्रा एवं सचिव श्री नकुल सक्सेना का भी कृतज्ञता पूर्वक नमन करता हूँ जिनका विश्वास एवं सहयोग मुझे संगोष्ठी के सम्पूर्ण आयोजन में प्राप्त हुआ। संगोष्ठी के प्रमुख प्रेरणास्रोत प्राचार्य डॉ० अजब सिंह यादव जी ने संगोष्ठी से सम्बोधित सभी बिन्दुओं पर परामर्श, सहयोग एवं मार्गादर्शन प्रदान किया। अत: उनके प्रति आभार प्रकट करना भी मेरा पुनीत दायित्व है। इस सम्बन्ध में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के० प्रो० जाविर हसन खान, भूगोल विभाग का भी विशेष रूप से आभारी हूँ कि उन्होंने संगोष्ठी में सहयोग किया। मैं प्रो० रनीश कुमार, भूगोल विभाग, पी.सी. बाग्ला कॉलेज हाथरस, प्रो० एस०डी० सिंह नारायन पी०जी० कॉलेज शिकोहाबाद, डॉ० उदयवीर सिंह, के.के. कॉलेज इटावा, महाविद्यालय क स्टाफ डॉ० कोश्लेन्द्र दीक्षित, डॉ० ए.के. सक्सेना, प्रो० कृष्ण कुमार, डॉ० फतेह सिंह, डॉ० रनवीर सिंह, डॉ० सुशील कुमार पाल जी का विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने इस संगोष्ठी के सभी कार्यों में अपना अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया।

इसके अतिरिक्त महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक बन्धुओं, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के प्रति भी विनयावनत हूँ जिनके सहयोग से यह राष्ट्रीय संगोष्ठी अपने उच्च शिखर को प्राप्त हुई।

मैं सर्वाधिक कृतज्ञ उन तत्वान्वेषी विद्वान लेखकों एवं मनीषी प्रतिभागियों के प्रति हूँ जिनके विद्वतापूर्ण शोध-पत्रों से इस ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव हो सका। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की सार्थकता एवं विशिष्ट गौरव प्रदान करने वाले विद्वानों में डॉ० आर०पी० सिंह, प्रो० जाविर हसन खान, प्रो० ए.पी. मिश्रा, प्रे० ए.ए. अन्सारी, प्रो० बी. जी. सोनबाने, प्रो० प्रवीन कुमार राठ, प्रो० एम.पी. सिंह, प्रो० पंकज कुमार आदि विशेष उल्लेखनीय है।

मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात मित्रों, सुधीजनों, साधुजनों, जिनका मौन व मुखर सहयोग मुझे संगोष्ठी के आयोजन एवं प्रकाशन में मिला है का हृदय से धन्यवाद व आभार ज्ञापित करता हूँ।

●●

डॉ0 अम्बेडकर, बौद्ध मत तथा मार्क्स

डॉ० कीर्ति
सहायक प्राध्यापक
गणित विभाग

डॉ० अम्बेडकर ने बौद्ध मत को इसलिये स्वीकार किया क्योंकि इसमें तीन–स्वर्णिम सिद्धान्त प्रज्ञा, मिथ्या विश्वासों तथा अलौकिकता के विरुद्ध जागरूकता, करूणा तथा समानता समाविष्ट हैं। उन्होंने इस धर्म को इस आधार पर वरीयता प्रदान की क्योंकि यह दलित लोगों को आशा देता है तथा हमें ज्ञान, सत्य और करूणा के तीन सिद्धान्तों द्वारा निर्देशित जीवनयापन की प्रेरणा देता है। डॉ० अम्बेडकर बौद्धमत को मार्क्सवाद के पूर्ण उत्तर के रूप में स्वीकार करते थे, क्योंकि यह शोक निवारण के उपाय सुझाता है। 20 नवम्बर, 1956 को वर्ल्ड फेलोशिप ऑफ बुद्धिस्ट्स के चौथे सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि, ''बौद्ध मत उसी समय तक जीवित रह सकता है जब तक यह अपने को साम्यवाद का प्रतिस्थानीय बनाये रख सकता है''।

अम्बेडकर बौद्धमत को इसलिए चाहते थे कि उसका आधार अहिंसा है। उनके अनुसार, बौद्ध मत के प्रेम और करूणामय उपायों के साथ मनुष्य लम्बे समय तक बेशक प्रतीक्षा के कष्टप्रद क्षण व्यतीत कर सकता है, परन्तु परिणामस्वरूप जो प्राप्त होता है वह चिरस्थायी होता है। डॉ० अम्बेडकर ने गौतमबुद्ध के सिद्धान्तों व उपदेशों से प्रभावित होकर समानता व मानवता के मूल्यों को स्वीकार किया। बुद्ध के विवेकवाद से प्रभावित होकर उन्होंने यह सीख ग्रहण की कि मस्तिष्क की शुद्धि ही धर्म का असली सार है।

डॉ० अम्बेडकर ने मार्क्स के विचारों का गंभीरता से अध्ययन किया और उनसे प्रभावित भी हुए। गरीबों के मसीहा के रूप में विख्यात कार्ल मार्क्स अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समानता की लड़ाई के सबसे प्रमुख योद्धा थे, जिन्होंने वर्ग–संघर्ष के माध्यम से विश्व में साम्यवाद की स्थापना का बिगुल बजाकर दुनिया भर के मजदूरों को एक होने का नारा बुलन्द किया था। अम्बेडकर भी दलितोद्धार के महान योद्धा थे, जिन्होंने सवर्ण हिन्दुओं की दासता से दलितों को मुक्त कराने के लिये जीवन भर संघर्ष किया, इसलिये मार्क्सवाद के प्रति उनका आकर्षित होना स्वाभाविक था। लेकिन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मार्क्स के द्वारा जिस मार्ग का समर्थन किया गया, उससे अम्बेडकर सहमत नहीं थे।

अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध तथा मार्क्स में यह समानता है कि दोनों समाज के ढाँचे को बदलना चाहते हैं और दोनों सम्पत्ति को समाज के दु:खों अथवा शोषण का कारण मानते हैं। बुद्ध और मार्क्स में मूल अंतर सिद्धान्तो का है। बुद्ध का धर्म नैतिकता का धर्म है, सामाजिकता (धम्म) का धर्म है, सदाचार का धर्म स्वतन्त्रता समानता, भ्रातृभाव, माधुर्य, सौम्यता आदि को जीवन का अंग मानता है। दूसरी ओर, मार्क्स के सिद्धान्त भौतिकवादी धारणाओं पर आधारित है और वे विश्व को इसी रूप में देखते हैं। दूसरे बौद्ध धर्म लोकतांत्रिक प्रणाली का समर्थक हैं, जबकि मार्क्स ने शक्ति और क्रांति पर बल दिया है। उसके सिद्धान्तों में हिंसा–अहिंसा अप्रासंगिक प्रश्न है।

डॉ० अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को मार्क्स के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है। वे समझते हैं कि धर्म ही मानव जीवन में समानता ला सकता है और मानव तथा समानता के लिये 'धम्म' सबसे अनुकूल है। चूँकि वे समझते हैं कि ''बुद्ध धर्म अधिक लोकतांत्रिक, नैतिक और समतावादी है, इसलिये यही सबसे श्रेष्ठ धर्म है।'' उन्होंने जाति से मुक्ति पाने का और वर्ग संघर्ष से बचने का यही मार्ग उत्तम समझा।

●●

शिक्षा का उद्देश्य

डॉ. आशुतोष मिश्र
प्रवक्ता
अर्थ शास्त्र विभाग

शिक्षाशास्त्रितों एवं दार्शनिकों ने शिक्षा के उद्देश्य के विषय में गम्भीर चिन्तन-मनन किया है। उनकी मान्यता है कि-शिक्षा व्यक्ति को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही प्रदान न करे, अपितु उसे प्राप्त करने के बाद व्यक्ति अच्छा आचरण भी करे। अच्छा बनने और अच्छा आचरण करने के संस्कारों को सदाचार और नैतिकता का नाम दिया जाता है। इसलिए यूनानी दार्शनिक सुकरात, अरस्तु, प्लेटो के अतिरिक्त हर्बर्ट, लॉक, रूसो एवं पेस्तालाजी आदि शिक्षाविदों ने सदाचार और नैतिकता को शिक्षा-दर्शन का आधार बनाया। शिक्षाशास्त्री हर्बर्ट ने तो शिक्षा संपूर्ण लक्ष्य ही आचारशास्त्र को बताया है। उन्होंने दृढ़ता पूर्वक कहा है—''शिक्षा का प्रश्न-शिक्षा का सम्पूर्ण प्रश्न केवल एक विचार-पुंज में निहित है, और वह है नैतिकता।'' हर्बर्ट के गुरू पेस्तालाजी ने भी बार-बार बालक के नैतिक शिक्षण पर बल दिया है। शिक्षा-दर्शन के प्रणेता जॉन ड्यूई तथा मकारेको ने नैतिक शिक्षा की आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था कि सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक-तीनों पक्षों के विकास हेतु प्रेरित करे—"True education is that which draws out and stimulates the spiritual, intellectual and physical faculties of the children. "Harijan Sept. 11, 1937"

इस प्रकार प्रतीत होता है कि समाज-व्यवस्था से अलग किसी शिक्षा-पद्धति की सार्थकता नहीं हो सकती। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन शिक्षा की सीमा में आता है। केवल ऊँची-ऊँची डिगरियाँ प्राप्त कर शिक्षा पूर्ण नहीं हो जाती अपितु शिक्षा जन्म से मृत्यु तक साथ चलती है। शिक्षित व्यक्ति का व्यक्तित्व बाहरी परिस्थितियों से संघर्ष करता है और समाज पर अपना प्रभाव छोड़ता है। यदि उसका व्यक्तित्व शिक्षा की आँच में तप कर दृढ़, विशाल और चिन्तनशील होगा तो वह समाज पर अपना अमिट प्रभाव स्थापित करेगा। अन्यथा उपयोगहीन पुर्जे की भाँति धरती पर निरर्थकबोझ बनकर जीता रहेगा।

हमारी प्राचीन शिक्षा-पद्धति इसी बुनियाद पर आधारित थी। जन्म से लेकर मृत्यु तक की समाज-व्यवस्था सत् संस्कारों की प्रेरणा देती थी। हमारे ऋषि-मुनियों ने ऐसे सुखद समाज की कल्पना करते हुए संकल्प किया था कि जहाँ सभी सुखी हों, सीभी रोग रहित हों, कोई दु:खी न हो और सभी का कल्याण हो—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में केवल शिक्षक की उचित शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी नहीं होते थे, उसमें माता-पिता एवं संबंधियों की भी समान रूप से जिम्मेदारी होती थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थप्रकाश' मे इसका उल्लेख किया है-''संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव स्वरूप आभूषणों को धारण कराना माता, पिता, आचार्य और संबंधियों का मुख्य कर्म है।'' इससे ज्ञात होता है कि केवल गुरू ही बचे की शिक्षा के लिए उत्तरदायी नहीं होत थे, अपितु अभिभावक भी समान रूप से जिम्मेदार होते थे। सभी मिलकर सुखी, समृद्ध और विकासोन्मुख समाज के निर्माण में सहायक होते थे।

लार्ड मैकोले की शिक्षा—व्यवस्था में सुपात्र शिक्षक दुर्लभ होते जा रहे हैं। आज माता-पिता और संबंधीजन दिग्भ्रमित हैं। हम सब पूरी तरह भटकाव की स्थिति में हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक चिन्ता का विषय बन गई हे। यह कहना अत्युक्ति न होगा—''जैसन गुरू वैसन चेला, होई नरक में ठेलमठेला।'' गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित-मानस' के

'उत्तरकाण्ड में जो कहा था वह आज बिलकुल सच हो रहा है–''मातु-पिता बालकन्हि बुलावहिं। उदर भरै सोई धर्म सिखावहिं।।''

आज परीक्षा में किसी भी प्रकार उच्च अंक प्रतिशत प्राप्त करना गुणवत्ता उपलब्धि और शिक्षा की सम्पूर्णता बन गई है। अनुचित साधनों का प्रयोग कराने के लिए अभिभावक स्वयं प्रयास करते हैं। परिणाम स्वरूप गहन अध्ययन, योग्यता और विषय का समुचित ज्ञान दुर्लभ होता जा रहा है। परिश्रम से कम अंक प्राप्त करने वाले योग्य युवक बेरोजगार हो दर-दर भटक रहे हैं। परिणाम स्वरूप हमारा समाज निराशा और हताशा में है और देश के कर्णधार मूँक बनकर यह सब देख रहे हैं।

इस जमीनी हकीकत को नजरन्दाज कर आँकड़ों के माध्यम से हम अपने प्रदेश और देश को शिक्षित भले ही कह लें। लेकिन यथार्थ स्थिति से हम भाग नहीं सकते । योग्यता विहीन डिगरियाँ देश और समाज का भला नहीं कर सकतीं। बेतहाशा डिगरियाँ बाँटकर शिक्षा की इमारत को ऊँचाइयाँ तो अवश्य प्रदान की जा रही हैं, परन्तु यह इमारत कितनी कमजोर नींव पर बन रही है, इस ओर ध्यान देने की चेष्टा नहीं हो रही है। हम अनुपयोगी डिगरियाँ बाँटने के कलंक से बच नहीं सकते। शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त भारी अराजकता का समूल नष्ट किए बिना शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। शिक्षा की सार्थकता और उपादेयता का फिर से उचित मूल्यांकन कराकर ही शिक्षा का उद्देश्य प्राप्त हो सकता है।

आज की स्थिति में दुष्यन्त कुमार के शब्दों बस यही कहा जा सकता है–

''इस सिरे से उस सिरे तक सब शरीके जुर्म हैं। आदमी या तो जमानत पर रिहा है, या फरार।''

●●

हर आदमी परेशान है

दीपेन्द्र सिंह

बी.एस-सी, द्वितीय वर्ष

किराए के मकान से, खेत के लगाम से राशन की दुकान से ।
सफर में सामान से, फरेबी इन्सान से, दिखावे की शान से। हर आदमी परेशान है।
शराब की प्याली से, लडाकू घरवाली से, पुलिस की गाली सें हर आदमी परेशान है।
बढ़ती मंहगाई से, कपड़ों की सिलाई से, बच्चों की पढ़ाई से। हर आदमी परेशान है।
फिल्मी अभिनेता से, सड़क छाप नेता से, डीजल बिक्रेता से। हर आदमी परेशान है।
शहर के गुण्डों से, पुलिस के डण्डों से, तीर्थ के पण्डों से। हर आदमी परेशान है।
ससुराल में सालों से, बाजार में दलालों से, हर आदमी परेशान है।
लड़की के दहेज से, बीमारी के परहेज से, मोटर रोडवेज से। हर आदमी परेशान है।
घर में लगे टी.वी. से, फैशनेविल बीवी से, पैंसों में शरीबों से। हर आदमी परेशान है।
लड़का बेकाबू से, बनावटी साधू से, दफ्तर के बाबू से। हर आदमी परेशान है।
ट्यूशन के मास्टर से, अस्पताल में डॉक्टर से। प्रशिक्षण में इन्सट्रक्टर से। हर आदमी परेशान है।

●●

''हिन्दी साहित्य दृष्टि में जीव, प्रकृति एवं पर्यावरण चिन्तन''

डॉ. रामनरेश सिंह यादव
प्रवक्ता (हिन्दी विभाग)

वैज्ञानिकों का विकासवाद और आस्तिकों की अपौरूषेय सृष्टि-रचना दोनों ही इस विषय पर एक मत हैं कि मानव ने प्रकृति के विशाल गोद में ही जन्म धारण किया और उसके साहचर्य में चेतना को क्रमशः विकसित किया। वृक्षों ने फलदान द्वारा और निर्मल निर्झरों ने शीतल जल द्वारा मानव की सहज वृत्तियों का भी समाधान किया। फलतः मानव का प्रकृति के प्रति स्वाभाविक रूप से चिर साहचर्य स्थापित हो गया। उसने स्वयं को हिमाच्छादित उत्तुंग पर्वत श्रेणियों से परिवृत पाया। अगाध जलराशि का अवलोकन किया, सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों ने अपनी नियति गति द्वारा उसे विस्मित कर दिया। श्याम जलधि खण्ड और वसुधा की विभूति को देखकर यह चकित और आश्चर्यान्वित हो उठा। समस्त भूमण्डल उसके लिये कौतूहल का विषय हो गया है। इस प्रकार सर्व प्रथम मानव के चेतन मस्तिष्क में प्रकृति के प्रति कौतूहल के भाव उदय हुए।

प्रकृति मानव के लिए चिन्तन एवं मनन का विषय बन गयी। इस प्रकार वह अपनी सहचरी के शिव स्वरूप की ओर उन्मुख हुआ। उसने प्रकृति के अंग-सिन्धु, जलद, गिरि, सूर्य, चन्द्र आदि से निहित मांगलिक भावना का भी अनुभव किया। जलद खण्डों ने जल की वर्षा कर उसके जीवन दाता वृक्षों में नवजीवन का संचार किया।

सूर्य ने जीवन को ऊष्मा और पोषण दिया। ''रतनाकर'' ने असंख्य जीव-जन्तुओं, रत्नों का संसार दिया, चन्द्रमा की शीतलता और शीतल वयार जीवन का आधारबन गयी। वह प्रकृति के विभिन्न मंगलकारी कृत्यों से इतना प्रभावित हुआ कि वह सूर्य, वरूण, चन्द्र, वायु अदि दिव्य नाम देकर गुणगान करने लगा, ''हे मनुष्यों-जिसने जल पर्वतों को अचल करके कम्पित पृथ्वी को स्थिर किया, जिसने आकाश को सीमित कर गगन मण्डल को सम्हाला वही इन्द्र है''।

ऋग्वेद में सूक्त 14 में कहा गया है''हे पूषनः देखो हम तुम्हारे उपासक है ऐसी कृपा करो की हम तुम्हारे राज्य में निर्भय निवास कर सकें''।

मनुष्य की अनुभूतियों में सभी प्राकृतिक घटकों जीव-जन्तुओं, प्राणी वनस्पतियों आदि की उपयोगिता अपरिहार्य हो गयी और इसी विश्वास ने प्रकृति में तत्वों के प्रति मानव के मन में देवत्व का बोध जगाया। प्रकृति पादव जन्तुओं, पक्षियों, सूक्ष्म जीवों, सागर सरिताओं, गिरि-कानन आदि को आधुनिक अर्थ में पर्यावरण कहा जाने लगा है। पर्यावरण की परिभाषा देते हुए विभिन्न विद्वानों ने पर्यावरण को सम्पूर्ण सृष्टि व्याप्ति का एक स्वरूप माना है। जब पृथ्वी पर मनुष्य तथा अन्य प्राणियों ने जीवन आरम्भ किया, उस समय प्रदूषण का नामों निशान भी न था। प्रकृति में एक संतुलन बना हुआ था दूसरा शब्दों में प्रत्येक वस्तु स्वच्छ थी,

धरती उपजाऊ थी वृद्धि और छय का प्राकृतिक स्वरूप था और ऋतुओं का भी नियम था। हिन्दी साहित्य में प्रकृति के जिस स्वरूप का वर्णन किया है उसे आज वैज्ञानिकों ने पर्यावरण का नाम लिया है। संस्कृत साहित्य में भी प्रकृति का बहुत मनोहारी और व्यापक वर्णन मिलता है हिन्दी साहित्य में मानस महा काव्य के रचयिता अमर कवि तुलसीदास ने वन उपवनों की शोभा में भाव और शिल्प दोनों का शुखदः स्वप्न जैसा वर्णन किया है, जिसमें खग मिर्ग, पुष्प पल्लव, नदी, नाले, काक, उलूक, सभी सामिल है। यह अनेक जीवों सुखदः- वातावरण और अनुभूति की सघन्ता है। इसी तरह महा कवि वाल्मीकी ने भी आश्रम का वर्णन करते हुए प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया है। जिसमें सचहाचर, जड चेतन की उपस्थित को रेखांकित किया है। तुलसी आश्रम का वर्णन करते हुए अपने नायक की उपस्थित में यह दृस्य प्रस्तुत करते हैं।

''रामदीख मुनि वास सुहावना,
सुन्दर गिरि कानन जल पावन
शरनि सरोज विहपि वन फूले,
खग मृग विपुल कोलाहल करही,
वरहित वैर मुदित बन चरहीं''

इसी तरह चित्रकूट में अनेक जीवों की विविधता की व्याप्ति को दर्शाया गया है।

''झरना झरहिं मन्त गज गाजहिं,
मनहु निशान विविध विधि बाजहिं,
चक चकोर चातक सुख तिकान,
कुंजत मंजु मराल मुदित मन''

इस प्रकार स्वच्छ पर्यावरण का सुन्दर उदाहरण है हमारी नदियों का भी जिक्र तुलसी ने किया जिसमें गंगा, यमुना सोना, गोमती, सरयु, आदि शामिल है हमारे संस्कृत मंत्रों में तो, गंगा सिन्धु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, सरयु महेन्द्र, तन्या चर्मण्डवती, वेत का आदि को सम्मानित जगह मिली है।

नोबुल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ ठाकुर बंगला भाषा में 'संध्या संगीत'

नामक पुस्तक में प्रकृति के सौन्दर्य को निहारते हुए लिखा है।

''फूल फूटे, आभि आर्य देखते न पायी, पाखि गाहे मोर काछे गाहे नाचे आर''

इसका आश्य प्रकृति में फूल खिलते है पक्षी गाते है परन्तु मनुष्य यह सब देख सुनकर भी अनदेखा अनसुना करता रहता है। हिन्दी कविता में प्रकृति या पर्यावरण सम्पूर्ण रचना संसार छाया हुआ है पदमाकर, धनानन्द सैनापति, बिहारी, वेनि कवि गंग कवि सभी रचनाओं प्रकृति का स्वरूप है नभि जागरण के कवि भारतेन्दु ने भी वसन्तु को रेखांकित करते हुए लिखा है।

''वन-वनसी लगाई पलास फूले,
सरसों गुलाब गुललाल, कचनार हाय
हरिशचन्द्र कोयले कुहूक फिरे वन-वन''

इसी प्रकार पंचवटी खण्ड काव्य में ''चारू चन्द्र की चंचल किरणे खेल रही थी जल थल में''

के कारण सुमित्रानन्दन पन्त प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाते है उन्होंने सर्जनात्मक संवेदना प्रकृति और पर्यावरण से प्राप्त की थी।

''फैली खेतों में दूर तलक, मखमल की कोमल हरियाली''

इसी तरह जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' 'महाकाव्य' 'चिन्ता' सर्ग में'' हिमी गिरि उन्तुंग शिखर पर, बैठ शिलाकी शीतल छॉव, एक पुरुष भीगे नेनो से देख रहा था प्रवल प्रभाह''

लिखकर प्रकृति का चित्रण किया है सभी कवियों ने प्रकृति सृजन का आधार माना है प्रकृति सृष्टि और जीवन का आधार है और इसी संकल्पना से हमारी विकास की सभी ऊचाईयाँ प्राप्त की जा सकती है इस प्रकार हम पाते है हिन्दी साहित्य दृष्टि में जीव प्रकृति एवं पर्यावरण चिन्तन ही नहीं विकास की संकल्पनाऐ भी निहित है इसलिए हमें तमाम शासकीय, आशासकीय और निजी तौर पर पर्यावरण-संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए और प्रदूषण रोकने के लिए हर स्तर पर चिन्तन शील रहकर प्रयत्न करना चाहिए ताकि जीवन व्यापार अबाध गति से संचालित हो और एक स्वच्छ, सुखी, समृद्ध संसार मिल सके, जिससे रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस पंक्ति ''कवेरे प्रभाते हवे, आनन्द विहंग गुलि'' के माध्यम से मुक्त होने और नये प्रभात की प्रतीक्षा बनी रहे और हमारा पर्यावरण तथा लोग जीवन बचा रहे। ●●

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का राजनीतिक एवं सामाजिक योगदान

डॉ. कौशलेन्द्र दीक्षित
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र

इतिहास इस बात का साक्षी है कि महाराणा प्रताप ने स्वतंत्रता का आदर्श रखा तो शिवाजी ने उसका अनुसरण किया। टीपू सुल्तान ने इसे नया मोड़ दिया तो महारानी लक्ष्मीबाई ने साहस पराक्रम से उसका मुकाबला करना सिखाया जहाँ एक ओर इन बलिदानी वीरों की श्रंखला दिखाई पड़ती है वहीं दूसरी ओर राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने भारत की सोयी आत्मा को जगाया। स्वामी दयानन्द सरस्वती और विवेकानन्द ने भारत के गौरव का न केवल भारत में बल्कि विश्व में डंका बजाया तो बाल गंगाधर तिलक ने समग्र भारत में क्रान्ति की ज्वाला जगायी और अन्त में महात्मा गाँधी जैसे पुरुष ने लोगों के अन्दर उड़ने वाले उग्र मनोभावों को शान्ति, अहिंसा और शक्ति के सन्देश की छीटें बिखरायीं। इस प्रकार पराधीन भारत के सैनिकों ने भारत माँ के सुन्दर चित्र की कल्पना संजोई और प्राप्त करने का अपना मोर्चा, सुदृढ़ किया। इसी श्रंखला में ही अमर शहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम आता है।

गणेश जी का विद्यार्थी जीवन– विद्यार्थी जी का जन्म अपनी ननिहाल में प्रयाग के अतरसुईया मोहल्ले में कु. आर सुदी 14 रविवार संवत् 1947 (सन् 1890) को श्रीमती गोमती देवी के उदर से हुआ। जब वह गर्भ में था तब उनकी नानी श्रीमती गंगादेवी ने स्वप्न में गणेश जी की एक मूर्ति उनकी माता के हाथ में दी। इस स्वप्न के अनुसार उन्होंने निश्चय किया कि उनके जो दोहित्र होने वाला है, उसका नाम ''गणेश'' और यदि कन्या हुई तो ''गणेशी'' रखा जायेगा। संयोग ऐसा कि गर्भ से लड़का ही पैदा हुआ और पूर्व निश्चयनुसार उसका नाम गणेश रखा गया, जो आगे चलकर ''गणेश शंकर'' हो गया। विद्यार्थी जी जिस समय ढाई–तीन साल के हो गये, तब कुछ दिनों के लिए अपनी माँ के साथ अपने नाना के यहाँ सहारनपुर में रहे थे। उनके नाना मुंशी सूरज प्रसाद सहारनपुर जिला जेल के असिस्टेण्ट जेलर थे। जेल में डबल रोटियाँ बनाकर बाहर बिकने जाती। विद्यार्थी के नाना रोज उनमें से एक छोटी रोटी लेकर विद्यार्थी जी को खाने को देते और ये बड़ी खुशी से उड़ा जाते। तात्पर्य यह कि जेल की रोटियाँ खाने के आदी विद्यार्थी जी अपनी ढाई वर्ष की उम्र के हो गये थे और वह उनके मुँह इतनी लग गयी थी कि अन्तिम समय तक भी न छूटी और उसके लिए पाँच–पाँच बार उन्होंने जेल की हवा खाई।

गणेश शंकर विद्यार्थी की शिक्षा एवं व्यवसाय–गणेश शंकर विद्यार्थी की उम्र जब पाँच–छह साल की थी उस समय उनके पिता जी ग्वालियर रियासत के मुंगावली नामक स्थान ऐंग्लो वर्नाक्यूलर

स्कूल के सेकेण्ड मास्टर थे। विद्यार्थी जी के बाल्यकाल का अधिक समय वहाँ पर बीता और शिक्षा का श्री गणेश भी वहीं हुआ। 1905 ई. में विद्यार्थी जी ने अंग्रेजी मिडिल पास किया। इसके पश्चात अपने बड़े भाई शिवव्रत नारायण जी की इच्छानुसार उन्होंने एण्ट्रेन्स की तैयारी की उनकी एण्ट्रेन्स की परीक्षा का केन्द्र कानुपर का वर्तमान क्राइस्ट चर्च कॉलेज था। 1907 ई. में वे द्वितीय श्रेणी में एण्ट्रेस पास हो गये। विद्यार्थी जी की प्रबल इच्छा खूब पढ़ने की थी। इसी आकांक्षा को लेकर उन्होंने कायस्थ पाठशाला कॉलेज प्रयाग में प्रवेश लिया पर वहाँ मुश्किल से सात–आठ महीने ही पढ़ पाये होंगे कि आर्थिक कठिनाइयों और गृहस्थी के झंझटों के कारण उन्हें अपना कॉलेज का पढ़ना बन्द करना पड़ा उनमें, अधिक से अधिक विद्या हासिल करने की उनकी बड़ी उत्कण्ठा थी, परन्तु परिस्थितियों के आगे उन्हें सिर झुकाना पड़ा, जिस समय वे इलाहाबाद में पढ़ते थे उसी समय श्री सुन्दर लाल जी के सम्पर्क में आये। पं. सुन्दर लाल जी उन दिनों कर्मयोगी निकालते थे। विद्यार्थी जी भी उनके संचालन में यथा शक्ति सहयोग प्रदान करते रहे। हाँ इस बीच श्री सुन्दर लाल जी से उनका स्नेह सम्बन्ध कायम हुआ वह जन्म भर निभा। गणेश जी इन दिनों सुन्दरलाल जी को ''मास्टर जी'' कहा करते थे। ''तपस्वी'', कर्मवारी और ''पंडित'' सुन्दर लाल गणेश शंकर जी के लिए सदा ''मास्टर जी'' रहे और मास्टर जी के लिए शहीद शिरोमणि विद्यार्थी जी सदा ''गणेश जी'' ही बने रहे।

कुछ ही दिनों के बाद (4 जून 1909 ई. को) उनकी शादी हरवंशपुर (इलाहाबाद) के मुंशी विश्वेश्वर दयाल की पोती से हुई। उनकी इच्छा अभी शादी करने की नहीं थी पर घर वालों के दबाव के कारण उन्हें राजी होना पड़ा। पढ़ना छोड़कर विद्यार्थी जी इलाहाबाद से कानपुर आ गये, 6 फरवरी 1908 में 30 रुपये तनख्वाह पर करेन्सी में नौकरी कर ली। काम के अलावा खाली समय में वे पढ़ा करते थे एक दिन करेंसी में जब नोट जलवाने का काम शुरु हुआ वे किताब पढ़ने में मशगूल थे तभी उनका अंग्रेज ऑफीसर निरीक्षण करने आ गया। उसने इस पर आपत्ति की कुछ सख्त बातें कहीं फलस्वरूप गणेश जी ने 26 नवम्बर 1909 को करेन्सी की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद वह कानपुर के पृथ्वीनाथ हाईस्कूल में 1 दिसम्बर 1909 ई. से 20/– रुपये मासिक पर अध्यापक बन गये। एक दिन वे सुन्दरलाल जी के 'कर्मयोगी' को छुट्टी के समय क्लास में बैठे पढ़ रहे थे इस पर हेडमास्टर ने आपत्ति की। इसी पर कुछ विवाद हो गया और विद्यार्थी जी ने 5 सितम्बर 1910 ई. को यहाँ से भी त्यागपत्र दे दिया।

देश की तत्कालीन राजनीति का अध्ययन इस समय तक गणेश जी ने बहुत अच्छी तरह से कर लिया था और वह दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि ऐसा कार्य करेंगे जिससे देश की सेवा की जा सके तथा उसे परतन्त्रता की बेड़ियों से छुटकारा दिलाया जा सके। कानपुर में उन दिनों ''हिन्दू फ्रेण्डस एसोसिएशन'' नामक एक संस्था थी उससे वाद–विवाद आदि हुआ करते थे। विद्यार्थी जी उसके मेम्बर हो गये और

बहस–मुवाहिसें में हिस्सा लेते रहे। पृथ्वीनाथ हाईस्कूल से इस्तीफा देने के बाद वे किसी काम की तलाश में थे। सौभाग्यवश आचार्य पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी से उनकी मुलाकात हुई उन्हें इन दिनों से सहायक की आवश्यकता थी उन्होंने विद्यार्थी को अपने यहाँ रख लिया विद्यार्थी जी 2 नवम्बर 1911 ई. से 25/– रुपये मासिक पर द्विवेदी जी के पास रहकर ''सरस्वती'' के सम्पादन कार्य में योगदान देने लगे। सरस्वती से गणेश जी की काफी ख्याति हुई तब ''अभ्युदय'' के अधिकारियों ने उन्हें अपने यहाँ बुला लिया। सितम्बर 1913 में अभ्युदय का प्रकाशन रुक गया। अतः 23 सितम्बर सन् 1913 को विद्यार्थी जी कानपुर आ गये। यहीं से गणेश जी के दूसरे जीवन का आरम्भ हुआ और वह कार्य किया जो कभी न रुक सका। कानपुर नगर को संयुक्त प्रान्त (आधुनिक उत्तर प्रदेश) को, सम्पूर्ण देश को यह बल दिया, जिससे अंग्रेजी शासन की नींव हिल उठी। यह कार्य था ''प्रताप का प्रकाशन'', 19 नवम्बर 1913 को गणेश जी ने साप्ताहिक प्रताप को जन्म दिया यह पत्र क्या था? ऐतिहासिक राणा प्रताप के कठोर व्रत एवं आदर्शों का पुर्नजन्म।'' उनके आदर्शों, कार्यों, सेवाओं और सुधारों का ''प्रताप'' मूर्त रूप था। यहीं से गणेश जी का राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक तथा आर्थिक जीवन जनता जनार्दन के हितार्थ प्रारम्भ हुआ।

गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार के रूप में–साप्ताहिक ''प्रताप'' का प्रकाशन गणेश शंकर विद्यार्थी, नारायण प्रसाद अरोड़ा, शिव नारायण मिश्र और यशोनन्दन की संयुक्त भागीदार में आरम्भ हुआ था ''प्रताप'' का नाम गणेश जी ने महाराणा प्रताप की ओर अरोड़ा जी ने पं. प्रताप नारायण मिश्र की स्मृति में रखा। ''प्रताप'' की नीति पर प्रकाश डालते हुए गणेश जी ने प्रथम अंक के सम्पादकीय लेख में लिखा, '' आज अपने ह्रदय में नई–नई आशाओं को धारण करके अपने उद्देश्यों पर पूर्ण विश्वास रखकर ''प्रताप'' कर्मक्षेत्र में आता है। समस्त मानव जाति का कल्याण हमारा परमोद्देश्य है और इस उद्देश्य की प्राप्ति को एक बहुत बड़ा और बहुत जरूरी साधन हम भारतवर्ष की उन्नति समझते हैं। देशी राज्यों में होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध प्रताप ने हमेशा आवाज उठाई। स्वतन्त्रता संग्राम की सभी लड़ाईयों में प्रताप ने खुलकर भाग लिया। चंपारन आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, बारडोली, खेड़ा, पटुआखाली में होने वाले सत्याग्रहों को उसने बल दिया। अनेक क्रान्तिकारी देश भक्तों, सेवकों के लिए वह घर बना रहा। देश हित में होने वाले सभी काम चाहे वे हिन्सात्मक रहे हों चाहे अहिंसात्मक समर्थन और सहायता में ''प्रताप'' सबसे आगे रहा।

सन् 1926 में गणेश शंकर विद्यार्थी को कॉंग्रेस ने यू.पी. लेजिसलेटिव काउन्सिल के लिए अपना उम्मीदवार बनाया। इस चुनाव में गणेश जी ने बड़ी शानदार विजय प्राप्त की ओर यूपी. काउन्सिल के सदस्य निर्वाचित हुए। सन् 1929 में गणेश जी यू.पी. कॉंग्रेस कमेटी के अध्यक्ष (डिक्टेटर) बनाये गये। गणेश जी ने सन् 1920 से सन् 1930 तक पाँच बार जेल यात्रा की। ''विद्यार्थी जी अपनी जिन्दगी भर

राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में लगे रहे। उनका राजनीतिक और सामाजिक जीवन बहुत ही उज्ज्वल था, परन्तु इसके साथ ही उनका साहित्यिक जीवन उससे भी अधिक तेजोमय और आदर्श था।

गणेश शंकर विद्यार्थी का राजनीतिक प्रभाव—राजनीतिक जीवन में गणेश शंकर विद्यार्थी ''प्रताप'' के प्रकाशन के साथ ही जुड़ गये थे। 1916 में उनके आमन्त्रण पर लोकमान्य तिलक व महात्मा गाँधी कानपुर पधारे। 1917—18 के काल में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट का होमरुल आन्दोलन प्रभावी हो रहा था, महात्मा गाँधी जी के साथ विद्यार्थी जी ने इन आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसी समय कानपुर के मिलों में एक बड़ी हड़ताल हुई इसमें 25 हजार मजदूरों ने भाग लिया। सरकार ने आन्दोलन दबाने के लिए गोलियाँ चलवाईं विद्यार्थी जी ने मजदूरों के साथ खड़े होकर लड़ाई लड़ी और प्रशासनिक अधिकारियों और मिल मालिकों के अत्याचारों का घोर विरोध किया और मजदूर सभा की स्थापना की।

कानपुर के मजदूरों ने 1919 में एक आम हड़ताल की जो गणेश शंकर विद्यार्थी के ही प्रयत्नों का परिणाम थी। सन् 1921 में रायबरेली जिले के गोलीकाण्ड में किसान सूखे चने की भाँति भून दिये गये थे। विद्यार्थी जी ने ''प्रताप'' के द्वारा इन अत्याचारों का कड़ा विरोध किया, उन पर दफा 108 के अनुसार मुकदमा चलाया गया और वे जेल गये। 1923 में जब वह जेल से बाहर आये और फतेहपुर की जिला कॉन्फ्रेन्स में जब वह भाषण देने गये तो सरकार ने पुनः उन्हें जेल में ठूँस दिया। उनका स्वास्थ्य काफी गिर चुका था। स्वास्थ्य के कारण ही उनके मित्रों ने उन्हें माँफी लेने की सलाह दी किन्तु वे उस मिट्टी के बने हुए तो थे ही नहीं और टसमस हुए बिना वह जर्जर काया को लेकर जेल चले गये।

काँग्रेस का अखिल भारतीय 60वाँ अधिवेशन कानपुर नगर में ही 1925 में आयोजित किया गया जिसकी स्वागत समिति के प्रधानमंत्री के रूप में गणेश शंकर विद्यार्थी ही बनाये गये थे। काकोरी षड्यन्त्र केस की प्रमुख रूप से पैरवी गणेश जी ने की थी। सन् 1926 में विद्यार्थी जी और ''प्रताप'' समाचार पत्र पर मुकदमा चलाया गया यह मुकदमा मैनपुरी जिले की तहसील शिकोहाबाद के थानेदारों ने मैनपुरी के जिलाधीश की अदालत में चलाया इसमें गणेश जी को 6 माह की सजा हुई।

संयुक्त प्रान्त का राजनीतिक सम्मेलन विद्यार्थी जी की अध्यक्षता में 1929 में फर्रुखाबाद में हुआ। 1930 में विश्वविद्यालय सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और संयुक्त प्रान्त के वे प्रथम अधिनायक हुए और जेल से बाहर रहकर प्रान्त भर में सत्याग्रह का अथक परिश्रम के साथ संचालन किया। 1931 में जब काँग्रेस का अधिवेशन कराची में सम्पन्न हुआ तो सरदार भगत सिंह को 22 मार्च को फाँसी दे दी गई। अंग्रेजों ने सरदार भगत सिंह के शव को परिवार के लोगों को न देकर एक निर्जन स्थान में अंग्रेजी सरकार के आदेश पर फूँक दिया था। भारतीय जनमानस में वैसे ही काफी रोष था। यह सुनकर क्रान्तिकारियों में आग लग गयी और उनमें विरोध की आग प्रज्जवलित हो उठी। इस विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेज सरकार ने कूटनीति का सहारा लिया और क्रान्तिकारियों के गढ़ कानपुर में हिन्दू—मुस्लिम

दंगा कराने का षड्यन्त्र रचा। अतः वह सफल रहे। गणेश जी ने अंग्रेजों की इस चाल का साहस से मुकाबला करने का निश्चय किया। लेकिन यह दंगा एक महायुद्ध का रूप ले चुका था। यह दंगा केवल दो सम्प्रदायों की उत्तेजना का प्रतिफल था या विदेशी शासन का षड्यन्त्र? इसका उत्तर इतिहास जो कुछ दे, परन्तु प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार लगता था, कानपुर का शासन तंत्र मर गया था। कानपुर उत्तर प्रदेश की राजधानी का अत्यन्त समीपी नगर था वहाँ सशस्त्र पुलिस और सैनिकों की भारी संख्या एकत्र थी फिर भी वहाँ 500 लोग मारे गये और पचहत्तर लाख की सम्पत्ति स्वाहा हुई। 24 मार्च 1931 को दंगा प्रारम्भ हुआ, विद्यार्थी जी अस्वस्थ थे फिर भी वे कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाजसेवी श्री रामरतन गुप्त के साथ उस दिन प्रातः से रात्रि तक इस आग से जूझते रहे। कहीं शान्ति कराते, कहीं घिरे हुए लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाते, कहीं घायलों को अस्पताल भिजवाते। दूसरे दिन 25 मार्च 1931 को प्रातः से ही वे श्री गुप्त जी के साथ इसी कार्य में जुट गये। संयोग से पत्नी ने भी मना किया तो उन्हें उत्तर मिला कि जब मैंने संसार में किसी का अहित नहीं किया तब मेरा अहित कोई क्यों करेगा।

प्रातः से लेकर दोपहर तक सेवा कार्य चलता रहा। दोपहर के कुछ पूर्व ही उन्हें सूचना मिली कि बंगाली मोहल्ले में करीब दो सौ मुसलमान घिरे पड़े हैं। रात में ही कुछ मारे गये हैं और शेष आज रात में खत्म कर दिये जायेंगे। वे सीधे बंगाली मोहल्ले में पहुँचे वहाँ के मुसलमानों को सुरक्षित स्थानों में भेजने की व्यवस्था की। वहाँ कई वृद्ध मुसलमानों ने उनके हाथ चूमकर उन्हें फरिश्ता कहकर पुकारा। इसके पश्चात इटावा बाजार पहुँचकर उन्होंने धधकते और गिरते हुए मकानों से मुसलमानों को निकालकर अन्यत्र भेजा। इसी बीच उन्हें खबर लगी कि करीब दो सौ हिन्दू चौब गोला नामक मुहल्ले में फँसे मृत्यु की बाट जोह रहे हैं जोकि मुस्लिम बस्ती थी वहाँ किसी भी हिन्दू के जाने का अर्थ निश्चित मृत्यु थी पर वे तो हिंसा की विभीषिका से लड़ने वाले अहिंसक सिपाहियों में से थे। चल पड़े बिना किसी डर, झिझक या चिन्ता के साथ। वहाँ से हिन्दू पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों को निकालकर लारी में बिठा ही रहे थे कि बगल के मुहल्ले से ''अल्लाह हो अकबर मारो–मारो'' की आवाज उठने लगी। स्पष्ट था कि भीड़ हिन्दुओं से भरी लारी को रोकना चाहती थी। इस अपराजेय मृत्युंजयी निर्भीक मनामानव ने ड्राइवर से कहा कि लारी बढ़ा ले जाओ मैं आगे बढ़कर उन्हें रोकता हूँ, लारी चल पड़ी। अकस्मात एक मुसलमान युवक उनका हाथ पकड़कर कहने लगा– ''ये सब पागल हैं, ये आपको मार डालेंगे'', स्वर गूँज उठे, हिंसा की चुनौती स्वीकार हुई, पर दानवता के उन निर्दय पुतलों में करुणों कहाँ। कुछ लोग चिल्लाते ही रहे कि इन्होंने मुसलमानों को बचाया है, ये फरिश्ते हैं पर कौन सुनता? उनमें से एक ने भाले से प्रहार किया दूसरी ओर से लाठियों की चोट सिर पर पड़ी। कुछ ही क्षणें में मानवता की वह प्रतिमूर्ति धराशायी हो गई। अटूट संवेदनशील तथा चिरंतन संघर्ष की कहानी समाप्त हो गयी।

इस तरह देश के राष्ट्रीय संग्राम के इतिहास में 25 मार्च 1931 की तिथि अविस्मरणीय होकर बलिदान दिवस बन गयी है। बलिदान के दो दिन बाद दोपहर में बड़ी कठिनता से उनका शव पहचाना जा सका। अंग्रेजी राज्य के इतिहास में यह बात काले अक्षरों में लिखी जायेगी कि ऐसे महामानव की प्राण रक्षा तो दूर उनके पता लगाने में भी तत्कालीन नौकरशाही ने तनिक भी रुचि नहीं दिखाई, ''भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक महान सेनानी संयुक्त प्रान्त एवं कानपुर के अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ऐसा आदर्श छोड़ा है जो सदियों तक स्वतन्त्रय प्रेमियों को न केवल मार्गदर्शन करता रहेगा बल्कि प्रेरणा भी देता रहेगा।

गणेश शंकर विद्यार्थी के सामाजिक विचार–विद्यार्थी जी के सामाजिक विचार बड़े क्रान्तिकारी थे। समाज में आजकल धर्म के नाम पर जो पोप लीला मची हुई है वह इसके खिलाफ थे। अपने समाज की महिलाओं की प्रतितावस्था में वह बहुत दुखी होते और उनकी शिक्षा, दीक्षा, पर्दा प्रथा तोड़ने, उन्हें पुरुषों के समान ही अधिकार देने के वह पक्के समर्थक थे। तत्कालीन हिन्दू समाज में पुरुष समुदाय स्त्री समाज की जैसी उपेक्षा करता था और उन पर अत्याचार करता था, विद्यार्थी जी इन बातों को देखकर एवं विचार कर तिलमिला उठते थे। जेलों में बन्द राजनैतिक कार्यकर्ताओं के निःसहाय परिवारों की वह खोज खबर लेते और उन्हें मदद पहुँचाते रहते थे। किसी के घर रुपया भेज रहे हैं तो किसी कन्या की शादी का प्रबन्धक करवारहे तो किसी के लड़के के पढ़ने का इन्तजाम कर रहे हैं। गणेश जी के समकालिक भारतीय समाज विश्व विश्रंखलित समाज था अनेक प्रकार के धार्मिक और सामाजिक दोषों से ग्रस्त था और उनको लगा कि इस राष्ट्र के हित में कोई काम करना ही है तो इस विश्व श्रंखलित को संगठित करने का कार्य है। अपने 17 वर्ष के सफल सक्रिय राजनैतिक, सामाजिक जीवन के काल खण्ड में उन्होंने भारतीय समाज को संगठित करने में अपने कदम उठाये, उनमें से निम्न प्रमुख कार्य हैं।

अ– हिन्दू मुस्लिम एकता

ब– ग्राम सेवा एवं ग्रामीण क्षेत्र में राजनीतिक जागरुकता

स– मजदूर संगठन

(अ) हिन्दू–मुस्लिम एकता : गणेश शंकर विद्यार्थी का मानना था कि भारत की पराधीनता को, भारत की एकता ही मुक्त करा सकती थी उनका विश्वास था कि एकता के माध्यम से उन्नति के पथ पर यह देश आगे बढ़ सकता है। अर्वाचीन भारत में हिन्दू, मुसलमान जिनका कि बहुमत है, एक दूसरे से काफी दूर हो गये थे इसलिये गणेश जी ने अपने राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी विचार में इन्हीं दो सम्प्रदायों में हिन्दू–मुस्लिम के मतभेदों पर विचार व्यक्त किये। भारत में विदेशी सत्ता को हटाने में जितना कष्ट टीपू सुल्तान ने झेला उतना ही कष्ट महारानी लक्ष्मीबाई को भी झेलना पड़ा। महारानी लक्ष्मीबाई के सिपाहसलार ने देश के लिए जान दे दी, तो तात्या टोपे ने

भी अपने रक्त की अन्तिम बूँद देश के लिए लगा दी। गणेश जी ने हिन्दू–मुस्लिम अलगाव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया तथा उन्होंने कहा कि अर्वाचीन राष्ट्रीयता की नींव मजहब नहीं, वरन देश है। इसके साथ गणेश जी ने उन कारणों पर भी विचार किया जो हिन्दू–मुस्लिम एकता में बाधक है। उनके विचार से इसके दो ही कारण थे जिसके द्वारा हिन्दू–मुसलमानों के बीच दंगे करा दिया करते थे–

1– सामाजिक तथा धार्मिक मतभेद

2– अंग्रेजी शासन की नीति एवं राजनैतिक कारण

गणेश जी ने दृढ़ता के साथ यह कहा कि धर्म को आदर्श बनाना अच्छा है किन्तु राष्ट्रीय हित का ध्यान रखना इससे भी ज्यादा आवश्यक है। व्यापक अर्थ में विचार करते हुए गणेश जी कहते हैं कि प्रत्येक धर्म के जीवन सम्बन्धी सिद्धान्त किसी एक धर्म के लिए नहीं वरन् सभी धर्मों के लिए कल्याणकारी है। वह साम्प्रदायिक विचारों को अंधविश्वासी, अज्ञानी व्यक्तियों की देन मानते थे। वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, पारसी, ईसाई सभी को एक ही दृष्टि से देखते थे। हिन्दू होने के नाते हिन्दुओं के साथ पक्षपात करते नहीं देखे गये। जब जहाँ जैसा मौका मिला, उन्होंने दोनों समुदाय वालों की समान सेवा की। गणेश जी ने अनेक राष्ट्र के नेताओं की हिन्दू राष्ट्र की स्थापना का विरोध किया था और हिन्दुओं को चेतावनी देते हुए कहा था कि ऐसे राष्ट्र की स्थापना भविष्य में सम्भव नहीं है। यह चेतावनी मुसलमानों को भी दी और कहा था ''जो टर्की, या काबुल या मक्का या जिद्दा का स्वप्न देखते हैं वह अपनी जन्मभूमि नहीं, और इसमें कोई कटुता नहीं समझी जानी चाहिये। यदि हम यह कहें कि उनकी कब्रें इसी देश में बनेंगी और उनकी मसीहें यदि वे इस योग्य होंगे तो इसी देश में गाड़े जायेंगे'' इस तरह उन्होंने कहा कि टर्की को अपना वतन समझने वाला भारतीय मुसलमान सच्चा देश भक्त नहीं है।

(ब) ग्राम सेवा एवं ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक जागरुकता : भारत गाँवों का देश है और इसलिये इन कार्यकर्ताओं को जिन्हें कुछ कार्य करना है, उन्हें गाँव की ओर जाना ही होगा। ''देश की सच्ची आबादी गाँव में ही निवास करती है। देश में फैले हुए छोटे–छोटे झोपड़े देश की सच्ची संतानों के निवास स्थान हैं'' ऐसे सामाजिक विचारों के साथ गणेश शंकर विद्यार्थी ने ग्रामीण जीवन को अपनी सम्पूर्ण गतिविधियों का केन्द्र बनाया उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था कि गाँव में अधिक से अधिक सुधार किये जायें वहाँ निवास करने वाले लोगों के मूल को समझा जाये और उनमें राष्ट्रीय चेतना का सन्देश दिया जाये। गाँव में वाचनालय और पुस्तकालय स्थापित किये जायें। गाँव में चर्खा चल सकता है और खद्दर बन सकता है। यदि वहाँ खद्दर बनने लगे तो गाँव का पैसा गाँव में ही रहे और लोगों की खुशहाली बढ़े।

गणेश शंकर विद्यार्थी गाँव को ही शक्ति का केन्द्र मानते थे इसलिये उन्होंने ''प्रताप'' के माध्यम से कार्य करना प्रारम्भ किया। ''प्रताप'' में किसानों पर ध्यान दिया जाता था और उन पर होने वाले अत्याचारों का विरोध होता था। कानपुर से 20 मील की दूरी पर स्थित नरवल नामक गाँव को केन्द्र बनाकर आश्रम नरवल सेवा श्रम (गणेश सेवाश्रम नरवल) की 1923 की फरवरी मास में स्थापना की।

(स) मजदूर संगठनः तत्कालीन समय में मजदूरों की आवाज उठाने वाला कोई नहीं था। ऐसी परिस्थितियों में मजदूरों की दिशा में सुधार लाने और उन पर होने वाले अन्यायों और अत्याचारों का प्रतिकार करने का साहस सर्वप्रथम गणेश जी को दिया जा सकता है। 1919 में जब कानपुर में मजदूरों ने हड़ताल की तो गणेश जी ने उनका पूरा–पूरा साथ दिया। कानपुर का प्रसिद्ध मजदूर संगठन ''मजदूर सभा'' उनके ही प्रयत्नों का परिणाम था और 1927 से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक (1931) वे उसके अध्यक्ष रहे। उन्हीं के सक्रिय सहयोग और समर्थन में मजदूर सभा की न केवल शक्ति बढ़ी बल्कि मिल मालिकों को भी उनकी बातों को सुनने के लिए मजबूर होना पड़ा। उस समय कानपुर में 40–50 हजार मजदूर रहते थे और देश के अन्य बड़े नजरों की तरह यहाँ के मजदूरों की दशा बड़ी ही दयनीय थी। रहने के लिए पशुओं से बदतर एक–एक कोठरी में 5–5, 7–7 व्यक्ति मजबूरन रहते थे। न अच्छी हवा मिलती थी और न ही साफ रोशनी। उन्हें इतनी मजदूरी नहीं मिलती थी कि वे अपने तथा अपने बाल–बच्चों का पेट भर सकें और तन ढक सकें। वो मनुष्य होकर भी पशु की तरह जीवन यापन करते थे। गणेश जी का स्पष्ट मत था कि मजदूरों को केवल उनके अधिकार बताने और अधिकारों को माँगते रहने का अब समय नहीं रह गया है। उन्होंने मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ी, 1919 की आम हड़ताल में उन्होंने मजदूरों में साहस और धैर्य बंधाया उसे भुलाया नहीं जा सकता।

●●

ऐसा क्यों?

सुनहरे अक्षरों से लिखे बेटे, काली स्याही से लिखी जाती है बेटियाँ,
सबकी आन और शान हैं बेटे हम जाने क्यों घर में दबायी जाती है बेटियाँ,
करेगा सबका नाम रोशन बेटा, अभागन क्यों कहलायी जाती हैं बेटियाँ,
दिखाया हर सपना बेटे को, दहेज में क्यों जलायी जाती हैं बेटियाँ,
जन्म देती हैं माँ ही बेटे को, फिर भी गर्भ से क्यों मिटायी जाती है बेटियाँ,
छोड़ दें बेटे माँ बाप को, साथ नहीं छोड़ती हैं बेटियाँ,
मिलता है हर प्यार बेटे को, सिसकती रहती है बेटियाँ,
करे हर गलती माफ बेटे की, दोषी क्यों ठहरायी जाती हैं बेटियाँ,
बसे सबके प्राण बेटे में, क्यों रात से भी काली हैं बेटियाँ,
रखते हैं संभाल कर बेटे को, अपनो से बेगानी कर दी जाती हैं बेटियाँ,
निकम्मा लाख हों बेटे, मगर कोठो पर क्यों नचायी जाती हैं बेटियाँ,
घर करते हैं बरबाद बेटे, फिर भी घर की इज्जत बनाये रखती हैं बेटियाँ,

काजल शाक्य

बी.एस.सी. द्वितीय वष

कौन क्या है

(1) झगड़ा – वकील का कमाऊ बेटा।
(2) स्वप्न – बिना पैसे की फिल्म।
(3) चाय – कलयुग का नाश्ता
(4) मेहनत – गरीब का नाश्ता।
(5) साँप – शंकर भगवान का नेकलेस।
(6) नेता – झूठे वादों की मशीन
(7) दहेज – ससुराल में रहने का किराया।
(8) वकील – गुनाहगार का भगवान।
(9) शमशान – दुनिया का अन्तिम स्टेशन।
(10) डॉक्टर – यमराज का दुश्मन।
(11) मृत्यु – बिना टिकट स्वर्ग की यात्रा।
(12) आँसू – स्त्री की तलवार।
(13) स्कूल – पाँच घण्टे की जेल।
(14) सास – बहू की C.I.D.
(15) चिन्ता – वजन कम करने की सस्ती दवा।
(16) ताला – बिना वेतन का चौकीदार।
(17) होटल – बीमारी खरीदने की दुकान।
(18) चश्मा – जादू की आँख।
(19) रविवार – जेब खाली करने का दिन।
(20) प्रसाद – भगवान को रिश्वत देना।

रानी मिश्रा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

इण्टरव्यू

इंटरव्यू देने पहुँचा
हरियाणा का एक युवा बेरोजगार।
एक पोस्ट के लिए,
आये थे अस्सी उम्मीदवार।
किसे रखना था यह बात तय थी,
इसीलिये चयनकर्ताओं के सवालों में न सुर, न ताल और न लय थी।

एक चयनकर्ता ने
हरियाणवी छोरे से पूछा ,
बताओ ताजमहल कहाँ है ?
हरियाणवी छोरा बोला
जी रोहतक में
बहुत अच्छा बहुत अच्छा
इतना भी नहीं जानता,
नौकरी क्या खाक करेगा।
हरियाणवी छोरा बोला,
आगरे में बताऊँ
तो क्या रख लेगा।

किशन कुमार सागर
बी.एस.सी. प्रथम वष

बेटी की चिट्ठी

उसी दर्द से मैं जन्मी उसी दर्द से भाई।
भाई दुलारा आँख का तारा, मैं क्यों हुई पराई॥

सारे व्रत-उपवास तुम्हारे, भैया मेरी उमर लगे।
सौर ग्रह से मुझे मारने, जीवन भर यमदूत चले॥

एक कदम मैं आगे बढ़ती, दो कदम पीछे हट जाती।
बेटी की राहों में दुनिया, कितने रोड़े अटकाती॥

पढ़ना लिखना मैं चाहूं, पापा मुझको पढ़ने दो।
भैया के जैसा ही मुझको, पढ़ लिखकर कुछ बनने दो॥

भैया एम.बी.बी.एस. कर लेता, मैं क्यों बी.ए.पास।
इस डिग्री के साथ नहीं, किसी जगत की आस॥

बी.ए. किया विदेश ब्याही, माँ ने पूछेहाल।
चक्की के पाटों में, पिसकर बेटी है बेहाल॥

बेटी की बिटिया जब जन्मी, माँ फिर रोई जार-जार।
बेटी के पलकों में उमड़े, कितने सपने बार-बार॥

लक्ष्मी का है रूप कहो, या दुर्गा का अवतार।
इस बेटी का नहीं कहीं है आदर और सत्कार॥

श्वेता
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

चुटकले

1. अन्धी- अरे वह कितना अच्छा फूल लगा है?

   लूली- चलो उसे तोड़ लें।

   लंगडी- भाग कर चलो,

   गंजी- इसे मेरे सिर पर लगा दो।

2. गंजा- कहाँ मेरे सिर पर चढ़े आ रहे हो?

   युवक- तेरे सिर पर क्या मैं फिसलने के लिए चढूँगा।

3. सास बहू से-

   सास- बहू खाना बना लिया, मुझे बड़ी तेज भूख लगी है?

   बहू - नहीं।

   सास- क्यों?

   बहू- क्योंकि आप सारा खा जायेंगी।

4. गंजा (लगड़े से)- उस मोटर साइकिल वाले ने मेरे सिर पर मारा।

   लगड़ा (अंन्धे से)- अगर मैं चाहू तो उसे भाग कर पकड़ सकता हूँ।

   अन्धा (दोनों से)- भागने की कोई जरूरत नहीं मैने उसकी गाड़ी का नम्बर नोट कर लिया है।

विजेन्द्र सिंह शाक्य
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

मेरी नई पहचान

मैंने बनाई अपनी नई पहचान,
जिसे सबने दिया सम्मान।
जिसे किसी ने ना था जाना,
आज सारी दुनियाँ जाने,
फिर भी ना आया मुझे अभिमान।
किसी के रोके से ना रूकी मैं,
किसी के टोके से ना रूकी मैं,
मैं थकी फिर से चली,
मैं गिरी फिर से उठी,
फिर भरी मैंने उड़ान,
सपनों मैं पंख लगा के चली,
सपना सच करने की चाहत मिली,
आई मुसीबत बहुत सी,
पर मैं किसी से भी ना डरी,
जब किया सच सपने को,
तब बनी मेरी नई पहचान।

प्रिया वर्मा
बी०एस० प्रथम वर्ष

बेटियाँ

ओस की बूँद–सी होती हैं बेटियाँ,
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती हैं बेटियाँ।
रोशन करेगा बेटा एक ही कुल को,
दो–दो कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ।
कोई नहीं है दोस्तो एक दूसरे से कम,
हीरा अगर है बेटा तो मोती हैं बेटियाँ।
चलती रहेगी खुद तो काँटों की राह पर,
पर औरों के लिए फूल बोती हैं बेटियाँ।

कु० शिवानी
B.Sc. I Year

2 अक्टूबर

आज के दिन दो फूल खिले थे, गाँधी और एक लाल।
भक्त तुम्हारे तुम्हें पुकारें, आओ गाँधी लाल।
देश में फैली तंगी, देखो गाँधी के संगी।
अफ्रीका में जाकर तुमने, भेदभाव को मिटाया।
भारत लौटे जिद जो ठानी, साबरमती के लाल।
देश से मारे फिरंगी, देखो गाँधी के संगी।
मानवता के बने पुजारी, हाथ मे लिये कटारी।
घर–घर होता खून खराबा, करते रोज हलाल।
भयी कैसी मति भंगी, देखो गाँधी के संगी।
खानपान सम्मान आदि का,बिल्कुल किया सफाया।
भूल गये अपनी मर्यादा, देख के हुआ मलाल।
आज सूरत है नंगी, देखो गाँधी के संगी।

पुष्पेन्द्र कुमार
एम.ए. हिन्दी

तीन बातें

1. तीन के लिए लड़ो- आजादी, ईमान, इंसाफ।
2. तीन के लिए मर मिटो- धर्म, देश, दोस्त।
3. तीन के लिए हमेश इज्जत करो- माँ, बाप, उस्ताद।
4. तीन से कभी मजाक न करो- विधवा, यतीम, अनपढ़।
5. तीन से दूर भागो- आलस्य, खुशामद, बकवास।
6. तीन से हमेशा प्यार करो- इंशानियत, सराफत, सादगी।
7. तीन चीजों से बचना चाहिए- बुरी संगत, स्वार्थ, निन्दा।
8. तीन चीजों में मन लगाना चाहिए- ईश्वर, मेहनत, शिक्षा।
9. तीन चीजों का आदर करना चाहिए- माता-पिता, मेहमान, गुरू।
10. तीन चीजें जिंदगी में एक बार मिलती हैं- माता-पिता, मानव जन्म, जवानी।
11. तीन बातें कभी वापस नहीं आती- कमान से निकला तीर, जवान से निकली बात, शरीर में प्राण
12. तीन बातें हमेशा वश में रखनी चाहिए- मन, कार्य, लोभ।

दिव्या मिश्रा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

बुरे कर्म न करो

अरे अभिमानी मत कर नादानी- अरे अभिमानी मत कर नादानी
मत बुरे करम कर वन्दे वरना पछतायेगा।
भगवान की नजर से न बच पायेगा, तू न बच पायेगा।

जब जायेगा तू वन्दे यम के दरबार में,
न बनेगा साथी तेरा कोई संसार में,
ये कुटिल कबीला तेरा न तुझे बचायेगा,
भगवान की नजर से न बच पायेगा, तू न बच पायेगा
मत बुरे करम कर वन्दे वरना पछतायेगा।

किसके लिये करता है, तू छल और बेईमानी।
कोई नहीं है तेरा ये, बात न पहचानी।
अपने कर्मों का बन्धु, फल खुद ही पायेगा।
भगवान की नजर से न बच पायेगा, तू न बच-पायेगा
मत बुरे करम कर वन्दे वरना पछतायेगा।

अरे अभिमानी मत कर नादानी-अरे अभिमानी मत कर नादानी
मत बुरे करम कर वन्दे वरना पछतायेगा
भगवान की नजर से न बच पायेगा, तून बच पायेगा।

रीमा राठौर
बी.ए. तृतीय वर्ष, सुलखनपुर

राष्ट्र-गीत

सुनले बापू ये पैगाम मेरी चिट्ठी ये तेरे नाम।
चिट्ठी में सबसे पहले लिखती हूँ तुझको राम-राम।
सुनले बापू ये पैगाम, मेरी चिट्ठी ये तेरे नाम।

काला धन काला व्यापार, रिश्वत का ये गरम बाजार
सत्य अहिंसा करें पुकार, टूट गया चरखे का तार।
सुनले बापू ये पैगाम, मेरी चिट्ठी ये तेरे नाम।

तेरे पूत बिगड़ गये बापू दारू सिगरेट हुई हवाले,
तेरी इस कठिन तपस्या का निकला है कैसा परिणाम,
सुनले बापू ये पैगाम, मेरी चिट्ठी ये तेरे नाम।

प्रान्त से प्रान्त टकराती है भाषा, पर भाषा की लात
तेरे हिन्दी के पावों में अंग्रेजी ने डाली डोर
सुनले बापू ये पैगाम, मेरी चिट्ठी ये तेरे नाम।

राम राज की तेरी कल्पना, हवा में हो गयी अब काफूर,
नेता हो गये दल बदलू, देश की पगड़ी रहे उछाल,
सुनले बापू ये पैगाम, मेरी चिट्ठी ये तेरे नाम।

रीमा राठौर
बी.ए.तृतीय वर्ष,

वन्दना

विनती करती आपसे माँ शारदे,
हमको विद्या बुद्धि का उपहार दे।

(1) तेरा श्वेत कमल सिंहासन, हर दिल में तेरा आसन,
तेरे नाम की महिमा गाये, इस धरती का कण-कण
प्यार दुलार दे,
हमको विद्या बुद्धि का उपहार दे।

(2) मेरे कंठ में वास माँ करना, जीवन खुशियों से भरना,
जब हाथ हो तेरा सिर पर, फिर अज्ञान से क्या डरना,
भव से माँ तार दो
हमको विद्या बुद्धि का उपहार दे।

(3) वीणा की तान तुम्ही हो, जीवन झंकार तुम्ही हो,
वेदों का सार तुम्ही हो, सबकी पतवार तुम्ही हो,
दर्श एक बार दो
हमको विद्या बुद्धि का उपहार दे।
विनती करती आपसे माँ शारदे
हमको विद्या बुद्धि का उपहार दे।

खुशबू यादव
बी.ए., तृतीय वर्ष

महत्वपूर्ण तथ्य

सुमिलेश नन्दिनी
बी0ए0 प्रथम

(1) दूसरों की अपेक्षा यदि सफलता आपको देर से मिले तो, निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि मकान बनने से ज्यादा समय महल बनने में लगता है।

(2) सिर्फ आसमान छू लेना कामयाबी नहीं, असली कामयाबी तो वो है, कि आसमान भी छू लो और पाँव भी जमीन पर हो।

(3) मंजिल इंसान के हौसले आजमाती है, सपनों के पर्दे आँखों से हटाती है, किसी भी बात से हिम्मत ना हारना, ठोकर ही इंसान को चलना सिखाती है।

(4) हर किसी को अपने ज्ञान का अभिमान तो होता है, किन्तु अपने अभिमान का ज्ञान नहीं होता।

(5) जिन्दगी में कभी उदास मत होना, कभी किसी बात पर निराश मत होना, ये जिन्दगी एक संघर्ष है चलती ही रहेगी, कभी अपने जीने का अंदाज मत खोना।

(6) मीठा बोलिए क्योंकि, अल्फाज में भी जान हेाती है, इन्हीं से दुआ व अजान होती है, ये मन के समन्दर के वो मोती है, जिनसे ही इंसान की पहचान होती है।

(7) अच्छे इंसान सिर्फ और सिर्फ कर्म से पहचाने जाते हैं, क्योंकि अच्छी बातें तो बुरे लोग भी कर लेते हैं।

(8) मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।

(9) जीत निश्चित हो तो कायर भी लड़ सकते हैं, बहादुर वह कहलाते हैं जो हार निश्चित है पर मैदान नहीं छोड़ते।

(10) लक्ष्य को सदैव सामने रखो सफलता का यही रहस्य है।

●●

चुटकुले

ज्योती
बी.ए., तृतीय वर्ष

माँ- इन लड्डुओं को ऐसी जगह रखो जहाँ चीटियाँ भी न पहुँच सकें, थोड़ी देर बाद माँ ने पूछा- लड्डू कहाँ रख दिये?
बेटा- पेट में क्योंकि वही एक जगह थी जहाँ चीटियां नहीं पहुँच सकतीं थीं।

एग्जामिनर- साइन्स के एग्जामिनर ने एक छात्र से कहा- चिड़िया के पैर देखो और नाम बताओ।
छात्र- मुझे नहीं पता
एग्जामिनर- तुम फेल हो गये तुम्हारा क्या नाम है।
छात्र- मेरे पैर देखकर जान लो बताने की क्या जरूरत है।

सन्ता- हे भगवान! पंजाब को अमेरिका की राजधानी बना दो।
बन्ता- पर क्यों यार
सन्ता- अरे चुप कर मैंने पेपर में लिखा है।

बेटा- पापा, सब लोग चाँद पर जाना चाहते हैं, मैं आपको सूरज पर जाकर दिखाऊँगा।
पापा- क्यों पागलों जैसी बात करते हो वहाँ जाकर तुम जल नहीं जाओगे।
बेटा- जलूँगा तब जब दिन में जाऊँगा, मैं तो रात में जाऊँगा।

पहला शराबी- दो शराबियों ने तालाब में चाँद की परछांई देखी और पूछा ये क्या है।
दूसरा- चाँद है।
पहला शराबी- चल भैया घर हम मजाक-मजाक में चाँद तक चले आये।

भक्त- भक्त प्रतिदिन भगवान गणेश की पूजा करता था।
गणेश जी- बताओ क्या चाहते हैं।
भक्त- एक कार चाहिये।
गणेश जी- अरे मूर्ख मैं खुद चूहे की सवारी करता हूँ, तुझे कार कहाँ से दूँ।

लेडी डॉ०- तुम रोज क्लीनिक के बाहर खड़े होकर औरतों को क्यों घूरते हो।
आदमी- जी, आपने ही तो बाहर लिखा है औरतों को देखने का समय ९ से ११ है।

अमन- अमन एक तूफान में फँस गया उसने झट से एक बड़े से पेड़ को पकड़ लिया। तूफान खत्म होने पर माथे से पसीना पोंछने के बाद बोला- मैं इस पेड़ को सहारा ना देता तो जरूर गिर जाता।

पिता- ये कैसी तीली लाये हो बेटा एक भी नहीं जली।
बेटा- यह कैसे हो सकता है पापा मैं तो सारी तीलियाँ चैक करके लाया हूँ।

प्रार्थना

सुमिलेश नन्दिनी
बी०ए० प्रथम

मैंने भगवान से माँगी शक्ति
उसने मुझे दी कठिनाईयाँ,
हिम्मत बढ़ाने के लिये।
मैंने भगवान से माँगी बुद्धि,
उसने मुझे दी उलझनें,
सुलझाने के लिये।
मैंने भगवान से माँगी समृद्धि
उसने मुझे दी समझ
काम करने के लिये।
मैंने भगवान से माँगा प्यार,
उसने मुझे दिये दुःखी लोग,
मदद करने के लिये।
मैंने भगवान से माँगी हिम्मत,
उसने मुझे दी परेशानी।
उबर पाने के लिये।
मैंने भगवान से माँगा वरदान,
उसने मुझे दिये अवसर,
उन्हें पाने के लिये।
वो मुझे नहीं मिला जो मैंने माँगा था।
मुझे वो मिल गया जो मुझे चाहिये था।

●●

स्वस्थ जीवनयापन में शारीरिक शिक्षा की भूमिका

डा0 रनवीर सिंह
सहायक प्रोफेसर
अध्यक्ष शारीरिक शिक्षा विभाग

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इसके लिये शरीर को स्वस्थ रखना अनिवार्य है और स्वस्थ होने का प्रमाण मात्र उसके भौतिक स्वरूप के स्वस्थ होने का संकेत नहीं देता बल्कि शरीर के प्रत्येक अंग का समय-समय पर समुचित विकास व समुचित कार्य ही सवस्थ होने का परिचायक है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति का पूर्णरूप से विकास करना होता है चाहे वह शारीरिक क्षेत्र हो, भौतिक क्षेत्र हो या उसके आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में हो अर्थात् सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का अभिप्राय है। शारीरिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसमें शरीर से सम्बन्धित अनेकों प्रकार के विकास को रूपायत किया जाता है।

शारीरिक शिक्षा के द्वारा ही हम अपने शरीर को स्वस्थ सुदृढ़ तथा फुर्तीला बना सकते हैं, परन्तु इसके लिए यह विचार करना आवश्यक है कि यह शिक्षा कहाँ और किस प्रकार प्राप्त की जाए। वर्तमान परिवेश में व्यक्ति का मस्तिष्क तनाव से परिपूर्ण दिखाई दे रहा है। कहीं आर्थिक संकट, तो कहीं सामाजिक चिंतन और बेरोजगारी की समस्या अधिकतर लोगों के शरीर को अस्वस्थ बनाती चली जा रही है। व्यक्ति निरन्तर सुख व शांति की प्राप्ति करने के लिये हर क्षण परेशान दिखाई दे रहा है, जिससे उसकी अस्वसथता और भी बढ़ती चली जा रही है। इस तनावपूर्ण स्थिति में यह आवश्यक है कि हम योग-शिक्षा के द्वारा, भ्रमण के द्वारा और आपसी मानसिक चिन्तन के द्वारा एक दूसरे के तनाव को कम करें। श्रम निष्ठा के भाव को जागृत कर लोगों में समाज-सेवा की भावना जागृत की जाऐ। उसके समय का सदुपयोग कैसे हो, उसके प्रति लोगों को उनमुख किया जाए। इससे लोगों में आपसी प्रेम, सहष्णुता व अहिंसा की भावना का विकास होगा। व्यक्तियों में चारित्रिक गुणों का समावेश होगा। जातिभेद, रंगभेद, क्षेत्रवाद, धर्मभेद आदि सभी संकुचित मानसिकताओं का अन्त होगा और लोगों में काम करने की भावना तथा प्रतियोगिताओं में भी स्वस्थ मानसिकता के साथ भागीदारी करने की प्रवृति दिखाई देगी।

आज यह आवश्यक हो गया है कि हम लोगों में इन मानवीय गुणों का विकास करें। मन्द बुद्धि वाले तथा विकलांग और विकृत युवक-युवतियों को शारीरिक शिक्षा द्वारा संतुलित स्वस्थता के प्रति उनके अन्दर भावना जागृत कर सकते हैं। हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक परिवेश में शारीरिक शिक्षा एक अनिवार्य शिक्षा है और इस शिक्षा के नियोजन, संचालन एवं अनुकरण के द्वारा ही हम अपने को स्वस्थ रखते हुए दूसरे का स्वस्थ रहने की सलाह दे सकते हैं।

शारीरिक शिक्षा का सामान्य जीवन में बहुत महत्व है, निम्नलिखित क्षेत्रों में शारीरिक शिक्षा प्रभावी है-

1. शिक्षा 2. व्यक्तित्व का विकास 3. समाज का विकास

4. आधुनिक विश्व में चलने की क्षमता

1. शिक्षा के क्षेत्र में शारीरिक शिक्षा का महत्व विषय का प्रादुर्भाव अठारहवीं शताब्दी की देन है जब फ्रान्स के समाज सुधारक रूसो ने कहा था कि जब तक बालपन से ही बच्चों को शारीरिक शिक्षा नहीं सिखाई जाती तब तक समाज पूर्णतः विकसित नहीं हो सकता है। वे बच्चों में चारित्रिक एवं सामान्य विकास का आधार ही शारीरिक शिक्षा को मानते थे। शारीरिक शिक्षा के विकास के साथ-साथ मनोवृत्तियाँ परिवर्तित होती हैं, व्यक्ति की याद करने की क्षमता का तीव्र विकास होता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में कुशलता आधार रूप में उसे शिक्षित करने में सहायक होती है। वह शारीरिक शिक्षा के आधार पर ही जीवन का एक उद्देश्य बनाने में सफल हे पाता है। इसी शारीरिक शिक्षा के आधार पर व्यक्ति जीवन में बड़े से बड़ा, दुरूह से दुरूह कार्य आसानी से करने में सक्षम हो पाता है। अतः शारीरिक शिक्षा वह नींव अथवा खम्भा है जिस पर जीवन रूपी महल का आसानी से निर्माण हो जाता है।

जिस प्रकार शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न परिवर्तन लाने की क्षमता होती है (यद्यपि शिक्षा के गुण कभी दर्शित होते हैं और कभी अदृश्य रहते हैं) इसी प्रकार शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत दर्शित एवं छिपी हुई कुशलताऐं समाहित होती हैं। शारीरिक शिक्षा से चारित्रिक बल, आत्मबल, सुदृढ़ विचार, संवेदनशीलता, विचार संयमितता एवं अनेकों ऐसे गुण व्यक्ति के अन्दर आ जाते हैं जो शिक्षा क्षेत्र के लिए आधार का कार्य करते हैं एवं जीवन को सुखमय एवं कंटकमुक्त बनाते हैं।

2. व्यक्तित्व के विकास में शारीरिक शिक्षा का महत्व छिपा हुआ नहीं है। वैश्वीकरण के इस युग में व्यक्तित्व का विकास एक महत्वपूर्ण घटक है तथा व्यक्तित्व के विकास का आधार शारीरिक शिक्षा है। एक व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास बिना शारीरिक शिक्षा के संभव नहीं है। शक्ति का विकास, शारीरिक सुदृढ़ता, मन की सुदृढ़ता, भविष्य के लिए सोचने की क्षमता आदि कई ऐसी विधाएँ हैं जिनके लिए शारीरिक शिक्षा अत्यन्त उपयोगी है। शारीरिक शिक्षा की महत्ता को किसी भी प्रकार कम करके नहीं आंका जाना चाहिए क्योंकि यह मनुष्य के सम्पूर्ण विकास के लिए सुस्पष्ट आधार प्रस्तुत करता है एवं मानव के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

3. एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए भी शारीरिक शिक्षा अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होती है। प्रत्येक राष्ट्र अपने अन्दर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने की प्रबल इच्छा रखता है यही विचारधारा किसी राष्ट्र को आर्थिक सांस्कृतिक एवं अन्य विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी लाने के लिए सहायक होती है। जिसे देश का बालपन तथा जवानी स्वस्थ होगा एवं विकास के विचारों से ओतप्रोत होगा साथ ही चारित्रिक क्षमतावान होगा, वह देश सदैव सशक्त होगा। अधिकतर कार्यो में हाथ बँटाने वाली युवाशक्ति जहाँ कमजोर एवं चरित्रहीन होगी वहीं से राष्ट्र का कमजोर होना प्रारम्भ हो जाएगा। शारीरिक शिक्षा, चरित्र बल, स्वस्थ्य शक्ति, मनोबल को बढ़ाती है अतः शारीरिक शिक्षा की व्यक्ति के विकास एवं समाज के विकास में प्रदत्त भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है यद्यपि इस संदर्भ में भारत सरकार एवं प्रदेश सरकारों ने शारीरिक शिक्षा के प्रसार के लिए विभिन्न योजनाएँ बनायी हैं। यदि इस सभी योजनाओं पर ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक अमल किया जाए तो देश

की प्रगति को कोई रोक नहीं पायेगा परन्तु निष्ठापूर्वक एवं ईमानदारी से योजनाओं का क्रियान्वन करना आवश्यक है। शारीरिक शिक्षा की महत्ता को इन पंक्तियों से जाना जा सकता है :

"The battle of Waterloo was won on the play fields of Eton and Harrow".

4. आधुनिक समाज के निर्माण में शारीरिक शिक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है। आज विश्व एक गाँव सा बन गया है। कहीं भी किसी भी व्यक्ति से सम्पर्क किया जा सकता है, उसे सन्देश भेजा जा सकता है एवं उसे समस्त जानकारी मिनटों में दी जा सकती है। आज के इस तेज दौड़ते युग में यदि हम अपने आपको विकास की उसी गति से दौड़कर नहीं पकड़ेंगे तो हम बहुत पीछे रह जायेंगे।

वर्तमान युग में औद्योगीकरण, ओटोमोबाइल्स, वन कटाई आदि क्रियाओं के कारण पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है तथा स्वास्थ्य की सुरक्षा आज एक बड़ी समस्या बन चुकी है। ऐसे समय में शारीरिक शिक्षा के लिए अपना विशिष्ट महत्व है। कुछ पंक्तियां महत्वपूर्ण हैं –

"We have become a sitting race and it is doubtful whether a sitting race can long surnve".

यह कथन स्वयं ही यह प्रेरणा देता है कि जब हम अपनी विचारधारा अर्थात् वैचारिक दृश्टिकोण में शारीरिक शिक्षा को समाहित नहीं कर लेते तब तक हमारी स्वास्थ्य समस्याओं का निदान नहीं होगा, अर्थात् समाज का विकास सम्भव नहीं है अर्थात् यदि हमें आज उत्पन्न चुनौतियों का मुकाबला करना है तो हमें शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेना होगा तथा जीवन के प्रत्येक पड़ाव में शारीरिक शिक्षा पर बल देना होगा।

केन्द्र व राज्य सरकारें यदि पूर्व मनोयोग से शारीरिक शिक्षा विकास करने की योजनाएँ निमित करती हैं जो नागरिकों का यह कर्तव्य है कि वह ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक उन योजनाओं का पालन परिपालन करें तथा स्वस्थ मन, स्वस्थ तन, स्वस्थ देश एवं स्वस्थ समाज का निर्माण करें जिससे देश की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अभिवृद्धि हो।

●●

बहाने V/S सफलता

1. मुझे उचित शिक्षा लेने का अवसर नहीं मिला,
   उचित शिक्षा लेने का अवसर फोर्ड मोटर्स के मालिक हेनरी फोर्ड को भी नहीं मिला।
2. मैं इतनी बार हार चुका, अब हिम्मत नहीं,
   अब्राहम लिंकन 15 बार चुनाव हारने के बाद राष्ट्रपति बने।
3. मैं अत्यंत गरीब घर से हूँ,
   पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम भी गरीब घर से थे।
4. एक दुर्घटना में अपाहिज होने के बाद मैं हिम्मत हार गयी,
   प्रख्यात नृत्यांगना सुधा चन्द्रन के पैर नकली हैं।
5. मुझे बचपन से मंद बुद्धि कहा जाता है,
   थॉमा अल्बा एडीसन को भी बचपन में मंद बुद्धि कहा जाता था।
6. बचपन में ही मेरे पिता का देहांत हो गया था,
   प्रख्यात संगीतकार ए.आर.रहमान. के पिता का भी देहांत बचपन में ही हो गया था।
7. मुझे बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी,
   लता मंगेश्कार को भी बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी थी।
8. मेरी लम्बाई बहुत कम है,
   सचिन तेंदुलकर की भी लम्बाई कम है।
9. मै एक छोटी सी नौकरी करता हूँ,
   धीरू भाई अम्बानी भी छोटी नौकरी करते थे।
10. मेरे पास बहुमूल्य आइडिया है, पर लोग अस्वीकार करते हैं,
    जैरॉक्स फोटो कॉपी मशीन के आइडिया को भी ढ़ेरो कंपनियों ने अस्वीकार किया था पर आज परिणाम सामने है।
11. मेरे पास धन नहीं,
    इन्फोसिस के पूर्व चेयरमैन नारायण के पास भी धन नहीं था, उन्हें पत्नी के गहने बेचने पड़े।
12. मुझे ढ़ेरों बीमारियाँ हैं,
    वर्जिन एयरलाइंस के प्रमुख को अनेक बीमारियाँ थी।

आज आप जहाँ भी हैं या कल जहाँ भी होंगे, इसके लिऐ आप किसी और को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते, इसलिऐ आज चुनाव करिये -

सफलता और सपने चाहिए, या खोखले बहाने।

कु. सुमलेश नंदिनी
बी.ए. प्रथम वष

जीवन – लक्ष्य

कु. नम्रता चौहान
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

यदि जीवन में है कोई लक्ष्य,
तो घबराना छोड़ दो।
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
फूलों से सीखो जीवन में,
कभी न घबराना,
गमों की दुनियाँ में, सदैव सीखो मुस्काना
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
यदि छोटा है, कार्य तो कभी न शरमाना
मिलेगी तुम्हें मंजिल इस संसार में
जो होगा तुम्हारा आशियाना
बढ़े चलो - बढ़े चलो
कर्म की कर पूजा, जीवन हमारा ध्येय हो।
न पीछे मुड़कर देखेंगे,
यही ही हमारा लक्ष्य हो।
बढ़े चलो - बढ़ चलो।
देश की खातिर मर मिटना;
इसमें हमारी शान हो।
नेक इन्सान के रूप में,
समाज में एक पहचान हो।
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
श्रेष्ठ कामों से मिलता है,
मानव का जीवन।
कर्मों को करने के लिए
मानव करता रहा प्रयत्न।
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
समझो न मंजिल को,
एक छोटी चोटी के समान;
मन में है यदि लगन तो पूरा होगा अरमान।
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
श्रेष्ठ लक्ष्य ही बनायें सार्थक जीवन,
सम्मान के साथ मिलेगा उपवन।
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
हो अगर मंजिल के राही, जो राह से ना भटकना,
यदि जीवन लक्ष्य का है हासिल करना,
जो प्रयत्न की राह पर है चलना।
बढ़े चलो - बढ़े चलो।
यदि जीवन में है कोई लक्ष्य,
तो घबराना छोड़ दो।
बढ़े चलो - बढ़े चलो
कदम मिलाकर बढ़े चलो।

●●

नश्वर जीवन अमर कहानी

रंजना शाक्य
एम.ए. (उ.) संस्कृत

'जीवन' एक ऐसा शब्द है जो दिखने में जो छोटा परन्तु अपने आप में एक पूरा इतिहास, वर्तमान और भविष्य समेटे हुये है। जन्म लेकर, इस दुनियाँ में रह कर संघर्ष करते रहना ही जिन्दगी है। यह संसार वस्तुत: उन्हीं का है, जो अमृत मन्थन करते हैं, जो रेत की छाती फाड़कर और पर्वत का कलेजा चीर कर, जल से धरती के सूखे अंचल को हरा-भरा कर देते हैं। समय उन्हीं के रथ-अश्वों को हाँकता है, जो कर्मण्य है। ऐसे ही पुरूषों ने इतिहास का निर्माण किया। मानव जीवन ८४ लाख योनियाँ में सर्वश्रेष्ठ है। इस जीवन में सुख-दु:ख, मेहनत-आराम, अमीरी-गरीबी, प्रशंसा-निंदा, अच्छा-बुरा, मान-अपमान, ईर्ष्या-जलन सब सहन कर आगे बढ़ना पड़ता है। जो मनुष्य ऐसा नहीं कर पाते वो मौत को गले लगाने का प्रयास करते हैं मगर वे यह बात भूल जाते हैं कि परिवर्तन जो प्रकृति का नियम है। यदि आज हमें कष्ट मिले हैं जो कल खुशियों का भी आगाज होगा। इसीलिये कहा गया है कि -

आग में तपने के बाद ही सोने में निखार आता है,
ठोकर लगने के बाद ही इंसान में सुधार आता है
गम की नदियों में थोड़ा डूब लो लोगो,
इन कष्टों के बाद ही तो असली संसार आता है।

सम्पूर्ण जीवन संघर्षों की कहानी प्रतीत होता है। उद्यम एक ऐसी चाबी है जो भाग्य के द्वार खोलती है। इसलिये प्रत्येक प्राणी को अपना कर्म करना चाहिये।

गाँधी जी ने कहा था-''जो प्राणी अपने हिस्से का कार्य किये बिना ही भोजन पाते हैं, वे चोर कहलाते हैं।''

उद्योगी पुरूष सिंह लक्ष्मी का उपार्जन करते हैं जबकि कायर भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं। इसी प्रकार 'पंचतंत्र' में कहा गया है कि कार्य मनोरथ से नहीं उद्यम से सिद्ध होते हैं जैसे- सोते हुये सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं जाते -

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै:।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रतिशन्ति मुखे मृग:॥

आलस्य वह राज रोग है, जो कभी ठीक नहीं होता और लगातार समय पाकर बढ़ता ही रहता है।

आचार्य विनोबा भावे जी ने कर्म की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये कहा था कि -

''कर्म ही मानव जीवन को पवित्र एवं अहिंसक बनाता है।''

कर्म करने के लिये आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प ये दो बातें अतिआवश्यक हैं। दृढ़ संकल्प के बिना किया गया कार्य उस नमक रहित भोजन की तरह होता है जो भूख तो मिटा देगा मगर पूर्ण सन्तुष्टि नहीं दे सकेगा। दृढ़ संकल्प जो एक ऐसा हथियार है जिसके द्वारा हम पत्थरों को भी काट सकते हैं और मंजिल तक जा सकते हैं महात्मा गाँधी जी ने भी कहा है कि - ''दृढ़ संकल्प एक गढ़ के समान है जो कि भयंकर प्रलोभनों से हमें बचाता है और डाँवाडोल होने से हमारी रक्षा करता है।''

थोड़े से कष्टों को देख कर हार मानने वाले लोग कायर होते हैं और ऐसे लोग मौत से पहले हजारों बार मरते हैं। हर व्यक्ति के हृदय में परोपकार की भावना होनी चाहिये क्योंकि-इस नश्वर जीवन का कोई पता नहीं कि कब साथ छोड़ दे।

न जाने कब मौत का पैगाम आ जाये,
न जाने कब जिन्दगी की आखिरी शाम आ जाये,
हमें जो उस वक्त की तलाश में रहना चाहिये,
जब हमारी टूटी फटी जिंदगी किसी के काम आ जाये।

हमें तो उस फूल की तरह बनना चाहिये जो मसल जाने पर भी हाथों में अपनी सुगन्ध छोड़ देता है। किसी व्यक्ति ने एक बार जिन्दगी से पूछा कि-तुम इतनी कठिन या मुश्किल क्यों हो? तो जिन्दगी ने मुस्कराते हुये उत्तर दिया कि तुम सहज व आसान चीजों की कद्र कहाँ करते हो? इसीलिये मैं अपना ऐसा रूप धारण करती हूँ।

अब मैं अपनी लेखनी को विराम देते हुये आप सभी लोगों से निवेदन करती हूँ कि इस क्षणिक एवं नश्वर जीवन को पूर्ण आनन्द के साथ व्यतीत करें। सभी प्राणियों की सेवा करना हमारा फर्ज ही नहीं बल्कि कर्तव्य भी है। इस जीवन को मुस्करा कर व्यतीत करना ही ईश्वर की सच्चे अर्थों में पूजा है।

जिंदगी एक अभिलाषा है
अपने आप में स्वयं एक परिभाषा है
संभल गई तो जिन्दगी, जिन्दगी है
वरना सिर्फ और सिर्फ एक तमाशा है।

इस क्षणिक और नश्वर जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिये जिससे हमें लोगों की दुआयें और आशीर्वाद मिले। हम अपने कर्मों के द्वारा अपना नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर दें। यही ईश्वर की इच्छा एवं महापुरूषों की प्रेरणा है। समय के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिये क्योंकि अगर हम समय का सदुपयोग नहीं करेंगे तो समय हमें पतन के गर्त में धकेल देगा। इसलिये कहा भी गया है कि -

'Time and tide wait for none'.
(समय और तूफान किसी का इंतजार नहीं करते।)

प्रत्येक प्राणी को अपने जीवने की कद्र करते हुये ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ वरदान मान कर विकास के पथ पर निरन्तर बढ़ते रहना चाहिये, क्योंकि रूकना मौत और चलते रहने का नाम ही जीवन है ठहरे हुये पानी में गंदगी अपना निवास स्थान बना लेती है, परन्तु चलते या बहते हुये पानी में स्वच्छता का निवास स्थान होता है।

●●

आत्मविश्वास क्या है?

मनुष्य कितना ही विद्वान, गुणवान
शक्तिशाली क्यों न हो, लेकिन
यदि उसमें आत्मविश्वास की भावना
नहीं है तो वह विद्वान होकर भी
मूर्खों जैसा जीवन बितायेगा।

बेटी की वेदना

बेटी तुमने जन्म लिया, मुझे बाबुल बना दिया
मैं भार तुम्हारा उठा न सका।
इसलिए पर घर विदा किया।
जब पर घर विदा किया।
तो माने गंगा नहा लिया।
पिता मैंने जन्म लिया तुम्हें बाबुल बना दिया।
तुम भार हमारा उठा न सके।
इसलिए पर घर विदा किया।
आपने घर से विदा किया।
पति ने जग से विदा किया।
दोनों ने अपना फर्ज अदा किया।
बाबुल भईया से कहना, कोई और बना ले बहना
अब कभी न हो सकेगा इस प्यारी बहन से मिलना
बंधवा के किसी से राखी कर लेना रक्षाबन्धन।
गरीबी में पली थी तेरे, आंगन की कली थी।
बेजान होकर रोये थे, जब निकली थी मेरी डोली
अब अर्थी निकलेगी आपके सामने।
बाबुल मैंने प्रेम ने जाना जीवन में।
क्योंकि मेरी मां छोड़ गई थी बचपन में।
जब से पीहर आई हूँ, हर पल सताई गई हूँ,
बाबुल पैसों के पीछे जिन्दा जलायी गई हूँ।

सरस्वती शाक्या
M.A.–I समाजशास्त्र

सदोपदेश

सरस्वती शाक्या

M.A.–I समाजशास्त्र

जिस आँगन में विलख रही हो,
पुत्र शोक से माता,
वहां पहुँचकर स्वाद जीभ का,
तुमको कैसे भाता।

नशा ये नाश कर देगा, फिरोगे दाने-दाने को,
हाथ में कटोरा होगा न देगा कोई खाने को।

वृक्ष भूमि का गहना है,
जन-जन से यह कहना है,
मत लो तुम वृक्षों की जान,
धरती होगी रेगिस्तान।

अगर रोकना है बर्वादी
बन्द करो खर्चीली शादी

जो चरित्र पर देते ध्यान,
वे बन जाते व्यक्ति महान।

कर्म तू करता नहीं, फल की करता चाह
क्या मंजिल मिल जायेगी, बिना चले ही राह।

कष्ट सहे बिन जगत में, सुख ना पावै कोई।
बिना तपाये अग्नि में, कनक न कुन्दन होई।।

मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं,
जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

जिन्दगी में कसम, कदम और कलम,
बहुत ही सोच समझकर उठाना चाहिये।

मेहनत वह सुनहरी चाबी है,
जो किस्मत के द्वारा खोल देती है।
जिन्दगी में हार कब तक आयेगी,
कभी न कभी हार भी हार जायेगी।
मुश्किलें दिलों के इरादे आजमाती है
स्वप्न के पर्दे निगाहों से हटाती है।
हौसला मत हार, अरे ओ गिरकर मुसाफिर,
मुश्किलें तो इंसान को चलना सिखाती हैं।
यदि हम जीवन में, समय संयम, विचार संयम
इन्द्रिय संयम, तथा अर्थ संयम का अभ्यास
करते रहे, तो सफलता सहज ही हमारे कदम चूमेगी।
जब तुम सफलता की ऊँचाइयों पर पहुँच जाओ,
तो यथार्थता के धरातल से अपने कदम डिगने मत देना।

●●

उन्नति के चार चरण

(१) समझदारी, (२) ईमानदारी, (३) बहादुरी, (४) जिम्मेदारी

ये चार चरण ऐसे हैं जिनका सद्प्रयोग सुनियोजन कर हर व्यक्ति प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता रह सकता है।

समझदारी सौभाग्य का प्रवेश द्वार है, बेवकूफी दुर्भाग्य का।

सरस्वती शाक्य
एम.ए. (पू.) समाजशास्त्र

लड़की का क्यों सम्मान नहीं

रामनिवास शाक्य
बी.ए. द्वितीय वर्ष

लडकों का तो, नाम जगत में,
लड़की का क्यों नाम नहीं।
ओ दुनियाँ वाले हमें बता दो
लड़की क्या इन्सान नहीं।।
अगर कहीं लड़का जन्मे,
तो खुशियाँ खूब मनाते हैं।
अगर, कहीं लड़की जन्में,
तो बुरा मुँह कर जाते हैं।।
लड़का का तो नाम जगत में,
लड़की का तो नाम नहीं,
ओ दुनियाँ वाले, हमें बता दो,
लड़की क्या इन्सान नहीं।।
लड़के को तो शिक्षा दिलाने विद्यालय भेजा जाता है,
और लड़की से घर का सारा काम कराया जाता है।
ओ दुनियां वाले हमें बता दो
लड़की क्या इंसान नहीं ।।
लड़की थी वो झाँसी की रानी,
जिसने रण संग्राम किया।
लड़की थी वो मीरा बाई,
जिसने भक्ति प्रसार का काम किया।
लड़का का तो नाम जगत में,
लड़की का क्यों नाम नहीं,
ओ दुनियां वालों हमें बता दो
लड़की क्या इंसान नहीं।।

●●

भारत माता

यह है अपनी भारत माता, सिर पर जिसके मुकुट हिमालय
चरणों में सागर लहराता, यह है अपनी भारत माता।
जिसकी साड़ी है हरियाली, भाँति-भाँति की फूलों वाली,
जिसके ऊपर नील पटल पर, फहर-फहर भगवा फहराता।
यह है अपनी भारत माता।।
जो माता सी दूध पिलाती, अन्न और फल फूल खिलाती,
श्वास श्वांस में मारुति जिसका, हम सबको जीवन दे जाता।
यह है अपनी भारत माता।।
इसका हम सम्मान करेंगे, माता जैसा ध्यान करेंगे,
जननी से भी बढ़कर इसका, है हम सबका प्यारा नाता।
यह है अपनी भारत माता, यह है अपनी भारत माता।।

जो है माँ

विमला देवी
बी.ए. तृतीय वर्ष

जिसने मुझे बनाया हर दर्द को सहकर
इस दुनियाँ में बुलाया, वो है माँ
जिसने मुझे चलना सिखाया
जिन्दगी के हर गम को खुशी-खुशी अपना बनाया वो है माँ।
धूप में खुद ही जलती रही,
मगर आँचल की छाँव में,
जिसने मुझे छुपाया, वो है माँ।
फिर क्यों इस दुनियाँ में,
माँ को भूल जाते हैं,
कामयाबी अपनाते ही,
माँ का साथ छोड़ जाते हैं।
ईश्वर को पूजते हैं,
पर भूलते हैं कि धरती पर,
ईश्वर का रूप है माँ।

शिक्षक

माता देती नवजीवन,
पिता सुरक्षा करते हैं।
लेकिन सच्ची मानवता,
शिक्षक जीवन में भरते हैं।।

सत्य न्याय के पथ पर चलना,
शिक्षक हमें बताते हैं।
जीवन झंझाओं से लड़ना,
शिक्षक हमें सिखाते हैं।।

ज्ञानदीप की ज्योति जलाकर,
मन आलोकित करते हैं।
विद्या का दीपक देकर,
शिक्षक, जीवन में सुख भरते हैं।

शिक्षक ईश्वर से बढ़कर हैं,
लोग यही बतलाते हैं।
सही मार्ग दिखलाकर शिक्षक,
ईश्वर तक पहुँचाते हैं।

जीवन में कुछ पाना है तो
शिक्षक का सम्मान करो।
शीश झुकाकर श्रद्धा से,
प्रतिदिन उन्हें प्रणाम करो।।

दस अनमोल बातें

(1) अवसर उनकी, मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद स्वंय नहीं करते।
(2) ''असंभव'' एक शब्द है, जो केवल मूर्खो के शब्द कोश में पाया जाता है।
(3) आत्मविश्वास सफलता का प्रथम रहस्य है।
(4) अध्ययन उल्लास का और योग्यता का कारण बनता है।
(5) जो अवसर को समय से पकड़ ले वही सफल होता है।
(6) हमारा गौरव कभी न गिरने में नहीं है अपितु गिरकर हर बार उठने में है।
(7) ज्ञान, अज्ञान को दूर करता है।
(8) कथनी और करनी में आदि और अन्त का अन्तर है।
(9) आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहने वाला घोर शत्रु है
(10) कायर का जीना झूठा है जो केवल डरना जानते हैं। सच्चा जीवन वीरों का है जो मरना जानते हैं

दीपेन्द्र सिंह
बी.एस-सी. (गणित)

बचपन

वह बीता हुआ बचपन, फिर याद आया कुछ खट्टी, कुछ मीठी यादें, सामने लाया। सोचती हूँ, कैसे वे दिन थे, कभी न भूली हूँ, न भूल सकूँगी कभी। वो पहली कक्षा फिर मुझे याद आयी, जब मैंने शुरू की थी अपनी पढ़ाई। फिर टीचर का रौबीला चेहरा सामने आ गया, पुरानी यादों को फिर से हरा कर गया। सच बोलने का पाठ उन्होंने पढ़ाया, गलती को स्वीकार करना सिखाया। मुसीबत का समना करना सिखाया, हिम्मत से आग बढ़ना सिखाया। फिर संग की सहेली आ गयी याद, जिससे कभी लड़ते थे कभी करते थे प्यार। देखते-देखते 1 से 12 कक्षा का समय पूरा हुआ,

वह गाँव, वह बचपन और सहेलियों का संग छूट गया।

फिर गाँव से शहर को रवाना हुए, नयी उमंगें, नई आशाओं को संग में लिए।

वह निश्चल जीवन न जाने कब खो गया, अच्छे बुरे विचारों से मन भर गया। तरह-तरह के लोगों से हुई मुलाकातें, फिर हमने भी सीखी नई-नई बातें जिनके बारे में कभी हमने सोचा न था,

वही सब हमें, देखने और करने कोण मिला।

ज्यादा कहने से अब कोई फायदा है क्या, बस ईश्वर से है अब यह प्रार्थना-

काश वो लौटा दे मेरा बीता हुआ बचपन, वो भोला सा बचपन, वो सादा सा जीवन।

जिन्दगी

कुछ खोने कुछ पाने का एहसास है,
ये जिन्दगी।
कुछ चुप रहने कुछ सह जाने का इकरार है,
ये जिन्दगी।
जिन्दगी जिसमें खुशी भी है और गम भी,
चाहत भी और रुशवाई भी।
कुछ कर गुजर जाने की चाहत है,
ये जिन्दगी।
कही समंदर की गहराइयों से मालामाल है,
ये जिन्दगी।
जिन्दगी, जिसे तुम समझ सके न हम,
वो खूबसूरत ख्वाब है, ये जिन्दगी।
अरे! ये जिन्दगी। कुछ नहीं।
बस मौत का एक नाम है, जिन्दगी।

अलका कुमारी
बी.एस.सी, द्वितीय वर्ष

सर्द रात

बर्फ की सिलवटों में लिपटी हुई ये रात
मुझे अजनबी निगाहों से देखती है
दूधिया चाँदनी में नहाये ये दरीक
मुझसे मेरा पता पूँछते हैं

पेड़ की शाखाओं से दबे पाँव उतर कर,
एक खामोश उदासी,
पसर जाती है कमरे में,
आईने में मेरा ही अक्स मुझे,
अनचीन्हा सा लगता है।

सर्द रात, तनहाई का आलम,
और बस, कुछ अधूरी ख्वाहिशों ,
की परछाईयां।

कु0 अनुराधा शाक्या
बी.एस-सी (वायोलॉजी)

यूँ न किसी की कोई बेटी जलाये

यूँ न किसी की कोई बेटी को जलाये
रोता बहुत है दिल भर-भर के आहे
यूँ न किसी की कोई बेटी को जलाये

हाय ये तूने उसपैं क्या-क्या जुल्म ढ़ाये,
एक दिन तेरे घर की बहू बनके आयी,
रोता बहुत है मन भर-भर के आहें,
यूँ न किसी की कोई बेटी को जलाये।

दान दहेज के पीछे करते हैं पिटाई
सर फोड़ते हैं और देते हैं घर-घर से भगाये
वह रोती बहुत मन में याद करके,
यूँ न किसी की कोई बेटी को जलाये।

रो-रो के बाबुल को हाल ये सुनाए,
बाबुल दान-दहेज के पीछे मुझको है सताया,
यूँ न किसी की कोई बेटी को जलाये।
रोता बहुत है दिल भर-भर के आहे॥

कु0 अनुराधा शाक्या
B.Sc. I (Biology)

युग-धारा

युग की बहती इस धारा में,
कुछ अपना काम दिखा लें हम।
भारत की वीर बेटियों में,
अपना भी नाम लिखा लें हम॥

युग बदल गया, युग बदल रहा,
अब और नया युग आयेगा।
सत्कर्म किए जो महापुरुषों ने,
जग गीत उन्हीं के गायेगा।
देश हितैषी चले कदम जो,
उनसे ही कदम मिला ले हम॥

जग में छिपी हुई है किससे,
कहानी पन्ना धाय-की।
अंग्रेजों को धूल चटाई,
रानी लक्ष्मीबाई-ने,
भारत माँ की अमर भूमि पर
कुछ करतब आज दिखा लें हम॥

वर्तमान के तूफानों से,
लड़ने का संकल्प लिया है।
देश के हित में अपने स्वार्थों का,
निर्भय हा बलिदान किया है।
पूर्ण आहुतियाँ करें समर्पित,
वेदों को यहाँ रचा लें हम॥

कथनी में करनी का अंतर,
मैं कभी नहीं होने दूँगी।
भूचाल आ रहा दुनियाँ में,
मैं सफल नहीं होने दूँगी।
बेटियाँ न निर्बल हैं जग में,
ऐसा विश्वास जगा दें हम॥

अश्वनी वर्मा (अन्जली)
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

मरने के बाद

था मैं नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था,
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था।
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल मेरे घर में,
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था।
था पास, मेरा हर अपना, उस वक्त,
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था।
जो कभी देखते भी न थे प्यार की निगाहों से,
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था।
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई मुझे सोता देखकर,
फिर भी जोर-जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था।
काँप उठी वो रूह जो मंजर देखकर,
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था।
मोहब्बत बेपनाह थी जिन दिलों में मेरे लिए,
उन्हीं दिलों के हाथों में जलाया जा रहा था।

शिवानन्द यादव
बी.एस-सी, प्रथम वर्ष

पेट खाली नजर आये

ना होली नजर आये, ना दीवाली नजर आये
मैं जिधर देखूँ, उधर कंगाली नजर आये।

वो भले ही कहें, घर भरें खजाने से,
उनके घर जाकर देखा, तो धरोंदे खाली नजर आये।

उनकी तो चिन्ता ही नहीं, जिनका महलों में बसेरा,
नजारा देखा फुटपाथों पर, जो वेहाल नजर आये।

मेवों फूलों का स्वाद कैसा, भला वो क्या बतायेंगे,
बिलखते भूख से बच्चे, थाल खाली नजर आये।

सर्दी कम्बलों में कैंप, जहाँ एहसास मत पूछो,
एहसास बताऐंगे जिनके, तन पर हाली नजर आये।

उम्र से पहले बुढ़ापा, जिनके नसीब में लिखा हो,
लेके घूमते चमला, अब खाली नजर आये।

उन से उम्मीद रखने वाले, माफ कर देना,
जिन्हें जो अपने बच्चे, और घरवाली नजर आये।

खुशहाली नजर आये ना माली नजर आये
रूचि एहसास कर देखा सबके पेट खाली नजर आये।

कु0 रूचि शाक्या

फूलों की दुनियाँ

फूलों की सुन्दर फुलवारी,
महक रही हैं कलियाँ सारी।
जब मैं होती हूँ उदास,
आ जाती हूँ फूलों के पास।
उनको अपना दुःख बताती,
तितलियाँ देखकर खुश हो जाती।
गुलाब केसर चम्पा चमेली,
लगता जैसे हो मेरी सहेली।
बड़ी निराली रात की रानी,
देती खुशबू रात में सुहानी।
लाल पीलें नीले काले,
गुलाब के फूल बडे मतबाले।
कमल के फूल की शोभा न्यारी,
वो हमें देते सीख प्यारी।
फूलों का है जग निराला,
सारी दुनियाँ से भी प्यारा।
आओ तुम भी इस जग में आओ,
खिलखिला कर खुश हो जाओ।

''मेरी प्रेरणा
एक सागर गहरा प्यार की हो तुम
एक भोली किरण सुबह की हो तुम
एक आशा अनन्त निहारने वाली हो तुम
एक मोती अनमोली धूल में चमकती हो तुम
पर सबसे अहम मेरी प्रेरणा हो तुम।''

कु0 रूचि शाक्या

गीली मिट्टी से जन्मी

तस्वीर सी हुई पुजी-पुजी,
अब कुछ भी ना जुड़ता,
तोड़ना चाहे मुझे दुनियाँ सारी,
क्या करूँ मगर मैं टूटती नहीं।

रोज झड़ते है अरमान,
सासें भी बन गई मेहमान,
खाक में बेशक मिलने लगी हूँ,
देह से जान मगर छूटती नहीं।

निताँत शून्य में जी लिया,
अपने हर घाव को सी लिया,
उजालों से डरने लगी परछाई,
तन्हाई मुझसे मगर रूठती नहीं।

सब कुछ कर के अर्पण,
निहारा जो खाली दर्पण,
बर्वाद करने की क्या ठाने कोई,
बरबादियां मुझे अब लूटती नहीं।

गीली मिट्टी से जन्मी
सूख कर पैसे की धूल बनी,
चमक उठी माथे पर बन कुमकुम,
अपने इस वर्चस्व को में भूलती नहीं।

मोहिनी यादव
बी.ए., तृतीय वर्ष

एक अधूरी ख्वाहिश

इस भीड़ भरी दुनियां में हर व्यक्ति की कोई न कोई ख्वाहिश जरूर होती है। हर व्यक्ति एक न एक सपना देखता है। और फिर ख्वाहिशों का क्या है? वे तो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही रहती हैं जिनमें कुछ को तो मंजिलें मिल जाती हैं लेकिन बदकिस्मती से कुछ अधूरी रह जाती हैं।

इनमें से ऐसी ही एक ख्वाहिश है हमारी प्यारी सी स्नेहा की, कि वह डॉक्टर बनकर गरीबों की मदद कर सके। एक गरीब परिवार में जन्मीं स्नेहा को बचपन में वो तो कुछ नहीं मिला जो उसे मिलना चाहिए था। स्नेहा के पिता जिन्हें अपने परिवार की कोई फिक्र नहीं थी उनका नाता तो सिर्फ शराब से था जैसे यही उनकी जिन्दगी हो। स्नेहा की माँ क्या करतीं? बेचारी लाचार आँखों से अपनी बच्ची को देखतीं। इन सभी कठिनाइयों के बावजूद भी वह अपनी बच्ची का पालन जान लगाकर करतीं। पर कहीं न कहीं उसे अपनी बच्ची का पालन-पोषण ढ़ंग से न कर पाने का मलाल जरूर था। परन्तु माँ की ममता कम न थी।

शायद किस्मत को ये भी मंजूर नहीं था एक दिन अचानक स्नेहा की माँ की तबियत बिगड़ गयी और न जाने किस रोग ने उसे जकड़ लिया और फिर एक दिन आँखों में आँसू लिये इस संसार को अलविदा कह गई। सात साल की छोटी बच्ची के सिर से माँ का हाथ हट गया। पिता के होने के बावजूद भी अनाथ हो गई थी वो।

सात साल की छोटी स्नेहा पर तरस खाकर एक दूर के रिश्तेदार अपने पास ले गये। यहाँ उसे रहने के लिए छत तो मिल गई पर अपनापन न मिल सका। स्नेहा हँसना, खाना, बात करना जैसे सबकुछ भूल गई थी। उसका बार-बार अपमान हुआ। उसे बार-बार माँ की कमी महसूस कराई गई। पर क्या करती? सहती रही और अपनी किस्मत पर रोती रही।

पर अब स्नेहा बड़ी हो गई है और अपने फैसले खुद ले सकती है। लेकिन वह अपने अतीत को नहीं भूल पाई है और माँ की उन आशा भरी निगाहों को भी नहीं। इसी कारण स्नेहा कुछ करना चाहती है, कुछ ख्वाहिशें हैं उसकी, पर स्नेहा को विश्वास दिलाने वाला उसे प्रेरित करने वाला कोई नहीं है। उसकी तरह कोई और अनाथ न हो, किसी और का बचपन न छिने। इसलिए उसकी ख्वाहिश है कि वह डॉक्टर बन कर ऐसे गरीब लोगों की मदद करे। जानती है कि आसान नहीं है लेकिन नामुमकिन भी नहीं। मेहनत करती है। कोशिशें की और असफलताऐं भी मिलीं। पर सफल होने की चाहत ने उसे और मजबूत बनाया है।

उसे ये तो नहीं पता कि उसकी ये ख्वाहिश पूरी होगी या अधूरी ही रह जायेगी पर चाहती है कि आप सभी की ख्वाहिशें पूरी हों और आपको कभी वो न खोना पड़े जो उसने खो दिया।

अनामिका पाठक
बी.एस.-सी, द्वितीय वर्ष

आखिर क्यों?

राकेश कुमार यादव
लैब असिस्टेन्ट

आँखों में हैं आँसू, फिर भी होठों पर मुस्कान क्यों है ?

क्यों दोहरी जिन्दगी जीते हैं हम, आखिर हर कोई परेशान क्यों है ?

गुलशन है सफर अगर जिन्दगी का, तो फिर इसकी मंजिल शमशान क्यों है ?

जब बिछुड़ना ही है प्यार का मतलब तो,

प्यार करने वाला इतना हैरान क्यों है ?

अच्छा करम करना ही है जिन्दगी तो,

बुराई का रास्ता इतना आसान क्यों है ?

अगर जीना ही है मरने के लिए तो,

जिन्दगी एक वरदान क्यों है ?

कभी न मिलेगा जो उसे ही माँगता है ये दिल ?

आखिर दिल इतना नादान क्यों है ?

नया कदम 'बफर सिस्टम'

आप माने या न माने,
पर हमारे लिए सबसे बड़ी आफत
बफर की दावत
एक दिन हमें भी जाना पड़ा बारात में,
बीबी बच्चे भी साथ में।
सभी के सभी बाहर से शो पीस, अन्दर से रूखे थे
मगर क्या करें भाई साहब, सुबह से भूखे थे।
जैसे ही खाने का संदेशा आया
हॉल में भगदड़ मच गई।
पंडाल में एक के ऊपर एक वरसने लगे। जिसने झपट लिया, सो झपट लिया,
बाकी के खड़े तरसने लगे।
पहला व्यक्ति हाथ में प्लेट लेकर,
इधर से उधर चक्कर लगा रहा था।
खाना लेना तो दूर,
उसे देख भी न पा रहा था।
दूसरा अपने हाथ में
तस्तरी झाड़ लाया था।
उससे कई ज्यादा अपना
कुर्ता फाड़ लाया था।
तीसरी एक महिला
जो ताड़ की तरह तनी थी,
उसकी आधी साड़ी तो पनीर की सब्जी से सनी थी।
उसे बार-बार धो रही थी,
पड़ोसन की पहन कर आयी थी
इसीलिए तो रो रही थी।
चौथा बेचारा गरीब था, लाचार था,
अतः कपड़े उतार कर पहले से ही तैयार था।
पाँचवां अकेले ही सारे झटके झेल रहा था,
भीड़ में घुसने से पहले दण्ड पेल रहा था,
छठा कल्पना में ही खाना खा रहा था,
प्लेट दूसरे की देख रहा था मुँह अपना चला रहा था।
सातवें का तो भगवान ही मालिक था,
प्लेट उसके हाथ में थी, मगर हलवा गायब था।
आठवाँ अजीब हरकतें कर रहा था,
खाना खाने की वजाय,
अपनी जेबें भर रहा था।
नौवाँ स्वयं लड़की वाला था
जिसके प्राण कष्ट में अटके थे,
घराती तो सारे खा रहे थे,
और बाराती बेचारे सड़क पर खड़े थे।
अन्त में देखकर ये हाल
मेरा निकल गया दम
क्या यही है आज का नया कदम
'बफर सिस्टम'।

कु0 सपना
बी.ए. द्वितीय वर्ष

देशभक्तों के अंतिम वचन

पं० रामप्रसाद बिस्मिल

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल ने फाँसी के तख्तेपर 'वन्देमातरम्' के जयघोष से आकाश गुँजाते हुए कहा था-

'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।'

मोतीलाल घोष

श्री मोतीलाल घोष युवा पीढ़ी के प्रति पूर्ण आश्वस्त थे। अपने जीवन के अंतिम क्षणों में उन्होंने कहा था-''मैं इस आशा के साथ संसार से विदा लेता हूँ कि मेरे अधिकतर देशवासी मातृभूमि की वह सेवा करेंगे, जो हम पुराने लोग नहीं कर पाये।''

लोकमान्य तिलक

''स्वराज्य को अपना जन्म सिद्ध अधिकार'' बतलाने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने आखिरी साँस लेते हुए भी यही कहा था-

''जब तक स्वराज्य नहीं मिल जाता, तब तक भारत उन्नति नहीं कर सकता।''

मनुष्य की नयी परिभाषा

कल की जरूरत थी आजादी हासिल करना, आज की जरूरत है आजादी को बरकरार रखना, आजादी की पहचान सामाजिक समानता, समानता की पहचान जातिविहीन समाज विकास की आजादी
सार्थक परम्पराओं एवं आस्थाओं की आजादी

आओ
ऐसे गगन में उड़ चले
जहाँ
सब समान हों
मानवतावादी दर्शन का अभियान हो
बन्धुत्व का प्रतिदान हो
अनेकता में एकता का सामूहिक गान हो
भारत वर्ष महान हो ॥

अंजुल,
बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ

माँ की एक दुआ जिन्दगी बना देती है,
खुद रोती है मगर, हमको हँसा देती है।।
कभी भूलकर भी माँ को मत रूलाना,
माँ की एक छोटी सी बद्दुआ हमें हिला देती है।।

जो लोग माँ का सम्मान करते है।,
वो लोग निराले होते हैं।।
जिन्हें मिल जाये माँ का आशीर्वाद,
वो लोग किस्मत वाले होते हैं।।

माँ तूने भगवान को जाना है,
संसार तेरे दर पर बना है।।
तू पूजा है मेरी तू मन्नत है मेरी,
तेरे ही कदमों में, जन्नत है मेरी।।

हर पल हम सबको खुशी देती है माँ,
अपने जीवन से हमको जन्म देती है माँ।।
अरे उस भगवान की क्या उस माँ की पूजा,
करिये जो भगवान को जन्म देती है माँ।।

माँ की ममता से नूर मिलता है,
सबको सुकून मिलता है।।
जो रम जाते हैं माँ की ममता में,
उन्हें कुछ न कुछ जरूर मिलता है।।

मंजिलें उन्ही को मिलती हैं,
जिनके सपनों में जान होती है।।
पंखों से कुछ नहीं होता है,
होंसलों से उड़ान होती है।।

रानी मिश्रा
बी.एस-सी., प्रथम वर्ष

माता पिता

गुलप्सा बान्ते
बी.एस-सी., द्वितीय वर्ष

माँ घर का गौरव तो पिता घर का अस्तित्व होता है,
माँ के पास आश्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है।
दोनों समय का भोजन माँ बनाती है परन्तु जीवन भर की भोजन की व्यवस्था करने वाले पिता को सहज ही भूल जाते हैं।
कभी लगे ठोकर या चोट तो ओ माँ ही निकलता है,
लेकिन रास्ता पार करते समय कोई ट्रक पास आकर ब्रेक लगा दे तो ''बाप रे'' निकलता है।
क्योंकि छोटे संकट के लिये माँ तथा बड़े संकट आने पर पिता ही याद आते हैं।
पिता एक वटवृक्ष जिसकी छाया में सम्पूर्ण परिवार सुख से रहता है।

मेरी चाह

चाँद तारों की चाह नहीं है,
ना ही फूल बहारों की,
गुलशन का क्या करना मुझको,
ना है चाहत बागों की,
गर मिले मंजिल मेरी,
मुझे बस राहों की,
मुझे बस चाहत राहों की।
सागर ना सही एक बूँद है काफी,
मेरी प्यास बुझाने की महलों में ना रहना मुझको,
मुझे ना चाह सितारों की,
हीरे मोती नहीं चाहिए,
ना है चाहत तारों की,
दुनियां की चाह किसे है,
बस चाहत हे अपनों की,
पल-पल में हो जाए जो पूरे,
बस चाहत ऐसे सपनों की।

कहानी दर्द की

दर्द की कहानी, मैं जिंदगी से क्या कहती
दर्द ये जिसने दिया, उसी से क्या कहती।

कौन हमदर्द है जहाँ में किसी का
इक उभरता है यहाँ एक के मिट जाने के बाद।

गिला तो मुझ को भी करना था प्यास का
जो खुद ही सूख गई उस नदी से क्या कहती।

बिन माँगे ही दिया जिन्दगी ने इतना
चार दिन की जिन्दगी से मैं और क्या माँगती।

मैं जानती हूँ खून सब का एक ही है
जो खून बहाता है उसी शैतान से क्या कहती।

मेरे अपने ही कभी समझ न सके मुझे
मैं अपना दर्द किसी गैर से क्या कहती।

गम क्या है जो जमाना है मुझ से फिरा हुआ,
मेरी नजर से खुद है जमाना गिरा हुआ।

तमाम शहर में झूठों का राज है
मैं अपने गम की हकीकत किसी से क्या कहती

रंजना यादव
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

मंजिल उन्हीं को मिलती है

मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है।

पंखों से कुछ नहीं होता, होंसलों से उड़ान होती है।

हवा में ताश के पत्तों का महल नहीं बनता,

बिगड़ा हुआ मुकद्दर फिर नहीं बनता।

दुनियाँ को जीतने का हौसला रखो यारो,

एक जीत से कोई सिकन्दर नहीं बनता।

जिन्दगी कांटो का सफर है, हौंसले पहचान हैं इसकी।

रास्तों पर तो सभी चलते हैं, जो रास्ते बनाये वही इंसान है।

हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष कभी न हारा है।

संघर्ष हमेशा जीता है। संघर्ष कभी न हारा है।

हम चले तो आँधी तूफान चल पडेंगे।

सागरों की तो बात ही क्या, हिमगिर सरीखे ढह पड़ेंगे ।

यह न समझो ये दिशायें, पथ हमारा रोक लेगी।

हम जले तो दीप क्या सूरज हजारों जल पड़ेगे।

हर खुशी-खुशी माँगे आपसे, हर असफलता, सफलता माँगे आपसे।

आपकी किस्मत में हो इतनी खुशियाँ, कि सूरज भी रोशनी माँगे आपसे।

कु0 वर्षा

बी.एस-सी., प्रथम वर्ष

हार नहीं होती

लहरों से डरकर सरिता पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती हैं,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती हैं।
मन का विश्वास रंगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है॥
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा-जाकर खाली हाथ लौट कर आता है,
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में,
मुठ्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हों, नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती॥

वैष्णो यादव
बी.एस-सी., प्रथम वर्ष

बेटी की पुकार

मैं बहुत से सपने सजाकर पल रही थी, माँ की कोख में।

पर ये क्या मेरे सारे सपने तो एक पल में चूर-चूर कर दिए गये।

मुझे इस दुनियाँ में आने से पहले ही मार दिया गया।

माँ क्या आपके मुँह से एक बार भी नहीं निकला कि मेरी बेटी को मत मारो।

माँ क्या मैं आप पर या परिवार पर बोझ थीं। आप लोग मुझे एक मौका तो देते,

एक बार इस दुनियाँ में आने तो देते, फिर देखते क्या से क्या कर जाती मैं।

आप लोग मुझे बोझ समझने के बजाय मुझ पर गर्व करते।

काश एक बार इस दुनियाँ में जन्म ले पाती मैं,

मैं इस सतरंगी दुनियाँ के आकाश में अपने पंख फैलाकर उड़ना चाहती थी।

मुझे भी जीने का हक है क्यों आप ने मुझ से मेरा ये हक छीन लिया।

माँ ये दुनियाँ तो बेरहम लोगों से भरी पड़ी है,

पर माँ आप तो मेरी माँ हो, मेरे दर्द को समझ सकती हो,

फिर आप ने ये क्यों होने दिया माँ, जबाव दीजिए माँ क्यों?

प्रियान्जलि राजपूत
बी.एस-सी., प्रथम वर्ष

अब नहीं है टेंसन

आ गई है नई एज, दूर हो गई है पर्सेंटेज

नंबरों में लग गई है जंग,

ग्रेड के रूप में मिलते रहे हैं अंक।

आ रहा है ग्रेडिंग का फंडा,

भा रहा है ग्रेडिंग का फंडा,

अब नहीं मिलेगा पेपर में अंडा।

ए-1, ए-2 का है जलवा,

जीरो-जीरो का बन गया है हलवा।

स्टूडेंट हो गया है क्रेजी,

ग्रेड्स ने बना दिया है उनको लेजी।

नहीं लगा अब टफ कंपटीशन,

आ गई है ग्रेड्स की जेनरेशन।

स्टूडेंट्स नहीं होंगे अब फेल,

नेताओं का कहना है ''ऑल इज वेल''

कु0 वर्षा
बी.एस-सी., प्रथम वर्ष

राष्ट्र भाव

हिन्दू मचलते हैं,
तो देश मचल जाता है।
हिन्दू बिगडते हैं,
तो भूचाल आ जाता है।
ना करो कोशिश हिन्दुओं को बदलने की
जब हिन्दू बदलते हैं,
तो इतिहास बदल जाता है।

काश: बारात पाकिस्तान गई होती
दहेज में माँग लेता पाकिस्तान
तो दो देशों में लड़ाई कभी नहीं होती।

अपने देश में बस जायेंगे SMS की तरह,
भारत माँ की गोद में हँसेगें Ringtone की तरह,
अगर AK-47 में गोली कम न हुयी Balance की तरह,
तो इतिहास बदल देंगे नये Mobile की तरह।

क्यों मरते हो यारो इन हसीनों के वास्ते,
दुपट्टा न देंगी कफन के वास्ते।
मरना है तो मरो वतन के वास्ते,
तिरंगा मिलेगा कफन के वास्ते।

रविकान्त
बी.एस-सी., प्रथम वर्ष

खट्टे-मीठे अनुभव

रंजना शाक्य
एम.ए. (उ.) संस्कृत

कलम की धार बड़ी तेज होती है,
जिन्दगी सुख-दु:ख से लवरेज होती है।
इन्हें देख कर रोना न दोस्तो,
ये काँटों की नहीं बल्कि फूलों की सेज होती है॥

एक दु:ख के पीछे हजारों खुशियाँ हैं दोस्तो,
एक पौधे में काँटों के बीच कई कलियाँ हैं दोस्तो।
खुशी से काट लो ये थोड़े से गम,
कष्ट पुन: देने की न होगी किसी में दम॥

गिरते को उठाना क्या अपराध होता है,
प्यार बाँटने से क्या इंसान बर्बाद होता है,
बता दो ऐ दुनियाँ वालो! दो पल की खुशी किसी को देने से,
क्या इंसान वैश्या की तरह बदनाम होता है?

कौआ काला, भँवरा काला, काला काजल होता है,
प्रेम में जो जान गँवाये वो प्रेमी पागल होता है।
कष्ट ही तो प्रेम की अग्नि परीक्षा है,
इसे सहन कर आगे जाओ यही जीवन की शिक्षा है।

ये दुनियाँ वाले भी बडे अजीब होते हैं,
कभी गले मिल कर जो कभी गला काटकर वोट देते हैं।
अधिकार न माँगें तो हम भोले-भाले हैं,
अधिकार माँगें तो लगाते रिश्वत के ताले हैं॥

पुरूषों ने स्त्रियों को बना दिया दुखिया
तभी तो आज स्त्रियाँ बन गईं घर की मुखिया।
हर तरफ नारी का दबदबा दिखेगा,
किसी भी दामिनी का दामन न खिंचेगा।

तुम्हारे रोकने से नाकाम नहीं होंगे,
तुम्हारे सम्मुख हम नीलाम नहीं होंगे।
बहुत किये हैं हम पर अत्याचार ,
अब किसी दरिन्दे कि लिये सुबह और शाम नहीं होंगे।

जिन्हें आबाद करती हूँ, वही बर्बाद करते हैं।
हमारी हिम्मत तो देखो, हम उन्हीं को याद करते हैं॥

कलयुगी मानव

आज का मानव बन गया दौलत का भूखा,
दौलत की खातिर रिश्तों का खा जाता है रूखा।
धन दौलत का अन्धा मानव,
बनता गया बडा सा दानव।
इज्जत को भी दाव पर लगाता,
अपना जीवन नरक बनाता।
किये कुछ कृत्य ऐसे खुद को कलंकित कर लिया,
भर गया जब पाप का घड़ा, तो धर्म खण्डित कर दिया।
मानव तू विरोध कर इस कुरीति का,
वरना हो जायेगा शिकार तू इस झूठी प्रीति का।
लगेगा ऐसा धब्बा जो साबुन से धुल न पायेगा,
धोते-धोते उस धब्बे को जीवन ही धुल जायेगा।।

अनमोल वचन

(1) परमात्मा स्वरूप में बिन्दु लेकिन गुणों में सिन्धु है।
(2) बुद्धिमान कभी बकवाद नहीं करते और बकवाद करने वाले बुद्धिमान नहीं होते।
(3) संसार के धनियों में भोजन पचाने की सामर्थ्य नहीं होती जबकि गरीब के पेट में तो लकड़ी भी पच जाती है।
(4) ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उसमें विश्वास रखो लेकिन कठिन परिश्रम करो क्यों कि कर्म ही पूजा है।
(5) दृढ़ विश्वास के द्वारा पत्थर भी भगवान बन जाते हैं।
(6) एक इंसान चाहे कितना भी बडा या धनवान हो वह मेहनत खरीद सकता है पर जिन्दगी नहीं।
(7) अपनेपन की दौलत जिसके पास है वही धनवान कुबेर होता है।
(8) माँ उस छायादार वृक्ष के समान होती है जो हर पथिक को अपनी डाली रूपी भुजाओं में आश्रय देती हैं।
(9) सफलता को निमंत्रण देने के लिये उत्साह का पता अपने पास रखिये।
(10) बड़ों का आदर करो क्योंकि उनकी नेकियाँ हमसे ज्यादा हैं और छोटों से शराफत से पेश आओ क्योंकि उनके गुनाह हमसे कम हैं।

रंजना शाक्य
एम.ए. (उ.) संस्कृत

नव प्रभात

अन्धकार में कुछ न होगा,
ऐसा सच जान लो तुम,
नव प्रभात में फैलो इतना,
और पत्थर को फूल मान लो तुम,
पढ़ना सीखो- बढ़ना सीखो।

तुम सोए हुए हो शायद अब तक,
इसलिए फैला अंधेरा,
कर्णधार अब महको तुम,
चहके चिड़ियाँ और हो सवेरा,
पढ़ना सीखो- बढ़ना सीखो।

तुम्हारे संभलने के इन्तजार में,
ये दुनियाँ अब सारी है,
वो थक गए वो चले गए अब तुम्हारी बारी है।
पढ़ना सीखो- बढ़ना सीखो।

कब उठोगे ए सुमन कण,
शेखर है तुम्हारे वार में,
जलो तुम इतनी ज्वाला में,
जो प्रदीप्ति फैले आकाश में,
पढ़ना सीखो- बढ़ना सीखो।

देखकर प्रदीप्ति यह सामने से रजन भी हट जाएगी,
जो जरा देर की, जो संभलने में ,
तो सच मानवता ही मिट जाएगी।
पढ़ना सीखो- बढ़ना सीखो।

पुलकित हुए जो तुम तो अपनों में एक गुण,
सच और मीत होगा,
कुछ कर गए तुम अनन्तमय,
तो हर जुवां पे तुम्हारा गीत होगा।
पढ़ना सीखो- बढ़ना सीखो।

रवीन्द्र नाथ सागर
एम०ए० हिन्दी

Women's Right: issues and challenges

Dr. Sushil Kumar
Assistant Professor,
Deptt. Of English

Introduction : Men and women have to play an equal role in the progress of our country. They were not allowed to own property, they did not have a Share in the property of their parents, they had no voting rights and they had no freedom to choose their work or job and so on. Now that we have come out of those dark days of oppression of women there is a need for strong movement to fight for the rights of women and to ensure that they get all the rights which men have or in other words a movement for the Empowerment of Women. India demands the services of every individual living in the country. There are certain fields in which women can play a more successful role than men. The women of our country must come out and prove that are not behind men in the service of the Nation. The remarkable features of the twenty first century are the emancipation of womanhood from the old and obsolete society. Now women are not regarded as a breeding machine or a house hold maid. They are not painted pictures only to be kept in the four walls of the house. Now men and women play equal role in the progress of their country.

Position of Education of women in the past : Dr. Saravepali Radha Krishnan Says in his essay women's education:

Purakalpesu narinam
mandira vandana niscitah
adhyapananca vedanam
gayatri vacanam tatha.

In ancient times, our women had the ceremony of upanayana performed for them. They were entitled to a study of Vedas. They were als entitled to the chanting of the gayatri japa. All these things were open of the main signs of that decay of our civilization is the subjection of women. After Independence, through the exertions of Mahatma Gandhi, a revolution has been affected in our country, and women are coming into their own. Things were never in the miserable conditions even in the past in ancient India Manu, the ancient Hindu law giver, lays down that daughter should be educated as well as a son. Many Sanskrit books inform us that the ancient Indians used to teach all the useful arts to their women folk. A Perfect and accomplished woman was expected to be versatile in 64 arts including music, painting, dancing, cookery, household duties, laws of health and hygiene, nursing of children and sick, and so on. There was complete equality between the sexes,. From our Vedas and other shastras we come to know that there were educated ladies. But with the advent of foreign invaders, Hindu societies scuffed a setback. The woman began to be treated as an inferior creature fit only for the enjoyment of man. This approach gave birth to such evil customs as early marriage and sati.

Women's Position in the Present age : With the setting in of the modern age in India, Our women are again coming in to their own. Evil social customs are dying down and they are participating in the various activities outside her domestic walls. All this is due to the gradual spread of education and employment among our women. Today Indian women are advancing in every filed. They study innumerable subjects like History, Philosophy, Psychology, Science, Mathematics, Computer Science,

Astrology Science, Commerce, Arts etc. They are now Doctors, Engineers, Professors, Administrators, Lawyers, Judges, Politicians, Scientists, Clerks and Artists.

They have entered even the army and air force and Police. They are now Ministers, Governors, Judges, I.A.S, I.P.S, P.C.S, P.P.S, Presidents, Prime Ministers, Chief Ministers and Scientists. According to Dr. Sarvapali Radha Krishnan:

"Give us good women, we will have a great civilization.
Give us good mothers, we will have a great nation."

Education and Employment uplift women : Education of our girls is in a sense even more important than that of boys. A girl is one day to be a mother and she has to run a household and bring up off-springs. Only an educated mother can bring up intelligent, well-developed, well- behaved and disciplined children. Today, no nation can afford to keep half to her population uneducated and unemployed at home. We want the help of our women-folk in our present struggle against poverty and diseases. We need girls to look after our sick as nurses and doctors, to educate our children in the schools and to work in offices and share the burdens of their men folk. The success of Britain during the two world wars was not a little due to the work put in by British women in various capacities. Indeed, in America, Europe and Russia women are contributing to national prosperity and over-all development. Why should not Indian women be share holders in the task of national reconstruction? Today Indian women are advancing in every field. They study innumerable subjects like History, Philosophy Psychology, Science, Mathematics, Arts, etc. They are now Doctor, Engineers, Professors, Administrators, Lawyers, Politicians, Scientists and Artists. They have entered even the army and air-force. They are now Ministers, Governors and High Court and Supreme Court judges.

Women's Reservation Bill : Hindu Code Bill and Hindu Succession Act conferred on women the right to parental property and a complete righf to divorce. Marriage Customs are rapidly changing. A social atmosphere is being created to abolish dowry. The majority of women are still backward, ignorant and superstitious. The U.N.O. declared 1975 to be celebrated as the International Women's year.

The women's Reservation Bill (WRB) providing 33% reservation for women in the LokSabha. The Bill is now firmly on the national political agenda and political parties known that sooner or later, something will have to be done. Congress Deputy Leader in the LokSabha Shivraj Patil believes that representation of one constituency by two MPS cannot be a source of conflict Patil has ignited the latest disputation on the WRB by insisting if double member constituencies are introduced in one-third of all parliamentary seats. It is difficult for the existing bill to be passed since the majority of male MPs believe that introducing 33% reservations will, along with reservations for Tribes and Scheduled Castes make 50% of seats unavailable to them. Women's activists are terrified at Patil's suggestion. According to Ranjana Kumari, Coordinator the WRB is presently the property of the house and it is against parliamentary propriety for MPs to be expressing an opinion outside the house. If a new process is started at this stage it will mean that the WRB gets delayed by yet another six years.

●●

CONTEMPORARY TERRORISM AND GANDHIAN VIEWS

Dr. Akhil Kumar Saxena

Astt. Professor (Sociology)

Terrorism is spreading among almost all the nations-may be developed, developing or small and under developed countries. It is necessary to mention here, what is terrorism? The terrorists call it 'Zehad'. This term Zehad has undoubtedly great importance in Islam religion. But it is being started only when Islam is in danger. It is the ultimate saver of Islam.

In the present era the "Zehad" has taken another ugly shape such as forcing their wishes, to fulfill their obstinacy and to get their supporters rid from the legal actions taken against them in any country. Among muslims there are two main sects – 'Shiya' and 'Sunny', both of them remain draggers drawn towards each other. To my mind it spread right from the time of division of India-Hindustan and Pakistan. All the Hindus and Muslims were living here in peace. There are instances that Muslim worries fought in the form of 'Senapati' in Hindu states and Hindus doing so in Islamic states. In Hyderabad Nizam sahib of Hayderabad used to call 'Holi Id' and 'Diwali Id' and Hindus participated in 'Idul-fitar' and 'Id-ul-zuha'. After the division of India it was found that the boggies of train bringing Hindus from Pakistan fill of blood and dead men, women and children and similar scene was in the boggies of the train taking Muslims to Pakistan. Here it shall be relevant to project the views of Gandhi ji in his own words:

ISLAM- The sword is no emblem of Islam. If I understand the spirit of Islam properly, it is essentially republican in the truest sense of the term. The very word Islam means peace which is non-violence. Islam would cease to be a world religion if it were to rely upon force for its propagation. I feel about the honor of Islam as much as I feel about my own religion. I have more than once read the Quran. My religion enables me, obliges me, to imbibe all that is good in all the great religions on the earth. This does not mean that I must accept the interpretation put upon the message of the Prophet of Islam or any other Prophet. I must use the limited intelligence that God has given me to interpret the teachings bequeathed to mankind by the Prophets of the world.

Religion binds man to God and man to man. Does Islam bind only Muslims to Muslim and antagonize the Hindu? Was the message of the Prophet, peace only for and between Muslims and war against non-Muslims and Hindus? Are eight crores of Muslims to be fed with this which I can only describe as poison. Those who are instilling the poison into the Muslim mind are rendering the greatest disservice to Islam. I know that it is no Islam. I have lived among Muslims not for one day but closely and almost uninterruptedly for twenty years. Not one Muslim taught me that Islam was an anti Hindu religion.

Islam is a noble faith. Trust it and its followers. I do regard Islam to be a religion of peace in the same sense as Christianity, Buddhism and Hinduism are. No doubt there are differences in degree, but the object of these religion is peace. I know the passages that can be quoted from the Koran to the contrary. But it is possible to quote passage from the Vedas to the contrary. Let not the pot call the kettle black.

The fact is that we are all growing. I have given my opinion that the followers of Islam are too free with the sword. But that is not due to the teaching of the Koran. That is due, in my opinion, to the environment in which Islam was born. Christianity has a bloody record against it, not because Jesus was found wanting, but because the environment in which it spread was not responsive to his lofty teaching.

These two, Christianity and Islam are, after all, religions of but yesterday. They are yet in the course of being interpreted. I reject the claim of Maulvis to give a final interpretation to the message of Mohammed, as I reject that of the Christian clergy to give a final interpretation to the message

of Jesus. Both are being interpreted in the lives of those who are giving these messages in silence and in perfect self-dedication.

My association with the noblest of Musalmans has taught me to see that Islam has spread not by the power of the sword but by the prayerful love of an unbroken line of its saints and fakirs. Warrant there is in Islam for drawing the sword; but the conditions laid down are so strict that they are not capable of being fulfilled by everybody. Where is the unerring General to order Jehad? Where is the suffering, the love and the purification that must precede the very idea of drawing the sword? Hindus are at least as much bound by the similar restrictions as the Musalmans of India. The Sikhs have their recent proud history to warn them against the use of force. We are too imperfect, too impure and too selfish, as yet to resort to an armed conflict in the cause of God.

NON-VIOLENCE : We must secure an atmosphere of enlightened non-violence as fast as possible, not the non-violence of the weak but the non-violence of the strong, who would disdain to kill but would gladly die for the vindication of the Truth.

The religion of non-violence is not meant merely for the Rishis and Saints. It is meant for the common people as well.

Non-violence in its dynamic conditions means conscious suffering. It does not mean meek submission to the will of the evil-doer, but it means the putting of one's whole soul against the will of the tyrant.

My non-violence does admit of people who cannot or will not be non-violence holding and making effective use of arms. Let me repeat for the thousandth time that non-violence is of the strongest, not of the weak.

So far as terrorism is concerned in India almost everyday the news of terrorism is found in every newspaper. Jammu and Kashmir of India has become a open field of playing bloody game by the terrorists every now and then. Some times we read that terrorists trying to enter from the line of control (LOC) into India. Who have been killed into encounter by the B.S.F. of India, Sometimes incidents of blood shed in the valley by 'Fedayan' attack are found in the newspapers. The blood flowing the Kashmir is always red in colour, may it be of a terrorist or of a soldier of B.S.F. in the encounter.

For the last twenty five years India is facing terrorism on its land but the countries keeping hold on the universe remain silent over this issue without sending any help on the ground that they are neutral. None of the countries felt the grief of the people of India, which is known as the country supporting peace in the universe.

EXPANSION OF TERRORISM- The secret agency of Pakistan namely ISI after making irruption of Afganistan put its full concentration on India and started spreading its network in our country. In the last month of the year 1994 present president of Pakistan Mr. Nawaz Sharif defeated the Government of 'Mrs. Benazir Bhutoo' and declared Pakistan as Islamic state. In this regime ISI organization started imparting training of spreading terrorism in Kashmir, which is in Pakistan, Bangladesh and Nepal and after being trained, Pakistan increased their efforts to send these trained terrorists in the Camps in Indian territory, like Punjab and Kashmir besides Mumbai and in The North-East states.

In North-East states ISI started triangular policy which is given under-

1- Landing terrorists in India via Nepal and spreading terrorism in the nearest parts to LOC.

2- To provide more help to terrorists and to enrich them with more lethal weapons.

3- By motivating youths in favour of Islamic fanaticism and to spread the fanaticism among Muslims dwelling in India and also to force them into militant activities against our Nation.

However, this policy of increasing the number of Muslim extremists succeeded. There are some specific reasons for joining the organizations of terrorism among Muslim youths such as remaining uneducated in a large number, poverty, unemployment and merciless etc. Uneducated poverty stricken and unemployed youths victimized by suggestibility, meaning thereby accepting with any suggestion giving to them without considering its 'Pros and Cons'. They are allured by the money and amenities provided to them or promised to provide. It is not very difficult to such youths may be of any country. Thus, the organization of terrorism has taken a global shape.

The father of Indian Nation Mahatma Gandhi was of the opinion that terrorism should be fought using non-violence. It should not be misinterpretate. The reason behind the theory of non-violence was for those destructive means would negate any positive benefits in the victory of struggles.

It can be said now that Gandhi would have responded to terrorism, he never said that do nothing at all. We can find in his writing's that he regarded cowardice as beneath content. He further wrote, "Where there is a choice between cowardice and violence, I would advise violence." This statement of Gandhi ji appears to be justified when violence seams to be the only resort to fight terrorism. For example some persons suddenly appears with arms and ammuniations in order to loot and kill, according to Gandhian theory it becomes to become violent against such person because it is the only option let out.

Now, It can be imagined how Gandhi ji would have reacted in case of contemporary form of terrorism, no doubt It would have been violence and not non-violence. In the year 2005 when a suicide bomber was attacking in London and imagine Gandhi ji Standing nearby what would have response to that attack. He might have chosen to wrestle with him and subduing him instead giving him preaching non-violence.

Behind the jehadi war is a conflict between ideas and world views. In saying this I do not mean to be little the importance of the struggle, for ideas can have enormous power. But the contest between differing ways of perceiving the world and the relationship between political and moral order, the struggle has a remarkably moralistic tone. The enemies are not really individuals as much as they are ways of thinking.

Both sidea define their goals as freedom. On one side it is the liberty to choose a nation's own officials through democracy or democratic elections. On the other side these positions have been magnified into a moral contest of such proportions that it has become a sacred struggle. The enemies have become cosmic foes. Large numbers of innocent people have been killed with moral indifference, with the self-righteous thinking that God is on one's side.

It is a major question that, "Is a nonviolent approach to conflict resolution relevant to the global jehadi war?" Consider the guidelines that Gandhi ji enunciated in response to the terrorism of the Indian activists in Britain in 1909. They might be applied to the current situation in following way-

Stop a situation of violence in its tracks. The first rule of non-violence is to stop an act of violence as it occurs, to prevent it before it happens. Gandhi ji would have approved of efforts to capture those involved in acts of terrorism and bring them to justice, and he would have applauded attempts to-ward off future terrorist assaults through the legal forms of surveillance and detection that have been adopted. Even those measures that seem to be aimed only at giving the appearance of security have a certain utility, since they diminish the prime effects of terrorism fear and intimidation. But even though Gandhi ji occasionally supported military action, But it is doubtful that he would have accepted large-scale military operations as a response to terrorist acts, especially if they left large number of casualties in their wake. Nor would he have approved of changes in the legal system that would deprive the public of its rights.

Terrorism in India started on the issue of Kashmir. As a matter of fact a region that is also claimed by two religious communities hacked by India and Pakistan the two governments. It will not be beyond imagination that India and Pakistan could not join in a settlement. Therefore, it is not in a position to solve this dispute by conversation and in a non-violent way.

In the present conditions when 'Zehadi War' has spread to Global level. Then President of U.S.A. Mr. George W. Bush described it as 'The war of terror.' This name of war was given another name is 2001 and called 'struggle against radical Islam.'

In the year 2005 Osama-bin-Laden enunciated his own proclamation of this war in 'Fatwa' against united states. In the year 1996 he called on Muslims to join him in order to correct the happened to the Islamic world in general since the end of Ottoman Empire. According to him the aim was "To return to the people their own rights, particularly after the large damages and the great aggression on the life and the religion of the people." He concentrated on the students who were poor, less educated or uneducated and living in poverty and gave the name of 'Taliban' to them.

Too many meetings have been arranged to solve the problem of Kashmir. So called Train service and Bus services in both countries are running as peace resorts but without avails.

In the year 1992 ISI became active in U.P. soon after the fall of 'Babri Maszid' in Ayodhaya. With the result it spread's it's network within a span of two years only in five sensitive districts namely Aligarh, Ghaziabad, Meerut, Saharanpur and Mooradabad. Here Hindus and Muslims both are trading, some muslims out of them come into higher class and they are earning a very good amount of money. But the youths coming from the rich family have shown no interest in education. Consiquently they are unemployed, less educated or uneducated easily become the victim of fanatic religious 'Ulemas.' Thus, in a large number of students of Muslim Community are being recruited and they are being trained in the various camps of terrorists and with the allurement of money and better life to their family members. They readily accept to become suicidal bombs besides being a soldier of 'Gorrila War.' The sources of income is from 'Loot of Banks and ATM's' besides the money provided by the Muslim countries under terror and also from the politicians and receiving ransom's from the celebrities engaged in film industry.

The concept terrorism is a result of narrow thinking motivated by religious fanaticism. This being brought in to practice by 'Al-Qaeda', ISIS, SIMI, Indian Muzahideen etc. Considering the violent nature of these organizations globally. Many countries like USA, Great Britain, Germany, Japan, India etc. have joined hands to fight out this devil so called war of terror in order to save the world from terrorism and providing security to their citizens.

Ultimately it can be concluded that Mahatma Gandhi also considered to the fact that not being a coward where, there is no option we can bravely face the situation using violence.

References-

1- *Young India, August 11, 1920.*
2- *Young India, October 31, 1929.*
3- *Gandhi collected work-Volume 14, Page-505.*
4- *Gandhi collected work-Volume 51, Page-17.*
5- *Glorious Thoughts of Gandhi, by N.B. Sen, Published: New Book Society of India, New Delhi, First Edition-1965, Page No.- 190, 261, 276, 290, 292.*
6- *'Atankvad' Dhamake……..Maut…….Sannata……. of M.P. Kamal, Publication: Snch Sahitya Sadan, New Delhi, 2006. Page No-11 to 76.*

●●

Inner Conflict of Ideas

Dr. Sushil Kumar
Assistant
Professor (English)

Introduction: Conflict is the state of confronting the inner and outer forces, affecting the decision-making power of people. In fact, at every stage of life, people have to face inner or outer conflicts, which determine the course of action of their lives. In literature, conflict is used as a technique to explore the strength of a character. Several good and bad aspects of the character are revealed through showing his or her confronting with his or her conflict. In a particular condition, one wrong decision may cause fatal conclusions to life. In the short story Where are You Going, Where Have You Been? By J. C. Gates and In the famous tragedy Macbeth by Shakespeare, such conditions of inner and outer conflict are represented through the central characters. Both the texts are similar in the sense that they present a fight of the protagonist of imagination versus reality; however, they are different in their ends. Connie survives at the end of the story because she realizes the difference between her fantasy and reality while Macbeth has to die due to his flawed perception of the outcomes of his actions.

The Internal Conflict of the Protagonists: At first, in both the texts, the protagonists suffer from the internal upsetting of ideas. Connie is a teenage girl who prefers living in her own world. She urges to get an independent life, which is free from the commands and continuous nagging of her mother. She also feels uncomfortable with her comparison with her elder sister, June. It is quite natural to see her performing sensitive actions before mirror, as she is conscious about her image. "She was fifteen and she had a quick, nervous giggling habit of craning her neck to glance into" mirrors or checking other people's faces to make sure her own was all right. Her mother, who noticed everything and knew everything and who hadn't much reason any longer to look at her own face, always scolded Connie about it. "Stop gawking at yourself. Who are you? You think you're so pretty?" (Gates, pg. 1) In teenage, such transitions take place de to hormonal changes but, in her thoughts, she desperately wishes to attain adulthood to enjoy the life of an adult. She assumes that an adult's life is greater than her present one. She feels comfortable in the company of her friend whose father drives both of them to the nearby restaurant where she sneaks through the lobby and meets Edie, a youngster like her. Thus, in order to get rid of her inner conflict of ideas, she avoids any confronting with her family. Instead, she enjoys outing with her friends because in that way, she feels that her life is not compromised.

Similar to her state, Macbeth suffers from the thoughts of 'provoked ambition' by his wife. The state of inner conflict initiates when he meets three witches in the beginning of the play who predict that he will be the king one day soon after gaining the two important recognitions in the Scotland. In fact, there is a fine glimpse of this internal conflict. It is about to start in the life of Macbeth and three witches agree to it in their first conversation together. "Fair is foul and foul is fair/Hover through the fog and filthy air."(Act I, Scene, I) thus, the three witches are about to play a game with Macbeth which is related to predictions.

When Macbeth achieves the two recognitions, he informs about the third prediction of being the king to his wife who, surprisingly, spurs his thoughts. She promotes the inner conflict of Macbeth by

telling him that he cannot be the king until he kills the present king, Duncan. Though Macbeth is not mentally prepared for it, he has to surrender before his wife's will. Later, his ambitions make him realize that whatever his wife is saying is correct and he should take the notion of killing into serious consideration. Thus, his inner conflict with his own ideals and his further actions initiates resulting in a series of brutal activities like killing King Duncan and Banquo further.

The External Conflict : Further, Connie and Macbeth confront the outer forces with great courage. They are similar in their outer conflicts with the external forces. Connie, for example, shows courage through her fear. It sounds odd but it is true that her growing fear brings her closer to one of her innate virtue, which is to confront Arnold Friend, her strange follower, with courage. Initially, she fears about his personality and prefers avoiding him. When he does not leave her alone, she confronts him to clear her doubts about his personality. Arnold is literally a symbol of supernatural force who knows everything about her, even about her desire to attain adulthood. Arnold's invitation for a dating and dinner is a part of the same process to which, she denies and remains adamant not to join him any further. When he tells her that he wants to have her and he will do anything to achieve his purpose, though she is frightened at this point, she warns him to stay away from her or she will inform the police. Her fight with Arnold in the shape of witty dialogues is the gist of the story. However, in the end of the story just after a blurring scene of many events, Connie surrenders to his will. She is shown as an aware girl who knows where she is going and what is the objective of her life now.

Similarly, Macbeth encounters with the three witches in the beginning of the play. These witches constitute a great portion of his outer conflict with the supernatural powers. They tempt his thinking and make him realize that he is going to be the next king, the supreme position in Scotland. They successfully persuade Macbeth to think over their predictions seriously. He acts upon their predictions accordingly. However, the presence of Lady Macbeth in his life broadens this outer conflict. She is the forth witch of the play who does everything to convince Macbeth that killing is the only way to get to the throne. Thus, she takes the external conflict of Macbeth to another level. Literally, she is the catalyst of Witches' predictions.

The Plot and the Setting, Perfect Literary Techniques for Showing Conflict : The plot and the setting of the events are the two literary devices that are perfectly used to sho\v the conflicts of the protagonists. In the short story, Gates takes the liberty of using the setting of a middle class family in which, conflict of ideas is a common affair. Readers easily get connected with Connie and her actions seem to them quite natural. The plot of the story is developed through a series of important events. It is a well knit plot which carefully introduces all the important characters one by one. A precise description of the protagonist's thinking is also used as a literary technique.

Similarly, in Macbeth, the events are shows in an organic manner with a setting of brooding environment. The appearance of the supernatural powers and their acceptance in the life of Protagonist develops the action of the play. There are no loopholes in the plot regarding the characters' introduction and every person in the life of Macbeth seems to appear at the right time.

Conclusion: To conclude, the two texts show the perfect state of internal and external conflicts of the protagonists. In spite of having some differences regarding the denouement, the texts convey a broad message to the readers about these conflicting situations of life. A wrong turn in life may cause serious and troubling conditions and both the texts perfectly inform the audience about the same fact.

●●

Iron Man : Sardar Patel

Dr. Kaushlendra Dixit
Assistant Prof.
(Political Science)

Sardar Patel was popularly known as Iron man of India. his full name was Vallabh Bhai Patel. He played a leading role in the India freedom struggle and became the first Deputy Prime Minister of India. He is credited with achieving political integration of India.

Vallabhbhai Patel was born on October 31, 1875 in Nadid, a small village in Gujarat. His father Jhaverbhai was a farmer and mother laad Bai was a simple lady. Sardar Vallabhbhai's early education took place in Karamsad. Then he joined a school in Petiand. After two years, he joined a high school in a town called nadiad. He passed his high school examination in 1896. Sardar Vallabhbhai Patel was a brilliant student through out his schooling.

Vallabhbhai wanted to become a barrister. To realize this ambition, he had to go to England. But he did not have the financial means to even join a college. In private and sit for an examination in Law. He borrowed books from a lawyer of his acquaintance and studied at home. Occasionally, he attended courts of law and listened attentively to the arguments of the lawyers. Vallabhbhai passed the Law examination with flying colours.

Sardar Vallabhbhai Patel started his Law practice in Godhra. Soon his practive flourished. He got married to Jhaberaba. In 1904, he got a baby daughter Maniben and in 1905 his son Dahyabhai was born. Patel was only thirty-three years old when his wife died. He did not wish to marry again. After some time, Vallabhbhai went to England. He studied with single-minded devotion and stood first in the Barrister-at-Law Examination.

Sardar Patel returned to India in 1913 and started his practice in Ahmedabad. Soon he became popular. At the urging of his friends, Patel contested and won election to become the sanitation Commissioner of Ahmedabad in 1917. Sardar Patel was deeply impressed by Gandhiji's success in Chmparan Satyagraha. In 1918, there was a drought in the Kheda division of Gujarat. Peasants asked for relief from the high rate of taxus but the British government refused. Gandhiji took up the cause of the peasants, but could not devote his full time in Kheda. He was looking for someone who could lead the struggle in his absence. At this point, Sardar Patel volunteered to lead the struggle. He gave up his lucrative legal practice and entered public life.

Vallabhbhai successfully led peasant revolt in Kheda and the revolt ended in 1919 when the British Government agreed to suspend collection of revnue and roll back the rates. Kheda Satyagraha turned Vallabhbhai Patel into a national hero. Vallabhai supported Gandhi's Non-Cooperation Movement and as president of the Gujarat Congress, Helped in organizing bonfires of British goods in Ahmedabad. He gave up his English clothes and started wearing Khadi. Sardar Vallabhbhai Patel was elected Ahmedabad's municipal president in 1922, 1924 and 1927. During his term, Ahmedabad was extended a major supply of electricity and under went major education reforms.

In 1928, Bardoli Taluka in Gujarat suffered from floods and famine. In this hour of distress, the British government raised the revenue taxes by thirty percent. Sardar Patel took up cudgels on behalf of the farmers and appealed to the Governor to reduce the taxes. The Governor refused and the government even announced the date of the collection of the taxes. Sardar Patel organized the farmers and told them not to pay even a single paisa of tax. The government tried to suppress the revolt, but ultimately bowed before Vallabhbhai Patel. It was during the struggle and after the victory in Bardoli that caused intense excitement across India, that Patel was increasingly addressed by his colleagues and followers as Sardar.

After the signing of Gandhi-Irwin pact in 1931, Sardar Patel was released and he was elected Congress President failure of the Round Table Conference in London, Gandhiji and Sardar Patel were arrested to January 1932 and imprisoned in the Yeravada Central Jain. During this term of imprisonment. Sardar Patel and Mahatma Gandhi grew close to one another and two developed a close bond of affection, trust and frankness without reserve. Sardar Patel was finally released in july 1934.

In August 1942, the Congress launched the Quit India Movement. The government jailed all the important leaders of the Congress, including Vallabhbhai Patel. All the leaders were released after three years. After achieving independence on 15th of august 1947, Pandit Jawaharlal Nehru became the first Prime Minister of independent India and Sardar Patel became the Deputy Prime Minister. He was in charge of Home affairs Information and Broadcasting and the Ministry of States.

There were 565 princely states in India at the time. Some of the Maharajas and Nawabs who ruled over these states were sensible and patriotic but most of them drunk with wealth and power. They were dreaming of becoming independent rulers once the British quit India. They argued that the government of free India should treat them as equals. Some of them went to the extent of planning to send their representatives to the United Nations Organisation. Patel invoked the patriotism of India's monarchs, asking them to join the freedom of their nation and act as responsible rulers who cared about the future of their people. He persuaded the princess of 565 states of the impossibility of independence from the Indian republic, especially. In the presence of growing opposition from their subjects. With great wisdom and political foresight, he consolidated the small kingdoms. The public was with him. He tackled the Nizam of Hyderabad and the Nawab of Junagarth who initially did not want to join India, Sardar Patel's untiring efforts towards the unity of the country brought success. He united a scattered nation witout much bloodshed. Due to the Acheivement of this massive task, Sardar Patel got the title of 'Iron Mn' Sardar Patel died of cardiac arrest on December 15, 1950 for his service to the nation Sardar Patel was conferred with Bharat Ratna in 1991.

●●

Women Empowerment in India-Myth and Reality

Amiyatosh Gaur
Ex-Student

According to McLeod, the concept empowerment derives from the latin word 'poetere' which means 'to be able' from the view of sociological aspect empowerment is a multi dimensional, multi tiered and multi faceted concept. The term empowerment has different meanings in different socio-cultural and political contexts. World bank report 2000/2001 describes empowerment as a process of increasing the capacity of individuals or groups to make choices and to transform those choices into desired actions and outcomes. According to country report of government of India "Empowerment means moving from a position of enforced powerlessness to one of power".

Empowerment refers to increasing the spiritual, political, social or economic strength of individuals and communities. It often involves the empowerment developing confidence in their own capacities.

The different phases India took in the women empowerment is here Ancient India primary Duty of women is "husband service" Medieval India don't let women out, don't let her express. If her husband dies she should die too. Modern India pre independence guys, let's stop sati, let her stay inside the house forever after her husband dies. 1950s let's send women children to school and colleges 1960s dowry prohibition act. 1990s women should occupy responsible positions in the social structure. 2001 women's empowerment year. 2010 - 1/3rd seats should be reserved for women in parliament.

But the absence of democrative context has contributed to slow progress in empowering women. Women's empowerment movements have not survived in authoritarian regimes based on gender subordinations and ideologies of male dominance. Conceptualization of gender discrimination and male domination have been over simplified and focused on elimination of obvious oppressive, practices such as wife beating or dowry demands. Empowerment of women that will have lasting impact must involve consciousness raising before the social consciousness of gender, which subordinates women in the family, class, caste, religion or society, can be changed.

The ability of women to control their own fertility is absolutely fundamental to women's empowerment and equality. When a woman can plan her family she can plan the rest of her life when she is healthy, she can be more productive and when her reproductive rights including the right to decide the number, timing and spacing of her children and to make decision regarding reproduction, free of discrimination coercion and violence ae promoted and protected she has freedom to participate more fully and equally in society. Gender equality implies a society in which women and men enjoy the same opportunities, outcomes, rights and obligations in all spheres of life. Equality between men and women exists when both sexes are able to share equally in the distribution of power and influence, have equal opportunities

for financial independence through work or through setting up business enjoy equal access to education and the opportunity to develop personal ambitions. A critical aspect of promoting gender equality in the imbalances and giving women more autonomy to manage their own lives. Women's empowerment is vital to sustainable development and the realization of human rights for all.

Where women's status is low, family size tends to be large which makes it more difficult for families to thrive. Population and development and the reproductive health programs are more effective when they address the educational opportunities status and empowerment of women. When women are empowered, they are socially determined, changing and changeable. Although they may be justified as being required by culture or religion, these roles vary widely by locality and change overtime. Inspire of the various measures taken up by the government after independence women have not been fully empowered. We may be proud of women in India occupying highest offices of president, prime minister, Lokshabha, Leader of the opposition but the fact remains that the still witness dowry death, domestic violence and exploitation of women. The female foeticide is not an uncommon phenomenon. The male female ratio though improved over last few years is still far from satisfactory. Hence it is high time we introspect and analyse within ourselves and the policies to make women.

●●

The Future of English in India

Introduction : English is one of the most widely spoken languages across the world. In India, it was first introduced by Lord Bentinck in 19th century. It was supported by many eminent personalities and social reformers. Many people think that the teaching of English is playing havoc with our native regional languages. Even the protagonists of Hindi, our national language, are deadly opposed to it. They think :that English is a foreign language and an average Indian can neither understand it, nor express himself in it. Moreover much energy of a child is being wasted in the learning of English. So English should altogether be abolished from this land, Jawaharlal Nehru says:

"English language with its great literary heritage has to play a vastly constructive role in the great task of the build of free India. It is no longer a language of a particular people or country. English can aptly be called a Global 'lingua Franca'. We must get ourselves rightly benefited by this universal language, which is a medium for the establishment of an International mutual contacts among the nations the entire world over."

Position Of English in the Past : The English language has had a glorious past in India. During the rule of Britishers, English enjoyed its heyday of power. In every walk of life English exercised a tremendous influence. It became a symbol of fashion and dignity to speak and write in chaste English. But when India became independent in 1947, the tide was turned against it. Since then, the position of English in India has become somewhat uncertain. A radical change has taken place in the statutes and prestige of this language. The question of retention or rejection of this language has given rise to a bitter controversy Teachers, educationists, administrators, politicians and diplomats seem to be very much worried about the place of English in the modern set-up of Indian education.

English was introduced by Lord Macaulay to raise a class of English knowing Indians to help the Britishers in running the British Administration of country efficiently. In due course of time, it helped many Indians to get into lucrative Government jobs but at the same time, it denationalized Indians.

Position of English in the Present : It has become an integral part in every section of society, be it government, media or education. It is taught in public as well as government schools. English is must for the Indians aspiring for higher education or seeking better job opportunities. It is very much a part of communication in urban society. Some people of Hindi speaking areas in India are against the usage of English. English is considered as a passport for a secure future.

It is probably the only language which is spoken in all the continents of the world. Most educated Indians are well versed in the language. It is extensively used in Government offices, by Media-both electronic, and print, in educational institutions of higher learning and the legal world. It is also used for social interaction and in the business spheres.

It was supported by many eminent personalities and social reformers like Raja Ram Mohan Roy, Pt. Jawaharlal Nehru etc. In pre independence era, Indian leaders used English for spreading the message of national struggle. With the help of English, they could speak about the Indian struggle for freedom to the International audience.

English has made an invaluable contribution towards the unification of the country. Although India is a multi-lingual country having 22 official languages, yet English remains an associate official language. It is widely used in communication. English acts as the link-language in our country. It is

easier to find people in every part of the country who know English. Thus a south-Indian can communicate easily with a north-Indian, if both of them are well-versed in. English. Today most of the educated Indians are bilingual. People of all religious, races, colors and nationalities speak English. Now it is the poor class in India, who is aspiring English education for their children.

In media also, English has an important place. English newspapers are published and read in almost all Indian states. There are several popular English news channels. India is the third largest English book producing country after USA and UK. Creative writing in English has been an integral part of the Indian literary tradition for many years. Writers like Bankim Chandra Chatte Raja Rammohan Roy, Taru Dutta, Michel Madhusudan Dutta Sarojini Naidu wrote in English language. Today also Indian writers have been able to successfully use the language to create rich literature. Indo English literature is now well developed and internationally recognized. Vikram Seth, Arundhati Roy, Jhumpa Lahiri, Kiran Desai Anita Desai, Upamanyu Chatterjee, Arvind Adiga etc. are some of the important names in this field.

English as a medium of instruction : In education system of India, English is the premier language. Most of the public schools and colleges prefer to have English as their medium of education. It is taught in public as well as government schools. Enrolment in English medium schools in India has gone up sharply in just two years from 4.3 percent to 6.3 percent. The surge in English enrolment propels it to third place after Hindi and Marathi, in terms of total number of Indian children being instructed in that language. Increasing enrolment in English language schools .in India is in line with international trends where English is establishing itself as the language of global commerce.

As English is an international language, if we want to remain in touch with the outside world, we will have to retain English. English is an important working language of the United Nations. Many Indians who have excellent communication skills are working in international agencies under the United Nations. Indians like Shashi Tharoor are famous for their commendable speeches and debates at international forums.

Value of English in India : English is important for every field of knowledge. Careers, in any area of business or commerce, in science and technology, require knowledge of English. Moreover, most of the latest literature in science and technology, space research, nuclear technology, medicine, engineering etc. is available in English. English is used for correspondence between different departments of Union and State Governments between centre and states, between states and states. Most of the business houses in the country use English language. Most public sector enterprises prepare their reports and carry out their day-to-day work in English language. With the increased use of computers in small and large offices, English language has got a further boost. Most young people who have received their education in public schools feel more comfortable while interacting in English language.

After Independence, states of our country were reorganized on the basis of language spoken and Hindi was declared as the national language. But imposition of Hindi as National language was opposed tooth and nail by the southern states of India. These states were assured by Pt. Jawaharlal Nehru that Hindi would not be imposed on them. On the other hand, some people of Hindi speaking area in India are against the usage of English. But we cannot ignore the importance of English language and its utility in binding people of different states of India. The growth of English is more in non-Hindi speaking states, mostly the southern states which account for over 60 percent of the students enrolled in English medium schools. English medium also accounts for well over 90 percent

of the enrolment in the north-eastern states. English language has taken deep roots in the country. It has acquired its own identity and character. English plays an important part in maintaining professional relationship between India and foreign investors, flocking to India. The upsurge of Multinational companies and BPOs in India is due to this proficiency of Indians in English.

India is set to give a boost to education in 11 five year plan. Planning Commission has decided to give 20 percent of plan's total fund for education. It has also been said that additional money will be used for teaching and promoting English language, which is considered as a passport to a secure future. English has played and will continue to play a key role in different spheres of Indian life.

Falling standards of English : These objections have been met by the champions of English on different levels. The argument that English ha stood m the way of development of our Indian language is not wholly sound. So far as its foreignness is concerned, it is said that. if English is foreign, so is Sanskrit. The Aryan invaders in our country brought this language with them. Even Hindi is foreign and outlandish for a majority of South Indians. So the foreignness makes an appeal to false sentiments. As to the argument that it is difficult it is advanced that the question of difficulty is somewhat vague and relative. Every language has its own genius and its own difficulties. The difficulty or otherwise of a language should be adjudged in proportion to its usefulness. As to the argument that very few Indians know English, the point is at once conceded. So would be the argument against any language of the country that will replace English. As far as the difficulty of English; as a medium of instructions concerned, it need only be said that a majority of standard works in Humanities as well as Science are available only in English. So long us standard translation of these classical works is not available, it is necessary that the medium of English be retained in our colleges and universities. Then attempts are already being made to naturalize English to suit Indian conditions and Indian social context. A study of English is leading to the enrichment of our culture.

POOJA PAL
M.A. Final, English

Human Development In Developing Nations

The first Human Development Report introduced a new approach for advancing human flourishing. And while the expression "human development" is widely used, it is understood in different ways around the world. So on the occasion of the 25th anniversary year of human development reporting, we'd like to highlight how the Human Development Report Office (HDRO) presents human development. Human development grew out of global discussions on the links between economic growth and development during the second half of the 20th Century. By the early 1 960s there were increasingly loud calls to "dethrone" GDP: economic growth had emerged as both a leading objective, and indicator, of national progress in many countries, even though GDP was never intended to be used as a measure of well being. In the 1 970s and 80s development debate considered using alternative focuses to go beyond GDP, including putting greater emphasis on employment, followed by redistribution with growth, and then whether people had their basic needs met.

These ideas helped pave the way for the human development approach, which is about expanding the richness of human life, rather than simply the richness of the economy in which human beings live. It is an approach that is focused on creating fair opportunities and choices for all people. So how do these ideas come together in the human development approach? The human development approach focuses on improving the lives people lead rather than assuming that economic growth will lead, automatically, to greater opportunities for all. Income growth is an important means to development, rather than an end in itself. Human development is about giving people more freedom and opportunities to live lives they value. In effect this means developing people's abilities and giving them a chance to use them. For example, educating girl would build her skills, but it is of little use if she is denied access to job, or does not have the skills for the local labour market. Three foundations for human development are to live a healthy and creative life, to be knowledgeable, and to have access to resources needed for a decent standard of living. Many other are important too, especially in helping to create the right conditions for human development, such as environmental sustainability or equality between men and women.

Real progress on human development, then, is not only a matter of enlarging people's critical choices and their ability to be educated, be healthy, have a reasonable standard of living and feel safe. It is also a matter of how secure these achievements are and whether conditions are sufficient for sustained human development. on account of progress in human development is incomplete without exploring and assessing vulnerability. Traditionally, the concept of vulnerability is used to describe exposure to risk and risk management, including insuring against shocks and diversifying assets and income.

The Report takes a broader approach, emphasizing the close links between reducing vulnerability and advancing human development. We introduce the concept of human vulnerability to describe the prospects of eroding people's capabilities and choices. Vulnerability as a concept is less abstract when broken down into who is vulnerable, what are they vulnerable to and why. We particularly emphasize systemic and perennial sources of vulnerability and ask why some people do better than others in overcoming adversity. People experience varying degrees of insecurity and different types of vulnerability at different points along the life cycle. Children, adolescents and older people are inherently vulnerable, so we ask what types of investments and interventions can reduce vulnerability during sensitive transitional periods of the life cycle.

The Report makes the case that the sustained enhancement of individuals' and societies' capabilities is necessary to reduce these persistent vulnerabilities-many of them structural and many of them tied to the life cycle. Progress has to be about fostering resilient human development. There is much debate about the meaning of resilience, but our emphasis is on human resilience-ensuring that people's choices are robust, now and in the future, and enabling people to cope and adjust to adverse events. Institutions, structures and

norms can either enhance or diminish human resilience. State policies and community support networks can empower people to overcome threats when and where they may arise, whereas horizontal inequality may diminish the coping capabilities of particular groups. The Report explores the types of policies and institutional reforms that can build resilience into the fabrics of societies, particularly for excluded groups and at sensitive times during the life cycle. It examines universal measures that can redress discrimination and focuses on the need for collective action to resolve vulnerability that stems from unresponsive national institutions and the shortcomings of global governance. Human progress The 2013 HDR revealed that more than 40 developing countries-with the majority of the world's population-had greater gains on the Human Development Index than would have been predicted given their situation in 1990. We cannot take these achievements for granted, however. There is evidence that the overall rate of progress is slowing across all human development groups (figure 2). It is critical to deal with vulnerability now to secure gains and prevent disruptions to continuing progress. With the lead-up to the post-2015 agenda and the development of a set of sustainable development goals, this is a time of reflection for the international community and an opportunity for change and new forms of global cooperation to reduce persistent and systemic vulnerability. We also have to ask a basic question: Whose prosperity are we observing? We need to look beyond averages and income thresholds to gather a more comprehensive view of how improvements in well-being are distributed among individuals, communities and countries. Average loss of human development due to inequality has declined in most regions in recent years, driven mainly by widespread gains in health. But disparities in income have risen in several regions, and inequality in education has remained broadly constant. Declines in inequality should be celebrated, but offsetting growing income disparities with progress in health is not enough. To tackle vulnerability, particularly among marginalized groups, and sustain recent achievements, reducing inequality in all dimensions of human development is crucial..

The 2014 Human Development Report is the latest in the series of global Human Development Reports published by UNDP since 1990 as independent, empirically grounded analyses of major development issues, trends, and policies. Additional resources related to the 2014 Human Development Report can be found on line at hdr.undp.org, including complete editions or summaries of the Report in more than 20 languages; a collection of Human Development Research Papers commissioned for the 2014 Report; interactive maps and databases of national human development indicators; full explanations of the sources and methodologies employed in the Report's human development indices; country profiles; and other background materials. Over the past two decades, regionally focused HDRs have also been produced in all major areas of the developing world, with support from UNDP's regional bureaus. With provocative analyses and clear policy recommendations, regional HDRs have examined such critical issues as political empowerment in the Arab states, food security in Africa, climate change in Asia, treatment of ethnic minorities in Central Europe and challenges of inequality and citizens' security in Latin America and the Caribbean. Since the release of the first national HDR in 1992, national HDRs have been produced in 140 countries by local editorial teams with UNDP support. These reports-some 700 to date-bring a human development perspective to national policy concerns through local consultations and research. National HDRs have covered many key development issues, from climate change to youth employment to inequalities driven by gender or etbnicity. In the present time people are developing by leaps and bounds in every field of life. Development is the nature of human. Everyone can see human development in science, technology and computer science. It is age of computer and technology. By developing nature man wants to touch the height of sky.

Rahul Kumar
M.A.(P) English

George Eliot and Her Critics

"One of the few English novels written for grown-up people": This oft-quoted remark about Middlemarch by Virginia Woolf is all too easy to take personally by deciding that, yes, I am a grown-up person and admirable, - since I have read and reread George Eliot's masterpiece. But how "few" are those few novels? It's easy enough to point out, as F. R. Leavis did in The Great Tradition, that Jane Austen was writing for those grown-ups a good deal in advance of Eliot. After a recent teaching experience with The Pickwick Papers, to which my students (1 surmised) couldn't quite "relate," I'm tempted to say that there is a novel only grown-ups can appreciate. Or what about Tom Jones? The comic novel may be a sterner test of psychic maturity. At age nineteen I was introduced to Middlemarch in a course of nineteenth-century English novels and, though not terribly grown-up, I was suitably impressed, indeed moved by the book; subsequent readings have confirmed and extended my admiration. All well and good, but does such an openhearted approach to the novel have anything in common with the flood of recently (within the last two decades) published essays on every aspect of Eliot, some of those essays written in formidable prose indeed? The following thoughts are scratching at some products of the Eliot industry.

At one point in an openhearted and sensitive account of her "life" in Middlemarch, Rebecca Mead questions her own project of exploring how the novel has meant different things to her over the course of her life.' She notes that after Middlemarch was published, more than one young woman wrote to Eliot informing her how much of themselves they saw in Dorothea Brooke. Mead comments, "Such an approach to fiction- where do I see myself in here?- is not how a scholar reads," and she admits we need literary criticism and scholarship to suggest "alternative lenses through which a book might be read." Her own lens is an extremely personal one, which only someone with her discretion and capacity for self- criticism could have brought off. The book is, among other things, a travelogue of her visits to various places connected with Eliot. At Nuneaton, Eliot's childhood home, Mead finds the family house converted to something called the George Eliot Hotel, complete with slot machines, pool table, and satellite sports channel. On a more intimate level, she describes Eliot's experience with her mate G. M. Lewes's three sons, then considers how such "step mothering" by Eliot anticipates Mead's own marriage to a man with children. Finding that "Our own lives can teach us how to read a book," she compares her life to Eliot's and sees the novelist's "experience of unexpected family woven deep into the texture of the novel" as part of its "tensile strength" although not a part 'of its "obvious pattern." As a young reader of eighteen, she was extremely moved by Dorothea; now, in middle age, she finds Casaubon in all his "failures and fears" a more sympathetic figure than she did before, noting that once when Eliot was asked about the "original" for Casaubon, she "silently tapped her own breast."

Woolf's 1919 essay on Eliot in which she tossed off the phrase about grown-up people was preceded with a qualification-—"for all its imperfection"—attached to the novel. (What those imperfections are Woolf never tells us.) Mead finds, rightly I think, a touch of "youthful arrogance" and suspects that it had to do with Woolf, having begun her own career as a novelist (her second one, Night and Day, was about to appear), doing a bit of clearing away instances of influential anxiety. Mead shrewdly points out that the broad valedictory that ends Woolf's essay—"We must lay upon her grave whatever we have it in our power to bestow of laurel and rose"—was a way of

positioning herself as "the clever child, watching quietly from the neighbouring room, ready to supersede her distinguished but failed elder." There are other places in Woolf's essay where one can detect a little chipping away at "the magnificent book"; for example, she makes the dubious claim that Eliot's hold on dialogue is "slack" and that, equally dubious, she has little "verbal felicity." Further, Woolf declares that Eliot was no satirist: "The movement of her mind was too slow and cumbersome to lend itself to comedy." To which one might reply (after noting the fine comic treatment of Mr. Brooke in Middlemarch) that however quick and uncumbersome was Woolf's mind, not much comedy or satire shows up in her novels; in fact there is maybe more comedy and satire in Middlemarch than in the whole of Woolf's fiction, especially if you think Orlando isn't very funny. Mead comments on Eliot's occasional "ferocity" and not merely in the brilliant, destructive reviews of the Evangelical preacher Dr. Cumming, or the poet Edward Young, author of Night Thoughts, these written before she had published any fiction.

One of the contributors takes up the question of Eliot's satiric humour to the latest large volume of essays about her. Jeff Nunokawa, a professor of English at Princeton, whose essay bears the odd title "Essays: Essay v. Novel (Eliot, Aloof)," finds Eliot's critical essays and reviews "nearly unbearable to write about." The trouble seems to be that they are lacking in the "sympathy" Eliot would put so much stock in as a writer of novels. Nunokawa asserts that anyone who cares for the narrative voice in those novels "cannot help but feel at least a little betrayed and surely more than a little put off by the legalistic sterility that has taken its place." Legalistic sterility is hardly the term I would apply to the delightful and prescient "Silly Novels by Lady Novelists," or the energy with which Eliot prosecutes and persecutes the Reverend Gumming and the poet Young. If there is "ferocity" in these essays, it is made attractive through the energy and passion she brings to the satiric performance.

Ferocity is certainly not the word for Eliot's attitude toward her characters in Middlemarch. But two examples of how she deals with minor personages leave no doubt of how sharp her wit can be. Of Mr. Ned Plymdale, a suitor for Rosamund Vincy's hand who is no match for Lydgate, Eliot admits that though a good match, Plymdale is not "one of the leading minds," but that, having brought a fashion magazine for him and Rosy to pore over he is satisfied "that he had the very best thing in art and literature as a medium to 'paying addresses'—the very thing to please a nice girl." Eliot proceeds quietly to do him in:

He had also reasons, deep rather than ostensible, for being satisfied with his own appearance. To superficial observers his chin had too vanishing an aspect, looking as if it were being gradually reabsorbed. In addition, it did indeed cause him some difficulty about the fit of his satin stocks, for which chins were at that time useful.

Shalini
M.A.(F) English

Matthew Arnold As A Critic

Matthew Arnold was born in December 1822, at the Thames-side village of Laleham, near staines. He was the eldest son among the nine children of Thomas Arnold, the famous Headmaster of Rugby who founded the modern public school system in England. The boy Arnold was a singularly handsome young man whose manners were Olympian and whose waist coats were remarkable. As the secretary of Lord Landowne, a few years later, he had entry to a society of talent and power where he was much in demand for dinner parties. Henry Crabb Robinson described him as "a very gentle young man with a light tinge of fop that does not harm when blended with talents, good nature and high spirits." His hair was particularly luxuriant. Arnold himself never lost his pride in his hair, "that prepectual miracle my hair" and offered to friend pull it to scotch any suspicion that it might be wig. Jowett said to him "he was the most sensible man of genius whom I have ever known and the most free from personality" Arnold owed much to his father's influence his high sense of duty, his intellectual honesty and lofty moral ideals, though in many respects there was little common between the son and the father Arnold speaks very touchingly of his father in Rugby Chapel :

" Yes, in some for-shining sphere.
Conscious or not of the past,
Still thou performest the word
of the spirit in whom thou dost live.

At the age of thirteen Matthew Arnold was admitted to Winchester school where he did not feel happy. Therefore, later he was brought to the Rugby school of which none but his own father, or Arnold was the headmaster. He proved himself to be an unusually intelligent and devoted student from the earliest student career. In 1840 he won an open scholarship at Balliol College, Oxford Both at school and college, Arnold was very popular and respected by his contemporaries. At oxford he took the Newdigate Prize for a poem on Cromwell. However he unaccountably missed a first class in Litterae Humaniores at the university.

But he made up for this by winning the blue ribbon of Oxford scholarship, and was elected, like his father a fellow of Oriel in 1845. His chief friends at Oxford were the poet Clough, Arthur Stanley, J.D. Coleridge and J.C. Sharp. The most intimate of these was, of course, Clough who was three years his senior at Rugby and also scholar of Balliol and Fellow of Oriel. on Clough's death at Florence in 1861, Arnold wrote his famous pastoral elegy Thyrsis (1867). Every student of literature knows Arnolds graphic descriptions of the beautiful landscape around Oxford in Thyrsis and the scholar Gipsy. Describing the country around Oxford in Thyrsis, Arnold says,

1. "And that sweet city with her dreaming spires,

2. She needs not June for beauty's heightening, lovely all times she lies, lovely to-night! Too rare, grow now my visit here!

5 But once I knew each field, each flower, each stick,."

The critical principles propounded by Mathew Arnold can be grouped as following:

Two distinct factors can be tracked in any creative literature; the genius of the author and the epoch. Bith must be great and held in balance. Arnold exhibits a vital connection between the two. The power of the man and the power of the age or moment must be present in conjunction. Without the combination of these two creative literatures is not possible. Arnold emphasizes the need of a balanced combination of these two factors. At many places in his essay he speaks of the aspect. Genius alone is not sufficient. The age of Pericles alone could produce the ancient Greek literature. When one of the two is lacking, only partial success is possible. Gray never spoke out because he was born in the age of prose that was dull, dry and insipid.

Poetic thought can be presented in prose or verse. There is nothing new in this identihfication of prose and poetry. Aristotle had identified them, so also Bacon and Shelley.

But Arnold illustrations seem to be more clarifying. He finds that intimate sense of objects which is characterstic of the interpretation of poetry in the prose of Chateau-briand and senancour. He is also very clear in defining the character-stics of prose and poetry. The 'execllent and indispensable' eighteenth century is an age 'prose and reason' The needful qualities of a fit prose are regularity, precision and balance. England is weak in prose and strong in poetry, according to him.

Poetry is a criticism of life '! The word 'criticism is used in a special sense' 'application of ideas to life All literature is an application of ideas of life. To say that poetry is so simply a vain repetation. Here Arnold is really fighting for this doctrine of the poetic subject as against the dontrine of the poetic movement. Arnold demands a subject of distinct and considerable magnitude, which is variously insisted on by sush terms as high 'seriousness' or 'grand style'.

His opponents believe in the sudden transfiguration of any idea or image in articulate music.They will have to admit that he who has those devine moments more often than others is the greater poet.

The subject matter embraces not only human action, but all conscious manifestation of human activity, including thought, which is the depository of the spiritual aspirations of the human race. It includes, as a criticism of life, all that is important in the opinion of men. Only those thoughts, which have been absorbed in the moral sense of man, can be embodied and presented in poetry. Beling concerned with life, it is essentially moral.

The object of poetry is not to produce pleasurable lmation or intellectual enjoyment. Poetry has a higher mission. Poetry has to bring man in to harmony with life, to exbloen like to man or to tell him how to live.

"Poetry is the breath and finer spirit of all knowledge".(Wordsworth) Poetry is, thus, superior to reeigion, science and phieosophy, according to Arnold. The function of criticism is to discover ideas upon which creative literature must grow. There is not enough 'play of the mind' in England. The influence of foreign literature especially of freneh, literatucre will be salutary. Arnold's insistence on comparative criticism is of great value.

The test of the poetry is its truth, its interpretative power. The truth of poetry is the truth of feeling, not the truth of signs. The test of supreme truth is the 'high seriousness of absolute sincerity'. Poetry 'uses the logic of feeling as well as the logic of science. Science can appeal only to a limited faculty, not to the whole man. Poetry by its interpretative power appeals to the whole man. Again, poetry inperprets both by its natural magic and by its moral profundity. In both ways, it illuminates man. As Arnold tells, it "is not a power of drawing out in black and white an explanation of the mystery of the universe but the power of so dealing with things as to awaken in us a wonderfully full, new and intimate sense of them and of our relations with them.

Matthew Arnold critises some unites in the following ways:

Matthew Arnold says about chaucer:

"With him is born our real poetry."

"Shelly is beautiful and ineffectual angel, beating in the void his luminous wingsinvain Matthew Arnold."

"Keats was abundantly and enchantingly sensuous." Matthew Arnold

"Other abide our question, Thou out free."

Matthew Arnold says about Shakespeare.

Km. Poonam Mishra
M.A. (F) English

Amazing facts About Sound

Sound comes from vibrations

The vibrations create sound.

Waves which move through medium such

as air and water before reaching our ears.

Dog hear sound at a higher frequency

than humans, allowing them to hear noise that we can't.

Our ears vibrate in a similar way to the original source of the vibration,

allowing us to hear many different sounds.

Sound is used by many animals to detect danger

Warning then of possible attack before they happen.

Although music can be heard

to define, it is often described as

a pleasing or meaningful arrangement of sounds.

Jyoti
B.A. Part-III

Access to clean water improves

Education:

When students are freed
from gathering water,
They return water,
They return to class
With proper and safe latrines,
Girls stay in school
through their teenage years.

Health:

Safe water, clean hands,
healthy bodies,
Time lost to sickness is reduced
and people can get back to the work of
lifting themselves out of poverty.

Poverty:

Access to water
leads to food security.
With loss hunger is reduced.
School can feed students with
gardens reducing costs.

Hunger

Access to water can
break the cycle of poverty
The communities we serve
and ready to grow. we can not
wait to see how they choose to do it

When you conserve water you conserve life!

TWO THINGS

Two things to respect
-Religion and Law
Two things to avoid
-Drinking and gambling
Two things to admire
-Beauty and Music
Two things to watch
-Behaviour and character
Two things to love
-Honesty and truth
Two things to stick
-Promise and Love

USHMA BAIS
B.A.II

Maa- Angle of God

Maa…… The beautiful creation of God The unique and awesome gift to a child. She can't be compared with any other creation of God. She is full of love, mother hood and dignity. She is on the earth to teach us the life's practices, to make us a good woman being. She is our first teacher and a Shadow of God on this earth She spreads good doings on the whole world.

Maa…… is the only helper who can solve all our problems. She is the closest friend of her child. She is the only lady who has all the qualities and experiences to give to her child. She is the creature who is worshippable.

But today children are ignoring their old Maa How? I ask how You can ignore your maa? This is the greatest sin in this world.

She gave birth to us, made us able to see, write, sit and stand for everything. God will never forgive them who leave their Maa, in her bad days.

God is not visible so he has made a beautiful & identified creature 'Maa' in his own place.

She loves us very much.
That's why I Love my Maa above everybody……..

Shrashti Shakya
B.Sc. Part I

CHILDHOOD

When did my childhood go?
Was it the day I ceased to be eleven
Was it the time I realized that Hevs and Heaven
Could not he found in Geography,
And therefore could not be,
Was that the day!

When did my childhood go?
Was it the time that aqulls were not
As they seemed to be,
They talk of Love
But did not act lovingly
Was that the day!

When did my childhood go?
was it when I found my mind was really wise,
To lese whichever way I chose,
Producing thoughts that were not those of others
But my own, and mine alone
Was that the day!

Where did my childhood go?
It were to some forgouen place,
That's hidden in an infanls place
That's all I know

शिवओम यादव
एम.ए. पूर्वाध भूगोल